हमारा विश्वास

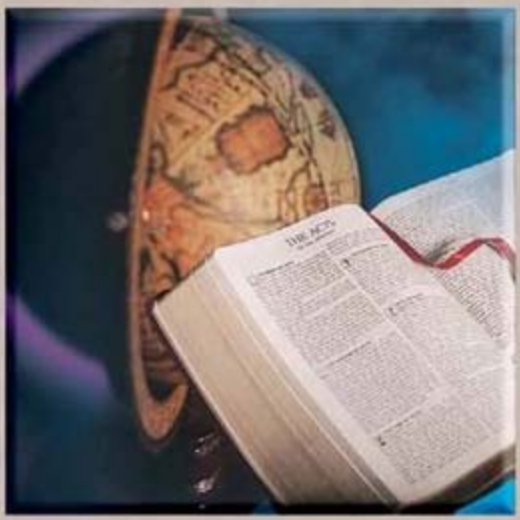

CL 3330 Hindi

We Believe

हमारा विश्वास

जूडी बारटेल के द्वारा अनुकूलित

लेखक — राल्फ एम॰ रिग्स

© इन्टरनेशनल कॉरसपोन्डेन्स इन्सटीट्यूट

आई॰सी॰आई॰ इन्टरनेशनल आफिस के कार्यकत्ताओं
के सहयोग से विकसित

इन्टरनेशनल कारेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बॉक्स-303 लखनऊ-226 001

© १९८० सर्वाधिकार सुरक्षित
इन्टरनेशनल कॉरिसपॉन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
ब्रूसेल्स, बेल्जियम
डी/१९८०/२१४५/२५

धर्मशास्त्र के उस्थरण गुडन्यूज बाइबल
(टूडे़ज इंगलिश वरज़न) © अमेरिकन बाइबल
सोसायटी, १९७६, से लिए गए हैं। अनुमति प्राप्त करके
प्रयोग की गई।

विषय-सूची

	पृष्ठ
सर्व प्रथम, आइये कुछ बातचीत करें	5
पाठ	
1. बाइबल	10
2. परमेश्वर	18
3. मनुष्य	26
4. पाप	34
5. यीशु मसीह	44
6. उद्धार	56
7. पवित्र आत्मा	68
8. कलीसिया	76
9. आत्माओं का संसार	86
10. भविष्य	96
11. परमेश्वर की व्यवस्था	106
12. परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध	118
13. दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध	128
14. एक मसीही एवं स्वयं	138
15. मसीही जीवन	148
16. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन	162

सर्वप्रथम, आइये कुछ बातचीत करें

आपके स्टेडी गाइड लेखक का एक संदेश

मसीही लोग क्या विश्वास करते हैं इसके संबंध में क्या आपके मन में कभी ऐसे प्रश्न उठे? क्या आपके मित्रों ने कभी आपसे पूछा कि आप ऐसा विश्वास क्यों करते हैं और आप उत्तर न दे सके हों। यदि हां तो यह पाठ्यक्रम विशेषतः आपके लिये है। अध्ययन के पश्चात् भी आप इसे अपने पास रख सकते हैं और कोई प्रश्न उठने पर तुरन्त उत्तर देख सकते हैं।

यह पाठ्यक्रम धर्मशास्त्र बाइबल की मुख्य शिक्षाओं पर आधारित है। हम उन्हें मूलभूत सिद्धान्त कह सकते हैं। आप न सिर्फ इसलिए पढ़ें कि वे प्रश्नों के उत्तर दें किन्तु यह जानते हुए कि परमेश्वर विभिन्न विषयों पर क्या कहता है यह आपके एवं जिन पर अपना प्रभाव डालते हैं के जीवन या मृत्यु का कारण हो सकता है।

धर्मशास्त्र के पद जिनका आप अध्ययन एवं कंठस्थ करते हैं आत्मिक रूप से बढ़ने में आपकी सहायता करेंगे। आप इन्हें अपनी निजी आराधना तथा व्यक्तिगत प्रचार एवं दूसरों को धर्मशास्त्र की शिक्षा देने में महत्वपूर्ण पायेंगे। और जैसे कि, धर्मशास्त्र स्वयं कहता है कि वचन का ज्ञान विश्वास बढ़ाता है।

एक आधुनिक प्रणाली जो स्वयं को शिक्षित करने के लिये है यह आपको इनके सिद्धान्तों को सिखाने तथा इन्हें तुरन्त व्यवहार में लाने में सहायक हैं।

आपकी स्टेडी गाइड (अध्ययन पुस्तिका)

"हमारा विश्वास" एक पॉकिट साईज़ कार्य-पुस्तक है जिसे आप साथ रखकर जब भी थोड़ा समय मिले इसका अध्ययन कर सकते हैं। प्रतिदिन इसके अध्ययन के लिये कुछ समय अलग करने की कोशिश करें।

आप ध्यान देंगे कि प्रत्येक पाठ के आरम्भ से उद्देश्य दिए गए हैं। उद्देश्य शब्द का प्रयोग इस पुस्तक में आपकी सहायता के लिये कि आपको इसके अध्ययन से क्या प्राप्त होगा, किया गया है। एक उद्देश्य लगभग एक लक्ष्य या एक प्रयोजन के समान है। यदि आप इन उद्देश्यों को ध्यान में रखें तो उसका अध्ययन अच्छा होगा।

प्रत्येक पाठ के प्रथम दो पृष्ठों को ध्यान से पढ़ना न भूलें। यह आपको आगे आने वाली बातों के लिए तैयार करेगा। इसके बाद पाठ का अध्ययन ख़ण्ड व खण्ड करें तथा जो आपको करना है के अन्तर्गत दिये गये निर्देशों का पालन करें। यदि आपके अध्ययन प्रश्नों का उत्तर अध्ययन पुस्तिका में लिखने के लिये अधिक जगह न हो तो उन्हें एक अभ्यास पुस्तिका में लिख लें ताकि जब आप पाठ का पुनरावलोकन करें तब इससे सहायता लें। यदि आप इस कोर्स का अध्ययन एक समूह के साथ कर रहे हैं तो अपने समूह-अगुए के निर्देशों का पालन करें।

अध्ययन प्रश्नों का उत्तर कैसे दें

इस अध्ययन-पुस्तिका में विभिन्न प्रकार के अध्ययन प्रश्न दिये गये हैं। नीचे कई प्रकार के नमूने दिये गये हैं और इनके उत्तर की विधियां दी गई हैं।

एक **बहुसंख्या-चुनाव** या विषय आपको दिये गये तथ्यों में से उत्तर का चुनाव करने को कहा गया है।

बहुसंख्या-चुनाव प्रश्न का उदाहरण

बाइबल की पुस्तकों की कुल संख्या

अ. १०० पुस्तकें

ब. ६६ पुस्तकें

स. २७ पुस्तकें

सही उत्तर (ब) है ६६ पुस्तकें। अपनी अध्ययन पुस्तिका में ब. के चारों ओर गोलाकार बनाओ जैसे नीचे दिखाया है।

१.

अ. १०० पुस्तकें

(ब) ६६ पुस्तकें

स. २७ पुस्तकें

(कुछ बहुसंख्या-चुनाव विषयों के लिये एक से अधिक उत्तर सही हैं। उस स्थिति में आप प्रत्येक सही उत्तर के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।)

एक सही-गलत प्रश्न या विषय में आपसे कहा गया है कि कई कथनों में कौन सा कथन सही है।

सही-गलत प्रश्न का उदाहरण : —

२. नीचे लिखे कौन से कथन सही हैं?

अ. बाइबल में कुल १२० पुस्तकें हैं?

ब. आज विश्वासियों के लिये बाइबल एक संदेश है।

स. सभी बाइबल लेखकों ने इब्रानी भाषा में लिखा।

ड. पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखकों को प्रेरित किया।

कथन 'ब'. और 'ड़.' सही हैं। अपने चुनाव को बताने के लिये आप इनके चारों ओर वृत्त खींच दें, जैसे आप ऊपर देखते हैं।

एक **मेल** प्रश्न या विषय आपको मिलती-जुलती बातों को मेल करने को कहती है, जैसे किसी वर्णन के साथ उनके नाम या बाइबल पुस्तकों के साथ उनके लेखक।

मेल प्रश्न का उदाहरण

३. प्रत्येक वाक्यांश के सामने उस अगुए की संख्या लिखिये जिसका वर्णन दिया गया है।

१.	अ. सीनै पर्वत पर व्यवस्था प्राप्त की	१) मूसा
२.	ब. इस्राएलियों को यरदन के पार ले गया	२) यहोशू
२.	स. यरीहो के चारों ओर चक्कर लगाये।	
१.	ड. फिरौन के दरबार में रहा।	

• वाक्यांश अ. और ड. मूसा के विषय में तथा ब. और स. यहोशू के विषय में बताता है। आप संख्या १ अ. और ड. के सामने तथा संख्या २ ब. और स. के सामने लिख दें।

आपकी छात्र रिपोर्ट :

यदि आप प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिये अध्ययन कर रहे हैं, आपको एक अलग पुस्तिका "छात्र रिपोर्ट प्रश्न पुस्तिका" "हमारा विश्वास" प्राप्त हुआ होगा। इस पुस्तिका में दो अनुच्छेद हैं। आपको स्टेडी गाइड बतायेगा कि आप प्रत्येक अनुच्छेद की पूर्ति कब करें।

अपने क्षेत्र के आई.सी.आई. कार्यालय में उत्तर पुस्तिका भेजने के लिए विद्यार्थी रिपोर्ट पुस्तिका में दिए गए निर्देशों का पालन कीजिए। उत्तर पुस्तिका भेजने एवं पत्र व्यवहार के लिए इस पुस्तक के आरंभ व अन्तिम पृष्ठ पर पता लिखा है। जब आप अध्ययन पूरा करके जांच के लिए दिए गए प्रश्नों के उत्तर आई.सी.आई. कार्यालय में भेजेंगे तब आपको एक सुन्दर प्रमाण-पत्र भेजा जाएगा।

बाइबल

नाविक भयभीत थे। एक भयंकर तूफान उठा था और उनके कुछ मित्र डूब चुके थे। वे खो चुके थे और बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों ने उन्हें परेशान किया। वे कहां जा रहे थे? यह यात्रा कितनी लम्बी होगी, क्या वे कभी घर पहुंच पायेंगे?

यह घटना १४९२ की है और इन लोगों का कप्तान क्रिस्टोफर कोलम्बस कोई उत्तर नहीं दे सका। वह उन्हें बिना किसी रूपरेखा तैयार किये हुए अटलाँटिक महासागर के पार भारतवर्ष की खोज में ले गया था। इसके बदले वह अमेरिका के एक द्वीप में पहुंचा। वहां उसे और उसके नाविकों को ताजा जल प्राप्त हुआ। और उनका जीवन बच गया।

ऐसी कहानी का दुहराव फिर न हो। इसके लिए जहाज के कप्तानों को सही रूपरेखा एवं मानचित्रों की आवश्यकता है जिससे वे अपना मार्ग न खो सकें।

भूमि पर रहते हुए भी बहुत से लोग अपने को तूफानी महासागर में खोया हुआ अनुभव करते हैं। वे अपने आप से ही प्रश्न करते हैं। मैं कहां जा रहा हूं? क्या मैं खो गया हूं? क्या मैं कभी सही मार्ग प्राप्त कर सकूंगा? परमेश्वर ने हमारे प्रश्नों को सुना है और उसने पहले ही एक पुस्तक हमारे जीवन के मार्ग दर्शन के लिये दी है।

उत्तर की खोज करने से पहले आइये इस महान पुस्तक पर विचार करें। हम देखेंगे कि यह कैसे लिखी गयी एवं हमें कैसे दी गयी।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

बाइबल की उत्पत्ति और संरचना

बाइबल का अभिप्राय

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- बाइबल की उत्पत्ति एवं संरचना का वर्णन कर सकें।
- समझ सकें कि बाइबल कैसे और क्यों दी गई।

बाइबल की उत्पत्ति एवं संरचना

उद्देश्य १.. बाइबल की उत्पत्ति एवं मौलिक संरचना का वर्णन करें।

पवित्र बाइबल ६६ पुस्तकों का संग्रह, एक छोटे पुस्तकालय के समान है जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है। बाइबल का प्रथम भाग पुराना नियम — ३९ पुस्तकों का है। दूसरा भाग — नया नियम — २७ पुस्तकों का है।

पूर्ण बाइबल लगभग १६०० वर्ष में तैयार हुई है। ४० व्यक्तियों का हाथ इसके लिखने में है। बाइबल बताती है कि ये लोग परमेश्वर के पवित्र जन थे। ये राजा, किसान, कवि, व्यापारी, सैनिक एवं धार्मिक अगुवे थे। वे विभिन्न पृष्ठभूमि, विभिन्न शहरों और विभिन्न रुचियों के थे।

बाइबल की पुस्तकों में कई विभिन्न विषय जैसे इतिहास, भविष्यवाणी एवं काव्य हैं। इसमें गीत एवं बुद्धि की बातें जो नीतिवचन कहलाती है सम्मिलित हैं। इसकी कहानियां जवानों तथा बूढ़ों के लिये रुचिकर हैं तथापि सभी एक दूसरे से मेल खाती हैं, क्योंकि सभी का एक केन्द्रीय विषय है — परमेश्वर एवं मनुष्य के बीच का सम्बन्ध।

जो आपको करना है

इसमें से प्रत्येक "जो आपको करना है" अनुच्छेदों के प्रश्न या अभ्यास आपको पुनरवलोकन तथा जो आप पढ़ चुके हैं के प्रयोग में सहायक होंगे।

१ निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिये।

अ. बाइबल .... पुस्तकों से बनी है। जो कि ... व्यक्तियों के द्वारा लिखी गई है।

ब. बाइबल .... वर्ष में तैयार हुई।

स. प्रथम भाग में ..... पुस्तकें हैं जो कि ..... नियम कहलाती हैं और दूसरे भाग में ..... पुस्तकें हैं जो कि ..... नियम कहलाती हैं।

इस पाठ के अन्त में दिये गये उत्तरों के आधार पर इसकी जांच कर लें।

बाइबल का अभिप्राय

उद्देश्य २. ईश्वरीय प्रेरणा के पहलुओं की पहचान करें।

शायद आपने ध्यान दिया होगा कि इस पाठ के प्रथम भाग में एक परस्पर-विरोध प्रतीत होता है। यह कहता है कि परमेश्वर ने हमें बाइबल दी है किन्तु यह भी कहता है कि मनुष्य ने इसे लिखा है। यह कैसे हो सकता है?

जिन ४० व्यक्तियों ने बाइबल को लिखा उनमें ईश्वरीय प्रेरणा थी। इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा ने लेखकों के दिमाग में वे विचार डाले जो परमेश्वर चाहता था।

दूसरा तीमुथियुस ३:१६ कहता है, "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।" यह पद यह भी कहता है कि बाइबल क्यों दी गई — उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।

परमेश्वर ने हमें सही जीवन व्यतीत करने का निर्देश दिया है। क्योंकि वह हमारी अत्यधिक भलाई चाहता है। वह जानता है कि जब हम उसके सिद्धान्तों के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करते तो हम स्वयं को चोट पहुंचाते हैं। हमारा दिमाग, हमारी देह और विशेषकर हमारी आत्मा दुःख उठाती है। अपने को चोट लगने से बचाये रखने का उत्तम रास्ता यह है कि उसके वचन का निकटता से अनुसरण करें। इसके द्वारा हमें उसका ज्ञान प्राप्त होता, वह जानता है कि उसके मार्ग हमारे लिये उत्तम है।

एक चार्ट या मार्ग दर्शन-पुस्तक के समान उसका वचन हमारे लिये लिखा गया ताकि सहायता एवं बल प्राप्त करने के लिये इसकी ओर मुड़ सकें। कितना अद्‌भुत है कि उसके व्यक्तिगत निर्देशनों को हम हमेशा अपने पक्ष में प्राप्त कर सकते हैं।

• • •

जो आपको करना है

अगले दो अभ्यासों में उस अक्षर के चारों ओर **जिसके शब्द अच्छी** तरह वाक्य पूरा करते हैं एक वृत्त खींचिए।

२ जब हम कहते हैं कि बाइबल ईश्वर की प्रेरणा से लिखी गई तो हम यह स्पष्ट करते हैं कि .....

अ. यह हमें परमेश्वर के बारे में बताती है।

ब. परमेश्वर ने लेखकों को वे विचार दिये जो उन्हें लिखना था।

स. इसमें बहुमूल्य धार्मिक इतिहास निहित है।

३ लेखकों ने एक ही विषय पर लिखा और परस्पर विरोध नहीं किया क्योंकि

अ. परमेश्वर वास्तविक लेखक था और उन्होंने वही विचार लिखे जो उसने उन्हें दिये।

ब. प्रत्येक ने अपने बाद आने वाले लेखकों के लिये निर्देशन छोड़े।

४ परमेश्वर ने हमें बाइबल क्यों दी इसके सही कारण के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींचिए।

अ. वह हमारी सर्वोत्तम भलाई चाहता है।

ब. वह सही जीवन यापन के लिए निर्देश देना चाहता था।

स. वह हमें यह महसूस कराना चाहता था कि वह इतना अधिक महान है कि हम उसे जानें।

ड. वह अपना सम्बन्ध हमारे साथ स्थापित करना चाहता है, और बताना चाहता है कि वह कैसा है।

अपने उत्तरों की जांच करें

आपके अध्ययन अभ्यासों के उत्तर सामान्य क्रम में नहीं दिये गये हैं। वे मिला दिये गये हैं ताकि आप अपने अगले प्रश्न का उत्तर समय से पहले न देख सकें। पहले से देखने की कोशिश न करें।

१ अ. ६६/४०

ब. १६००

स. ३९
पुराना
२७
नया

३. अ. परमेश्वर वास्तविक लेखक था और उन्होंने वही विचार लिखे जो उसने उन्हें दिये।

२. ब. परमेश्वर ने लेखकों को वे विचार दिये जो उन्हें लिखने चाहिये थे।

४. अ. वह हमारी सर्वोत्तम भलाई चाहता है।

ब. वह सही जीवन यापन के लिये निर्देश देना चाहता था।

ड. वह अपना सम्बन्ध हमारे साथ स्थापित करना चाहता है और बताना चाहता है कि वह कैसा है।

आपके टिप्पणी लिखने के लिये

परमेश्वर

मैं एक छोटा बच्चा था जब मेरी माता ने मुझे सिखाया था कि तूफानी तेज हवा और वर्षा के समय कैसे मनोरंजन करें। वह अपनी बांहों में मुझे घेर लेती थी जब हम लेटिन अमेरिका में अपने घर की खिड़की के पास खड़े होते थे। हमारे सामने के आंगन में केले के वृक्षों में तेज हवा के झोंकों से उनकी उछलती हुई पत्तियां बारिश से गीली, बिजली की चमक से चमकीली, देखने में शानदार लगती थीं। बिजली की कड़क और बादल की गरज मानों ढोल पीट कर घास एवं फूलों को वर्षा के प्रति प्रेम की कहानी बता रहे हों।

लोग तूफान से डरते या आनन्दित हो सकते हैं। यह इस पर निर्भर है कि उन्हें इसके बारे में क्या बताया गया है। यह भी जानना जरूरी है कि यह कैसा तूफान है — लाभदायक या हानिप्रद।

तूफान को आप कैसे समझ सकते हैं? हवा, वर्षा एवं बिजली का आकार कैसा होता है? क्या आप तूफान को बोतल में रख सकते हैं? बेशक नहीं। तूफान को इसके विभिन्न भागों के अध्ययन के द्वारा ही समझा जाता है। जैसे ठण्डी हवा, गर्म हवा से मिलती है। इसके प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है जमीन एवं समुद्र में इसका असर होता है।

एक तरह से परमेश्वर की तुलना तूफान से की जा सकती है। कुछ लोग उससे डरते हैं एवं कुछ उससे प्रेम रखते हैं। यह इस पर निर्भर करता है कि उन्हें इसके बारे में क्या बताया गया है।

आप परमेश्वर को नहीं देख सकते किन्तु वह क्या करता है इसका अध्ययन कर सकते हैं। पहले पाठ में हमने सीखा है कि बाइबल परमेश्वर के बारे में बताती है — उसके गुणों एवं मानव जाति से उसका व्यवहार। इस पाठ में हम बाइबल में देखकर परमेश्वर के बारे में बताई गई बहुत सी बातों में से कुछ के बारे में अध्ययन करेंगे।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

उसका हमसे सम्बन्ध
हमारा उससे सम्बन्ध

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि....

- उसके अनेक गुणों के नाम बतायें
- आपकी विचार भावना परमेश्वर के प्रति क्या होनी चाहिए इसकी व्याख्या कर सकें।

उसका हमसे सम्बन्ध

उद्देश्य १. परमेश्वर के कम से कम पांच गुणों के नाम बतायें।

यूहन्ना ४:२४ में बाइबल बताती है कि परमेश्वर आत्मा है। शब्दकोश बताता है कि आत्मा एक जैवीय सिद्धान्त है जो जीवन देता है। चूंकि परमेश्वर सृजनहार है इसका अर्थ है कि वह एक दैवीय शक्ति है जो अपनी सृष्टि को जीवन देता है। चूंकि वह आत्मा है उसे देखा नहीं जा सकता जब तक कि वह आपको किसी सदृश्य रूप में प्रगट न करे।

उसने अपने आप को अपने पुत्र के द्वारा दिखाया। यूहन्ना १:१४ बताता है, "और वचन देह धारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।"

परमेश्वर ने अपने को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, तीन व्यक्तित्व में प्रकट किया है जो गॉड हेड या त्रिएकता कहलाती है। कई स्थानों में इन तीनों का वर्णन किया गया है जिसमें से एक मत्ती २८:१९ है। "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

परमेश्वर के बारे में अधिक जानने का एक अच्छा रास्ता उसकी योग्यता और गुणों का अध्ययन है। परमेश्वर भला, पवित्र, न्यायी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, और अनन्त है। आइए हम उन पदों को देखें जो इन गुणों को साथ ही दूसरे गुणों को भी बताते हैं।

निर्गमन ३४:६ बताता है "और यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय और सत्य है।"

लैव्यव्यवस्था ११:४४ बताता है "क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

यह सच्चाई कि वह सर्वशक्तिमान है इसे दानिय्येल ४:३५ में भी देखा जा सकता है। यह बताता है "पृथ्वी के सब रहने वाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है और कोई उसको रोककर उससे नहीं कह सकता है, तूने क्या किया है?

परमेश्वर सब कुछ जानता है। कुछ भी परमेश्वर से छिपा नहीं है। सारी सृष्टि का सब कुछ उसकी आंखों के सामने खुला रखा है और हम सभों को उसे ही लेखा देना है।

प्रकाशित वाक्य १०:६ हमें बताता है कि परमेश्वर अनन्त है। एक स्वर्गदूत ने "परमेश्वर के नाम में शपथ खाकर कहा कि परमेश्वर जो युगानुयुग जीवता रहेगा और जिसने स्वर्ग को और जो कुछ उसमें है और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है और समुद्र को और जो कुछ उसमें है, सृजा।"

कुछ पदों को जिसे हमने देखा जो हमें परमेश्वर के बारे में थोड़ा चित्रण करते हैं, हमारी सहायता यह जानने में करते हैं, कि वह कितना महान है, वह सर्वशक्तिमान और बलवान है, किन्तु वह अनुग्रहकारी एवं दयालु भी हैं। और वह हमसे अर्थात् अपनी सृष्टि से निकट संबंध रखना चाहता है।

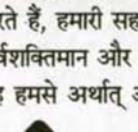

जो आपको करना है

१. धर्मशास्त्र के उद्धरणों को पढ़ें एवं निम्न कथनों में सही शब्दों की पूर्ति करें :

अ. मत्ती ६:९-११ — परमेश्वर की तुलना एक प्रेमी ..... से की गई है जो अपने ..... की आवश्यकता की पूर्ति करता है।

ब. यशायाह ६६:१३ — परमेश्वर वैसे ही शान्ति देता है। जैसे ..... अपने ..... को देती है।

२. निम्नलिखित धर्मशास्त्र के उद्धरणों को देखें। प्रत्येक उद्धरण में परमेश्वर के जिन गुणों को व्यक्त किया गया है लिखें

जैसे : पवित्रता, क्षमा तथा ऐसे अन्य

अ. २ राजा ४:४२-४४ .....

ब. उत्पत्ति ९:१३-१७ .....

स. २ इतिहास ७:१३-१४ .....

ड़. निर्गमन ३:७ .....

इ. भजन संहिता ९७:१०-१२ .....

यदि आप परमेश्वर के गुणों के बारे में अधिक जानना चाहते हैं तो ऐसा अभ्यास जैसे अभी आपने किया काफी सहायक होगा। दूसरे भजन संहिता का चुनाव करें और जैसे उन्हें पढ़ें परमेश्वर के चित्रण लिख लें जो विशेषतः आपके लिए अर्थपूर्ण हों। भजन संहिता १०३ और १३९ परमेश्वर एवं उसका हमारे प्रति चिन्ता के सुन्दर चित्रण से भरे हुए हैं।

अपने उत्तरों की जांच करें

हमारा उससे सम्बन्ध

उद्देश्य २. यह जानना कि हमारी पहली जिम्मेवारी परमेश्वर के प्रति है।

मत्ती २२:३७ में यीशु ने कहा "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।"

परमेश्वर के प्रति प्रेम प्रगट करने के विभिन्न तरीके हैं। हमारी उपासना एवं प्रशंसा करना हमारे प्रेम को शब्दों में उसे सीधे व्यक्त करते हैं।

अब, सुनो प्रभु परमेश्वर तुम से क्या मांग करता है। परमेश्वर को श्रद्धा दो एवं जो कुछ वह कहे, उसे करें।

"और अब हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने और उसके सारे मार्गों पर चले उस से प्रेम रखे और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे। और यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनको ग्रहण करे, जिससे तेरा भला हो।"

यदि हम अपना प्रेम दिखाना चाहें तो हम उन निर्देशों का पालन करें जो उसने अपने वचन में हमें दिये हैं।

परमेश्वर के प्रति प्रेम प्रगट करने का दूसरा तरीका दान तथा दूसरों के साथ सहभागिता करना है। १ यूहन्ना ३:१७-१८ कहता है "पर जिस किसी के पास संसार की सम्पत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्यों कर बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"

प्रेम जो आज्ञाकारिता एवं सहभागिता से भरा हो वह सन्तुष्ट करने वाला एवं प्रतिफलित होगा। लूका १०:२८ में यीशु कहता है कि यदि हम परमेश्वर से सबसे अधिक प्रेम रखेंगे तो "हम जीयेंगे" कुछ लोग सोचते हैं कि "वास्तविक जीवन" धन, शक्ति एवं पद है। किन्तु ये चीजें हमें कभी भी सन्तुष्ट नहीं कर सकतीं क्योंकि हम परमेश्वर की समानता में उसकी महिम के लिए बनाए गए हैं। हमारी आत्माएं आत्मिक चीजों से सन्तुष्ट होनी चाहिए।

वास्तविक जीवन जीना परमेश्वर से प्रेम करना है यीशु ने कहा "इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी" (मत्ती ६:३३)

जो आपको करना है

३. सही कथन के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दें। सबसे अधिक आपका प्रेम

अ. शक्ति के लिए होना चाहिए जिससे आप अपने जीवन के वश में रह सके।

ब. परमेश्वर के लिए होना चाहिए, और उस प्रेम को प्रयोग में लाइए।

४. निम्नलिखित पदों को पढ़ें और उनमें वृत्त खींचें जो आपको परमेश्वर के प्रति पहली जिम्मेवारी को बताते हैं।

अ. व्यवस्थाविवरण ६:५

ब. व्यवस्थाविवरण १०:१२

स. व्यवस्थाविवरण १३:३

ड. यहोशू २२:५

इ. मरकुस १२:३०

फ. यहूदा २१

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. पिता, बच्चे
ब. माता, बच्चे

३. ब. परमेश्वर के लिए होना चाहिए और उस प्रेम को प्रयोग में लाइए।

२. आप अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं किन्तु आपके उत्तर कुछ इस प्रकार होंगे।

अ. सर्वशक्तिमान
ब. दयावान
स. क्षमा करने वाला
ड. सर्वज्ञानी या सर्वदर्शी
इ. पवित्र

४. आपको सभी अक्षरों पर वृत्त खींच देने चाहिए क्योंकि प्रत्येक पद बताता है कि परमेश्वर से प्रेम रखना आपकी पहली जिम्मेवारी है।

मनुष्य

बच्चों की एक कहानी है जिसमें एक प्रसिद्ध नक्काशी करने वाले ने लकड़ी पर एक छोटे लड़के के चित्र की आकृति बनाई। यह एक सुन्दर आकृति थी एवं उसने उसका नाम पिनोकचियो रखा। उसे इस कार्य पर गर्व था किन्तु उसके बदले में उस आकृति से प्रेम प्राप्त करना असम्भव था।

यदि वह मनुष्य उस लकड़ी के लड़के के अन्दर बातचीत करने वाली एक छोटी मशीन रख देता तो कैसा होता? यदि वह ऐसा बनाता कि वह छोटा पुतला चलता हुआ कहता "मैं तुम से प्रेम करता हूं", क्या उससे उस मूर्तिकार को संतुष्टि होती? क्या वह पुलकित होकर कहता, "मैं अब जानता हूं कि यह मूर्ति मुझसे प्रेम करती है?" नहीं, क्योंकि वह प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं होती। यह केवल यांत्रिक वाक्यांश होता जिससे कोई वास्तविक अनुभूति नहीं होती।

कहानी बताती है कि किसी तरह वह लड़के का पुतला जीवित हो गया। उसकी खुद की बुद्धि थी और जब वह कहता "मैं तुमसे प्रेम करता हूं" वह मूर्तिकार को पुलकित कर देता था। क्यों? क्योंकि लकड़ी के पुतले पर दबाव नहीं डाला गया था। उसने प्रेम से यह कहा था।

हम जानते हैं कि यह कहानी मात्र किस्सा है किन्तु यह हमारे सामने एक छोटी तस्वीर रखती है कि जब परमेश्वर ने हमें बनाया तो उसे कैसे महसूस

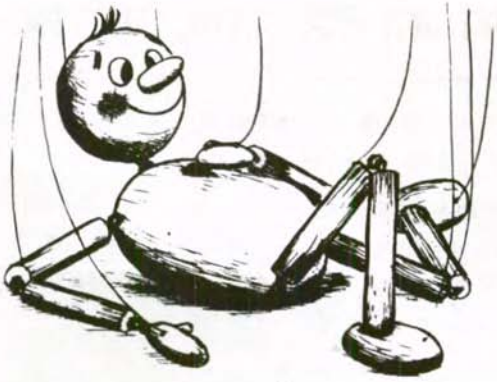

हुआ। उसने उसे सुन्दर, अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं चुनाव करने की सामर्थ के साथ बनाया।

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया किन्तु लकड़ी पर नक्काशी करके नहीं। उसने उसे कैसे बनाया? उसमें कौन-कौन से गुण रखे? पिछले पाठ में हमने परमेश्वर के कुछ गुण एवं उसके प्रति हमारे कर्तव्यों का अध्ययन किया अब आइये हम देखें कि परमेश्वर ने मनुष्य को कैसे बनाया एवं जिम्मेवारियां उसे दीं।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे .....

मनुष्य की दशा सृष्टि के समय
मनुष्य की दशा अभी

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि .....

- परमेश्वर ने कैसा और क्यों मनुष्य को बनाया, बता सकें।
- मनुष्य की पापी दशा का कारण समझ सके।

मनुष्य की दशा सृष्टि के समय

उद्देश्य : १. मनुष्य की सृष्टि कैसे की गई और उसके सृष्टि किये जाने का एक कारण जान लें।

परमेश्वर ने एक सुन्दर संसार की सृष्टि, वृक्षों, फूलों एवं जानवरों के साथ की। बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने जो कुछ देखा उससे प्रसन्न था। किन्तु यह पूर्ण नहीं था। उस सुन्दरता का आनन्द उठाने एवं सहभागिता के लिये कोई व्यक्ति नहीं था।

उत्पत्ति : १:२६:२७ हमें बताती है :

तब परमेश्वर ने कहा "और अब हम मनुष्य को बनायेंगे; वह हमारे समान एवं मिलता-जुलता होगा। उसका सारी मछलियों, पक्षियों और सभी जानवरों घरेलू एवं वन्य, बड़े एवं छोटे सभी के ऊपर अधिकार होगा। अतः परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि अपने स्वरूप में की।

मनुष्य जानवरों की तुलना में जिनकी सृष्टि पहले से ही की गई थी, भिन्न था क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। उसकी सृष्टि महिमापूर्ण थी एवं देह प्राण व आत्मा में सिद्ध था। उत्पत्ति २ में विस्तार से बताया गया है कि परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि जमीन की मिट्टी से किस तरह की। तब उसने मनुष्य के नथुनों में जीवन का श्वांस फूंका और मनुष्य जीवता प्राणी बन गया।

जीवन के साथ जिम्मेवारी भी आई। मनुष्य स्वयं निर्णय ले सकता था। वह अपने प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर को महिमा दे सकता था। यशायाह ४३:७ बताती है "वे मेरे लोग हैं और मैंने उन्हें अपनी महिमा के लिये सृजा है।"

बाइबल बताती है कि सायंकाल के ठण्डे समय में परमेश्वर मनुष्य के साथ उस सुन्दर बगीचे में जहां वे रहते थे, चलता-फिरता एवं बातचीत

करता था। परमेश्वर उन पहले लोगों से अर्थात् आदम और हव्वा से प्रेम रखता था एवं चाहता था कि यह सिद्ध सहभागिता हमेशा बनी रहे। किन्तु वह जानता था कि दबाव से यह सिद्ध नहीं हो सकता और यह भी कि आदम और हव्वा के पास परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने की स्वतंत्र इच्छा न होती।

चूंकि परमेश्वर के पास चुनाव करने की स्वतंत्रता है, और अपने समान ही मनुष्य को बनाया अतः मनुष्य को उसने यह निर्णय करने की स्वतंत्रता दी कि यह सहभागिता — अटूट एवं सुन्दर-जैसे थी वैसे हमेशा बनी रहे। शायद आदम व हव्वा ऐसा करना चाहते थे किन्तु वे कुछ अन्य चीजें भी चाहते थे। एक दिन वे उस स्थान पर आये जहां उन्हें अपनी मन भावनी वस्तु कां चुनाव करना था।

जो आपको करना है

१. प्रत्येक सही कथन के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींचिये।

अ. मनुष्य परमेश्वर की महिमा के लिये बनाया गया था।

ब. परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि बिना किसी चीज के की।

स. परमेश्वर के श्वाँस ने मनुष्य को जीवता प्राणी बना दिया।

ड. मनुष्य देह, प्राण एवं आत्मा में सिद्ध सृजा गया था

इ. मनुष्य चुनाव करने की स्वतंत्रता के साथ सृजा गया था।

२. प्रकाशित वाक्य ४:११ को मुखाग्र याद कीजिये। मुखाग्र करने के बाद निम्नलिखित खाली स्थानों की पूर्ति कीजिये।

हमारे..... और.....तू ही.....,....., और ...,..... ग्रहण करने के ..... है क्योंकि तूने ही

सब वस्तुयें ..... और वे तेरी ही इच्छा से ..... और ..... ।

३. निम्न कथन के लिये सही पूर्ण वाक्यांश का चुनाव करें। मनुष्य इसलिए बनाया गया ताकि

अ. उसका दमन एवं उससे अधिक कार्य लिया जाये।

ब. उस पर परमेश्वर की सेवा के लिए दबाव डाला जायें।

स. परमेश्वर की महिमा हो।

मनुष्य की दशा अभी

उद्देश्य २. पाप में गिर जाने के फलस्वरूप मनुष्य की दशा को समझना।

अपनी सृष्टि के साथ संगति रखने में परमेश्वर का हृदय कितना आनन्दित हुआ होगा। तब आदम और हव्वा ने इस बहुमूल्य संगति को तोड़ने का चुनाव किया।

मनुष्य गलत चुनाव करके पापी हो गया और अपने सिद्धता के ऊंचे पद से गिर गया। रोमियों ५:१९ में लिखा है "एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से सभी लोग पापी ठहरे।"

परमेश्वर का न्याय पाप की उपेक्षा नहीं कर सका। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता और अपने वचन के विरुद्ध नहीं जा सकता। उसने कहा था कि अनाज्ञाकारिता मनुष्य को नाशमान कर सकती है। आदम और हव्वा को उस स्वर्गतुल्य अदन की वाटिका को छोड़ना एवं परमेश्वर की उपस्थिति से दूर होना पड़ा।

मनुष्य की दशा आज भी पापमय है। रोमियों ३:२३ कहती है "सबने पाप किया है एवं परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" मनुष्य ने अपने चुनाव करने की योग्यता को कभी भी नहीं खोया। गलत चुनाव अभी भी लोगों को परमेश्वर से अलग करता है। • • •

जो आपको करना है

इन अभ्यासों में उस उत्तर का चुनाव करें जो प्रत्येक वाक्य को अच्छी तरह पूर्ण करता हो। अपने चुनाव के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींचिये।

४. सपन्याह ३:१७ कहती है कि जब आप प्रभु के साथ संगति रखते हैं तो वह

अ. कम से कम है जो आप कर सकते हैं।

ब. गीत गाता है और आपसे प्रसन्न है।

स. जानता है कि मनुष्य शीघ्र उसकी आज्ञा दोबारा ठुकराएगा।

ड. आपको नया जीवन देगा।

५. अय्युब ८:३ कहता है "ईश्वर अन्याय नहीं करता है। वह धर्म को उल्टा नहीं करता" इसलिए परमेश्वर को उसके स्वभाव के अनुकूल करना था और

अ. मनुष्य भले या बुरे के प्रति सही चुनाव करने की योग्यता को खो बैठा।

ब. दण्ड देने के द्वारा अपने वचन को पूरा करना था।

स. आदम और हव्वा को अदन की वाटिका को छोड़ना पड़ा।

ड. आदम और हव्वा ने उसके आदेशों को नहीं समझा और उन के विरुद्ध फैसला किया।

६. मनुष्य की स्थिति अब निम्न में से एक है :

अ. परमेश्वर से अलगाव।

ब. एक पापी स्वभाव।

स. पापों के प्रति कोई जिम्मेवारी नहीं।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. मनुष्य परमेश्वर की महिमा के लिए सृजा गया।
स. परमेश्वर के श्वांस ने मनुष्य को जीवित प्राणी बना दिया।
ड. मनुष्य देह, प्राण एवं आत्मा में सिद्ध सृजा गया।
इ. मनुष्य चुनाव करने की स्वतंत्रता के साथ सृजा गया।

४. ब. गीत गाता है एवं आपसे प्रसन्न है।
ड. आपको नया जीवन देगा।

२. प्रभु, परमेश्वर, महिमा, आदर, सामर्थ, योग्य, सृजी थीं सृजी गई।

५. ब. दण्ड देने के द्वारा अपने वचन को पूरा करना।
स. आदम और हव्वा को अदन की वाटिका को छोड़ना पड़ा।

३. स. परमेश्वर की महिमा।

६. अ. परमेश्वर से अलगाव।
ब. एक पापी स्वभाव।

आपकी टिप्पणी लिखने के लिए

पाप

आइए कल्पना करें कि एक मित्र ने आपको एक महल दिया हो जो खूबसूरत चीजों से भरा हुआ हो। यह आपके लिये है ताकि आप इसका आनन्द लें। केवल एक ही निवेदन वह आपसे करता है, "कृपया इसकी चोटी पर से न कूदें क्योंकि आप मर जाएंगे।"

तब एक शत्रु आपके महल में आता है। वह कहता है, "किसने कूदने को मना किया है? आप कूद सकते हैं। आप अजीब आनन्द महसूस करेंगे। आपको मालूम होगा कि उड़ने में कैसा महसूस करेंगे। आपको मालूम होगा कि उड़ने में कैसा महसूस होता है। आप विभिन्न दृष्टि-क्षेत्र से अपने महल को देख सकेंगे। आप इस बात की चिन्ता न करें कि भूमि पर गिरने से आपका क्या होगा। केवल उन बातों पर विचार करें कि नीचे जाते हुए कितनी नई बातों की जानकारी आपको मिलेगी।"

क्या आप अपने महल की चोटी पर चढ़कर छलांग लगाएंगे? बेशक नहीं। यह एक मूर्खता होगी कि अपने शत्रु पर भरोसा करके इसके कहे अनुसार करें।

आदम और हव्वा ने कुछ ऐसा ही अनुभव किया। परमेश्वर ने उन्हें एक खूबसूरत बाग में रख कर उसकी सारी चीजों के ऊपर अधिकारी नियुक्त

किया। उसने उन्हें अनुमति दे रखी थी कि केवल एक वृक्ष को छोड़ बाकी सब के फलों को वे खा सकते हैं। तब शत्रु शैतान ने आकर उन्हें किसी रीति से उस वृक्ष के फल को खाने को कहा — कि उससे उनकी कोई हानि नहीं होगी। उन्होंने उसकी बातों पर भरोसा किया बजाये परमेश्वर की। कितनी मूर्खता!

जैसे कि हमने पहले पाठ का अध्ययन किया, मनुष्य अपनी सृष्टि के समय सिद्ध था किन्तु आज्ञा न मानने के द्वारा पाप उस के जीवन में आया। हम पाप की परिभाषा कैसे दें? क्या यह आदम के द्वारा संसार में आया? पाप के लिये कौन सा दण्ड है? क्या इससे बचाव का कोई उपाय है? बाइबल की आयतें जो इस पाठ में हैं हमें इनका उत्तर देंगी।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे.....

पाप की परिभाषा
पाप की उत्पत्ति
पाप से छुटकारा

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप ....

- पाप की प्रकृति एवं परिणाम का वर्णन कर सकें।
- मनुष्य के पाप को दूर करने में मसीह के कार्य का सम्मान कर सकें।

पाप की परिभाषा

उद्देश्य १. पाप की व्याख्या को समझाना।

परमेश्वर की व्यवस्था का पालन न करना पाप है। यह परमेश्वर को ऐसा कहना है कि "मैं तुम से अधिक महत्वपूर्ण हूं! मैं तुम्हारे वचन को अन्तिम फैसला नहीं मानता।"

"मुझे सीमित करने का किसी को अधिकार नहीं", आप ऐसा कह सकते हैं। "जो मुझे अच्छा लगे मैं वही करूंगा।" परमेश्वर ने जो हमारे लिये सीमाएं निर्धारित कर रखी हैं, उसका एक कारण है — हमारी सर्वोत्तम भलाई के लिये। उदाहरण के लिये, परमेश्वर जानता है कि ईर्ष्या और जलन अत्यधिक सिरदर्द उत्पन्न कर सकती है। और बदला लेने की भावना नासूर उत्पन्न कर सकती है। यही विचार-भावना दूसरों को भी दुःख पहुंचाती है। परमेश्वर ने अपना प्रेम इस तरह प्रगट किया कि हमारी सुरक्षा के लिये उसने कुछ सीमाएं या नियम निर्धारित किए। इन सीमाओं का उल्लंघन करना हमारे लिये पाप है। पहला यूहन्ना ३:४ कहता है "जो कोई पाप करता है वह व्यवस्था का विरोध करता है।"

"तो क्या यह सही है कि मैं वह सब कुछ कर सकता हूं जिससे मुझे या दूसरों को चोट न पहुंचती हो?" नहीं, सब चीजें तभी सही हैं जब वे परमेश्वर के द्वारा निर्धारित सीमा के अन्तर्गत हों। हम सोच सकते हैं कि कुछ बातें हमें या दूसरों को चोट नहीं पहुंचातीं किन्तु वे हमारे विश्वास के विरुद्ध हो सकती हैं। उदाहरण के लिये, किसी जगह माता-पिता ने सोचा कि बच्चों को डांट-फटकार के विषय में हम परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं मानेंगे क्योंकि इससे बच्चे निरुत्साहित एवं भ्रमित हो जाएंगे। अब हाल ही में एक पत्रिका में छपा लेख हमें सूचित करता है कि "अब समय ऐसा है कि अपने बच्चों को अनुशासित करें।" मनुष्य की विचारधारा बदलती रहती है। कुछ समय तक तो वह कहेगा कि एक चीज दूसरों को चोट नहीं पहुंचाती किन्तु कुछ

समय के बाद कहेगा कि यह चोट पहुंचाती है। हमारी सुरक्षा एवं भलाई इसी में है कि हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करें, भले ही हम उनके कारणों को समझते हो या नहीं।

जो आपको करना है

इन अभ्यासों के लिये ऐसे उत्तर का चुनाव करें जो दिए गए वाक्य को अच्छी तरह पूर्ण कर सके। अपने चुनाव के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दें।

१. पाप

अ. वह है जो आप सोचते है कि कोई चीज़ गलत है।

ब. वह है जो दूसरे लोग कहें कि कोई चीज़ गलत है।

स. वह है जो हमें मालूम हो जाता है कि कोई चीज़ गलत है।

ड. परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति विद्रोह एवं उसका उल्लंघन करना है।

२. परमेश्वर ने मनुष्य के व्यवहार एवं आचरण के लिए कुछ सीमाएं निर्धारित की हैं क्योंकि वह

अ. चाहता था कि आदम और हव्वा को निरुत्साहित करे।

ब. नहीं चाहता कि मनुष्य स्वतंत्र होकर जीवन का आनन्द ले सके।

स. मनुष्य से प्रेम रखता है एवं उसकी सर्वोत्तम भलाई चाहता है।

३. परमेश्वर के द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन

अ. ठीक है यदि उससे किसी को चोट न पहुंचती हो।

ब. तब तक ठीक है जब तक किसी को मालूम न हो।

स. कभी-कभी किसी समस्या से छुटकारा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

ड. कभी-कभी नहीं करना चाहिए।

पाप की उत्पत्ति

उद्देश्य : २. कथनों की जानकारी प्राप्त करना जो बताती है कि पाप संसार में कैसे आया।

शैतान ने मनुष्य की परीक्षा ली और मनुष्य परीक्षा में गिर गया। पहला यूहन्ना ३:८ कहता है "जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है" शैतान के द्वारा पाप संसार में आया किन्तु इससे मनुष्य दोषमुक्त नहीं हो सकता। इसके लिये मनुष्य भी जिम्मेदार है।

आदम को शैतान के द्वारा ली गई परीक्षा में गिरने की आवश्यकता न थी। हमें मालूम है कि परमेश्वर हमारी परीक्षा नहीं लेता। याकूब १:१३-१४ बताता है :

जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह न कहे कि मेरी "परीक्षा परमेश्वर की ओर से है" क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

परीक्षा लिया जाना पाप नहीं है। यहां तक कि यीशु की भी परीक्षा शैतान के द्वारा ली गई। किन्तु परीक्षा में गिर जाना पाप है। यदि आदम और हव्वा परीक्षा में न गिरते तो संसार कितना फर्क होता।

क्या हुआ जब मनुष्य ने पाप किया? परमेश्वर ने कहा था कि वह मर जाएगा। पाप करते ही वह मरा नहीं जैसे कि मौत के विषय में हम जानते हैं किन्तु वह तुरन्त नाशवान बन गया। मौत ने उसके शरीर, प्राण एवं आत्मा के विरुद्ध कार्य करना शुरु कर दिया।

एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई इसलिए कि सबने पाप किया। (रोमियों ५:१२)।

हां सभी लोग पापी है। "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:२३)

पाप का दण्ड आज हमारे लिये वही है जो आदम और हव्वा को दिया गया था — मौत। रोमियों ५:१२ इसे इस तरह व्यक्त करती है "मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई।" रोमियों ६:२३ में हम पढ़ते हैं "पाप की मज़दूरी मृत्यु है" पाप करते ही मनुष्य शारीरिक रूप से नहीं मरता। कभी-कभी तो ऐसा भी जान पड़ता है कि वह और उन्नति कर रहा है। तौ भी मौत वहां कार्यशील है और अन्त में वह न सिर्फ शारीरिक रूप से किन्तु आत्मिक रूप से भी मर जाएगा। आत्मिक मृत्यु का अर्थ परमेश्वर से अनन्तकाल तक अलग हो जाना है।

जो आपको करना है

इन अभ्यासों के लिए ऐसे उत्तरों का चुनाव करें जो प्रत्येक वाक्य को सही-सही पूरा कर सकें। अपने चुनाव के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

४. इस संसार में पाप आया :

अ. शैतान के द्वारा जो कि आरम्भ से ही पाप करता आया है।

ब. क्योंकि आदम शैतान की परीक्षा में गिर गया।

स. जब आदम ने जान बूझ कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया।

५. चूंकि पाप संसार में आया इससे :

अ. शैतान को किसी की परीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं है।

ब. सब पापी हैं एवं इनकी परीक्षा हो सकती है।

स. शारीरिक और आत्मिक दो मौत है।

पाप से छुटकारा

उद्देश्य ३. व्याख्या करना कि एक पापी पाप के दण्ड से छुटकारा कैसे प्राप्त कर सकता है।

क्या आपको वह कहानी याद है जो मैंने आपको इस पाठ के शुरु में बताई थी? वह व्यक्ति जो चोटी से छलांग लगाएगा वह निश्चय मरेगा। किन्तु यदि एक मित्र उस खिड़की के नीचे ही एक मजबूत सा जाल लगा दे तो क्या होगा? वह जो चोटी से कूदेगा वह जाल में फंस जाएगा और उसका जीवन बच जाएगा।

परमेश्वर ने हमारे लिये एक रास्ता तैयार किया है जिससे हम पाप के दण्ड से अर्थात् आत्मिक मौत एवं परमेश्वर से अलगाव से बच सकते हैं। यह रास्ता है यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करना। भविष्य के पाठों में हम उन पदों के विषय में सीखेंगे जो बताती है कि हम कैसे वहां तक पहुंच सकते एवं उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। अभी यह अच्छा होगा कि हम नीचे दी गई दो आयतों को मुखाग्र कर लें जो बताती है कि हम पाप के दण्ड से छुटकारा कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

परमेश्वर हमारे पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा (रोमियों ५:८)।

यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सारे अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है (१ यूहन्ना १:९)।

जो आपको करना है

६. पहला यूहन्ना ४:९-१० पढ़ें और नीचे दिये गये खाली स्थानों को भरें।

परमेश्वर ने अपना प्रेम अपने ..... को संसार में ..... के द्वारा प्रगट किया, ताकि हम .....द्वारा ..... पाएं। यही प्रेम है : यह नहीं कि हमने परमेश्वर से ..... किया किन्तु यह कि उसने हमसे .....किया और अपने ..... को भेजा जिससे हमारे ..... का ..... हो सके।

७. नीचे दिये गये कथनों को थोड़े शब्दों में पूरा करें

एक पापी अपने पाप के दण्ड से छुटकारा केवल .....
.....
प्राप्त कर सकता है।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. ड. परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध एवं उसका उल्लंघन।

५. ब. हर एक पापी है एवं उसकी परीक्षा हो सकती है।

स. शारीरिक और आत्मिक दो मौतें है।

२. स. मनुष्य से प्रेम रखता है एवं उसकी सर्वोच्च भलाई चाहता है।

६. पुत्र, भेजने, उसके, जीवन, प्रेम, पुत्र, पापों, प्रायश्चित।

३. ड. कभी भी नहीं करना चाहिए।

७. यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने के द्वारा।

अ. शैतान के द्वारा जो आरम्भ से ही पाप करता आया है।

ब. क्योंकि आदम शैतान की परीक्षा में गिर गया।

स. जब आदम ने जान बूझकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया।

आपकी टिप्पणी के लिए

यीशु मसीह

"हां मैं यीशु पर अवश्य विश्वास करता हूँ," मेरे नए मित्र ने कहा। "वह एक महान भविष्यद्वक्ता, परमेश्वर के पास से भेजा गया था जिसने बहुत शिक्षाएं दी जिन्हें हमें मानना चाहिए।"

"यह खुशी की बात है," मैंने उत्तर दिया, "किन्तु इतना काफी नहीं हैं। तुम्हें सिर्फ इतना ही विश्वास नहीं करना है कि वह एक महान भविष्यद्वक्ता था किन्तु यह भी कि वह परमेश्वर है। उसे आपको एक ईश्वर एवं उद्धारकर्ता के रूप में जानना आवश्यक है।"

मेरे मित्र के लिये यह स्वीकार करना कठिन था। उसे यीशु के बारे में कुछ बातें मालूम थीं किन्तु उसने उसके साथ अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध उसके वचन पढ़ने या प्रार्थना के द्वारा कभी स्थापित नहीं किया था। उसके लिये यह विश्वास करना काफी कठिन था कि सभी लोग पापी हैं (जैसे हमने पाठ चार में अध्ययन किया) या यह कि पाप से बचने का भी कोई उपाय है।

उस दिन उसने मुझसे कई प्रश्न किये। यीशु कौन है? एक ही समय में वह ईश्वर एवं मनुष्य कैसे हो सकता है? यदि वह मरा तो मसीही लोग क्यों कहते हैं कि वह जीवित है? अभी वह क्या कर रहा है?

इनका सबसे अच्छा उत्तर मुझे बाइबल धर्मशास्त्र में प्राप्त हुआ। इस पाठ में हम उन प्रश्नों को देखेंगे और उनका उत्तर ढूंढ़ेंगे जिन्हें मेरे मित्र ने जानना चाहा था।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

उसका व्यक्तित्व

उसका उद्देश्य

उसका वापस आना

इस पाठ से यह सहायता मिलेगी कि आप....

- यीशु कौन है इसकी व्याख्या कर सकें।
- उसके प्रथम आगमन के उद्देश्य को तथा भविष्य में उसके वापस आने को समझ सकें।

उसका व्यक्तित्व

उद्देश्य १. यीशु के बारे में बाइबल के वर्णन को समझना।

यीशु मसीह परमेश्वर का प्रत्यक्ष प्रगटीकरण है। उसे मनुष्य बनना पसन्द आया ताकि हम उसे भली भांति समझ सकें एवं अपने लिये उसके उद्धार की योजना को जान सकें। इस प्रकार मनुष्य के समान बनने का अर्थ यह हुआ कि यीशु के एक व्यक्तित्व में दो स्वभाव हैं, अर्थात् मनुष्य एवं ईश्वरीय दोनों। रोमियों १:३-४ कहती है:

> अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। मनुष्य का स्वभाव प्राप्त करने के लिये उसने मरियम नाम की एक कुंआरी से जन्म लिया।

> स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे मरियम; तू भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलायेगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।" (लूका १:३०-३१)।

> और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना १:१४)।

यूहन्ना १:१४ में बताया गया पिता कौन है? परमेश्वर यीशु का पिता है। दूसरा पतरस १:१७ हमें बताता है, उसे आदर व महिमा पिता के

द्वारा दी गयी जब एक आवाज सर्वोच्च महिमा से यह कहती हुई आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं!"

यह नाम "यीशु मसीह" उसके ईश्वरत्व को भी बताता है। जब स्वर्गदूत ने कहा कि उसका नाम यीशु रखा जायेगा, यह एक विशेष कारण से था। यीशु का अर्थ उद्धारकर्ता है। मत्ती १:२१ कहता है "वह एक पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना — क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ायेगा।"

मसीह नाम का भी एक विशेष कार्य है। इसका अर्थ है "अभिषिक्त जन" या "मसीहा"। प्राचीन काल में जब किसी व्यक्ति का चुनाव राजा होने के लिये किया जाता था तो उसके सिर पर तेल उंडेला जाता था जो इस धर्म क्रिया का एक भाग था। इस प्रकार तेल का उंडेला जाना "अभिषेक" कहलाता था। प्रभु को "मसीह" या "अभिषिक्त जन" कहने का अर्थ हुआ कि वह राजा था। यहूदियों ने "मसीहा" नाम उस राजा और छुड़ाने वाले को दिया था जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे।

शमौन पतरस ने उसे राजा स्वीकार करते हुए कहा "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती १६:१६)।

जो आपको करना है

१. दाहिने ओर के वाक्य यीशु का वर्णन करते हैं। बायीं ओर दिये हवालों को पढ़ें। तब प्रत्येक पद के सामने इनके वर्णन की संख्या लिख दें।

...अ.	फिलिप्पियों २:७	१) परमेश्वर उसका पिता है।
...ब.	यूहन्ना १०:१७	२) एक स्त्री से उसका जन्म हुआ।
...स.	फिलिप्पियों २:६	३) वह उद्धारकर्ता है।
...ड.	गलतियों ४:४	४) वह हमारे समान बन गया।
...इ.	प्रेरितों ४:१२	५) वह ईश्वरीय है एवं परमेश्वर का स्वभाव उसमें है।

उसका उद्देश्य

उद्देश्य : २. ऐसे कथनों को पहचानना जो दर्शाते हैं कि यीशु क्रूस पर क्यों मरा और आज वह क्या कर रहा है।

यीशु इस संसार में मनुष्य को पाप से बचाने आया। लूका १९:१० कहता है, "मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूंढ़ने और बचाने के लिये आया।" हमें बचाने के लिये उसके पास एक ही रास्ता था — अपना प्राण देकर। "क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाये पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे" (मरकुस १०:४५)।

छुड़ौती का अर्थ है स्वतंत्र कर देना, बचाना, उद्धार करना या छुटकारा देना। यह एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा सारी मानव जाति के लिये है। किन्तु हमें छुड़ाने के लिये यीशु को क्यों मरना पड़ा। यदि हम आदम और हव्वा की कहानी याद करें तो हमें मालूम होगा कि पाप के कारण मौत आई। परमेश्वर पाप के विरुद्ध है और अपने न्याय को भंग नहीं कर सकता। यदि पाप है तो पाप के बदले में मरना अवश्य है। इसलिये यीशु मसीह एक पापी के स्थान में मरने आया। कोई दूसरा इसे नहीं कर सकता था क्योंकि केवल वही एक है जो मौत के ऊपर विजय प्राप्त कर सका।

तो भी यह सरल नहीं था — प्रभु के लिये भी। वह, जो स्वर्गीय स्थानों पर विराजमान था स्वर्गदूत उसकी आज्ञा पालन के लिये उसके आगे खड़े रहते थे, वह जिसने आकाश व पृथ्वी एवं मनुष्य को बनाया, स्वयं सेवक बना गया। उसने अनुमति दे दी कि उसकी सृष्टि उसे दुख दे, तुच्छ समझे और कलवरी के क्रूस पर चढ़ाये ताकि वे बचाये जा सकें। पतरस की पहली पत्री १:१८-१९ में हम पढ़ते हैं।

> क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल चलन जो बापदादाओं से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।

चूंकि यीशु सभी के लिये मरा तो क्या सभी लोग उद्धार पाते हैं? नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने चुनाव के विशेष अधिकार को कभी भी अलग नहीं किया। प्रत्येक मनुष्य को अब भी स्वयं निर्णय लेने का अधिकार है। उसे यीशु को अपनी व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करना है। यीशु ने अपने चेलों से कहा :

> तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा (मरकुस १६:१५-१६)।

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पायें। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए (यूहन्ना ३:१६-१८)।

यीशु हमारे लिये मरा। तो भी मनुष्य के उद्धार की कोई आशा न होती, यदि वह मर कर कब्र में पड़ा रहता।

बहुत से धर्मों में उनके अनुयायी अपने अगुओं की कब्रों पर मज़ार बनाते हैं। जिनके अन्दर मृत अगुवों की सम्मानित हड्डियां रहती हैं। किन्तु यीशु की कब्र खाली है, आश्चर्यकर्म के कारण जो क्रूस पर चढ़ाये जाने के तीन दिन बाद हुआ। यीशु मौत से जी उठा और जी उठने के बाद कई बार चेलों को दर्शन दिया।

> वह गाड़ा गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा। और कैफा को फिर बारहों को दिखाई दिया। फिर पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुतेरे अब तक वर्तमान है : पर कितने सो गये। फिर याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया और सब के बाद मुझको भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूं। (१ कुरिन्थियों १५:४-७)।

यीशु का जी उठना एक प्रमाण है जो उसके परमेश्वर के पुत्र होने को दर्शाता है। रोमियों १:४ कहता है, "वह (यीशु मसीह) पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओ में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।"

अपने आप को बहुत से लोगों को दिखाने एवं उत्साहवर्धक वचन कहने के बाद वह स्वर्ग में चढ़ गया। यह भी कोई रहस्य नहीं था क्योंकि वह अपने चेलों के देखते स्वर्ग पर चढ़ा।

तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया (लूका २४:५०-५१)।

यीशु अब क्या कर रहा है? जब वह उठा लिया गया उसने अपने पिता के दाहिने हाथ की ओर अधिकारपूर्ण जगह ले ली। वह अपने पिता से हमारी आवश्यकताओं के बारे में बातें करता है। आइए हम तीन आयतों को देखें जो बताती हैं कि वह अभी क्या कर रहा है।

"अब जो बातें हम कह रहे हैं उनमें से सबसे बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा महायाजक है जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा" (इब्रानियों ८:१)।

"हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूँ कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह" (१ यूहन्ना २:१)।

"इसलिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है" (इब्रानियों ७:२५)।

कितना अद्‌भुत है कि हमारे छुटकारे के लिये बहुमूल्य दाम पटाया जा चुका है। और क्रूस पर मरने, कब्र से जी उठने और पिता के पास रहने के लिये उठाये जाने के बाद वह हमें नहीं भूलता। वह प्रतिदिन हममें दिलचस्पी रखता और चाहता है कि हमारी सहायता करे जब कभी भी हम उसे ऐसा करने दें।

• • •

जो आपको करना है

२. निम्नलिखित कथनों के सही समापन के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें। यीशु मसीह क्रूस पर मरा ताकि

अ. हमें छुटकारा दे।

ब. हमारी न्यायोचित मौत में हमारे बदले में मरे।

स. जितने लोग उस पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं उन्हें उद्धार दे।

ड. हमें अनन्त जीवन दे।

३. लूका २४:४६-४७ पढ़ें। पद ४६ हमें यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने एवं जी उठने के बारे में बताता है। पद ४७ बताता है कि उसे क्यों मरना एवं फिर जी उठना पड़ा। पद ४७ क्या कारण बताता है?

.....

.....

४. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर के अक्षर के सामने वृत्त खींच दें। वचन के अनुसार यीशु अब क्या कर रहा है? वह :

अ. दूसरी सृष्टि पर ध्यान दे रहा है।

ब. पिता से हमारी आवश्यकताओं के बारे में निवेदन कर रहा है।

स. निर्णय ले रहा है कि अनन्त जीवन कौन प्राप्त करेगा और कौन नहीं।

• • •

उसका वापस आना

उद्देश्य ३. रैपचर के समय घटने वाली कम से कम पांच घटनाओं को जानना।

प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर फिर वापस आयेगा। हम इसे उसका दूसरा आगमन कहते हैं। बाइबल बताती है कि उस घटना के पहले उसकी कलीसिया (वे सभी जिन्होंने उस पर विश्वास किया है) हवा में उससे मिलने के लिये उठा ली जायेगी। इसे रैपचर कहते हैं। रैपचर के कुछ समय बाद वह पृथ्वी पर आयेगा एवं राज्य स्थापित करेगा।

विश्वासी रैपचर के इन्तजार में हैं क्योंकि इस घटना के समय हम उसके साथ रहने के लिये तथा अनन्त जीवन का इनाम प्राप्त करने के लिए उठा लिए जाएंगे। प्रेरितों के काम १:११ कहता है "यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आयेगा।" पहला थिस्सलुनीकियों ४:१६-१७ भी बताता है :

> क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वह पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें। और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

जब हम पाठ दस का अध्ययन करेंगे तब हम रैपचर (प्रभु यीशु एक दिन अपनी कलीसिया को ऊपर बादलों पर बुला लेगा) एवं भविष्य की दूसरी घटनाओं के विषय में अधिक सीखेंगे।

जो आपको करना है

५. निम्नलिखित सही कथनों के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

अ. यीशु फिर पृथ्वी पर आएगा।

ब. दूसरा आगमन और रैपचर एक ही है।

स. प्रभु का पृथ्वी पर का राज्य रैपचर के समय स्थापित होगा।

ड. जितने यीशु पर विश्वास रखते हैं वह हवा में उससे मिलने जाएंगे।

६. पहला थिस्सलुनीकियों ४:१६-१७ फिर पढ़ें। कम से कम पांच ऐसी घटनाएं बताएं जो रैपचर के समय घटेंगी।

अ. .....,.....

ब. .....,.....

स. .....,.....

ड. .....,.....

इ. .....,.....

अपने उत्तरों की जांच करें

१.
- अ. ४) वह हमारे समान बना।
- ब. १) परमेश्वर उसका पिता है।
- स. ५) वह ईश्वर है एवं परमेश्वर का स्वभाव उसमें है।
- ड. २) एक स्त्री से उसका जन्म हुआ।
- इ. ३) वह उद्धारकर्ता है।

४. ब. पिता से हमारी आवश्यकताओं के बारे में निवेदन कर रहा है।

२. ब. प्रत्येक के चारों ओर वृत्त खींच दें। वे सभी सही है।

५.
- अ. यीशु फिर से पृथ्वी पर आएगा।
- ड. जितने लोग उस पर विश्वास करते हैं वे हवा में उससे मिलने जाएंगे।

३. कि उसके नाम से छुटकारे का संदेश एवं पापों की क्षमा का प्रचार सारी जातियों में अवश्य किया जाए।

६. आप निम्नलिखित में से कोई पांच लिख सकते हैं :
- अ. आज्ञा की मुनादी।
- ब. परमेश्वर की तुरही की आवाज।
- स. प्रभु नीचे उतर आएगा।
- ड. मसीह में मृतक जी उठेंगे।
- इ. जीवित विश्वासी उठा लिए जाएंगे।
- फ. हम हवा में प्रभु से मुलाकात करेंगे।
- ज. अनन्तकाल तक प्रभु के साथ होंगे।

उद्धार

मैं उसके छोटे से घर में बैठा हुआ था जब ९५ वर्ष की अमेलिया ने मुझे बताया कि वह कैसे यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार कर सकी।

कई वर्ष पहले वह लेटिन अमेरिका के एक चर्च के दरवाजे पर खड़ी थी और प्रवेश करने से घबरा रही थी किन्तु उत्सुकता से प्रचारक को यह कहते सुना "यीशु तुम्हारा उद्धारकर्त्ता है। वह तुम्हें तुम्हारे पापों से बचाएगा। आवश्यकता पड़ने पर यीशु को पुकारें।"

उस दिन वह पहाड़ी पर वापस चली गई और जैसे ही अपने कमरे में प्रवेश किया तो सरसराहट की आवाज सुनाई दी। अचानक, इससे पहले कि वह उससे बचने के लिये भागे एक बड़े बोआ कन्सट्रिक्टर सर्प ने उसे लपेट लिया। अपने सामने वह उसके सिर को देख सकती थी जिसने उसे मरोड़ना शुरु किया। उसने प्रचारक के शब्दों को याद किया और साहस के साथ चिल्लाकर कहा "यीशु मुझे बचा! यीशु मुझे बचा! सर्प ने अपनी कुण्डली ढ़ीली कर दी और उसके शरीर को छोड़कर नीचे गिर गया और फिसलते हुए कमरे से बाहर चला गया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि उस दिन अमेलिया ने प्रभु को न सिर्फ शारीरिक बचाव के लिये धन्यवाद दिया किन्तु आत्मिक रूप से बचाने के लिए भी उससे प्रार्थना की।

वही प्रभु यीशु जिसने अमेलिया को बचाया वह आपको भी बचा सकता है। आइए अब इस बहुमूल्य उद्धार के विषय में अध्ययन करें और देखें कि इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे.....

उद्धार की परिभाषा।

उद्धार के विषय प्रारम्भिक शिक्षा।

उद्धार का परिणाम।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप .....

- उद्धार के अर्थ की व्याख्या कर सकें।
- उद्धार के सिद्धान्तों को अपने जीवन में प्रयोग कर सकें।
- उद्धार के प्रत्याशित परिणामों के उजाले में अपने जीवन की जांच कर सकें।

उद्धार की परिभाषा

उद्देश्य १. बाइबल के अनुसार उद्धार की परिभाषा मालूम करना।

एक दिन एक विश्वविद्यालय के एक जवान ने मुझसे कहा, "उद्धार पाने और स्वर्ग जाने के कई मार्ग हैं। स्वर्ग में पहुंचने के लिये विश्वास योग्यता ही साधन है। जैसा हम विश्वास करें उसमें स्थिर रहने से हम स्वर्ग जा सकते हैं।"

बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि पाप से स्वतंत्रता केवल "यीशु" के द्वारा मिलती है। प्रकाशित वाक्य १:५ कहता है, "वह (यीशु मसीह) हमसे प्रेम करता है और अपनी मृत्यु के द्वारा उसने हमें हमारे पापों से मुक्त किया है।"

प्रेरित ४:१२ कहता है : "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

अतः उद्धार की परिभाषा में हम कह सकते हैं कि यह पापों की क्षमा है, जो यीशु मसीह के पवित्र लोहू के द्वारा मिलती है जो हमारे पापों के प्रायश्चित में बहाया गया, यदि हम उस पर विश्वास करें।

किसे इस उद्धार की आवश्यकता है? जैसे कि हमने पहले अध्ययन किया है कि सभी ने पाप किया है और अनन्तकाल की मृत्यु अथवा सबके लिये परमेश्वर से अलगाव की सजा मिली हुई है। यहेजकेल १८:४ कहता है "जो मनुष्य पाप करता है वह मरेगा" और रोमियों ३:२३ में हम पढ़ते हैं कि "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।" सारी मानव जाति को पापों से छुटकारा और यीशु मसीह के द्वारा पापों की क्षमा की आवश्यकता है।

जो आपको करना है

१. यीशु के द्वारा उद्धार मिलता है, इसे दर्शाने वाले अक्षरों के चारों ओर वृत्त खींच दें।

अ. लूका १९:१०
ब. रोमियों ५:८
स. रोमियों १:१६
ड. गलतियों १:४

२. अच्छी तरह वाक्य पूर्ण करने वाले उत्तर का चुनाव करें।
उद्धार का अर्थ

अ. जो कुछ हम विश्वास करते हैं उसमें विश्वासयोग्य होना है।

ब. यीशु मसीह के द्वारा पापों से छुटकारा प्राप्त करना है।

३. सही कथन के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

अ. जो दूसरों को चोट पहुंचाते हैं केवल उन्हें ही उद्धार की आवश्यकता है।

ब. परमेश्वर के पास तथा स्वर्ग जाने के कई रास्ते हैं।

स. भले लोग उद्धार प्राप्त कर लेंगे।

उद्धार की प्रारम्भिक शिक्षा

उद्देश्य २. उद्धार के आधार को दर्शाने वाले कथनों को जानना।

यीशु के जी उठने के कुछ वर्ष बाद, "प्रेरितों के काम" का लेखक जेल के एक दरोगा की कहानी लिखता है जो उस बड़े भूकम्प से घबरा गया

था, जब पौलुस और सीलास जेल में बन्द थे, जो यीशु के चेले थे। दरोगा यह सोच कर भयभीत था कि कैदी भाग गये परन्तु पौलूस और सीलास ने उसे ढाढ़स बंधाया कि कोई कैदी नहीं भागा। दरोगा ने परमेश्वर के इस आश्चर्य-कर्म को देखकर पूछा कि मैं उद्धार पाने के लिए क्या करूं? उन विश्वासियों का सीधा-सादा उत्तर था — "प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा।" यह प्रेरितों १६:३१ में मिलता है।

अतः उद्धार प्राप्त करने के लिये पहला कदम अवश्य है कि प्रभु यीशु पर विश्वास किया जाए।

हमें किस तरह का विश्वास करना चाहिए? बाइबल में इसका भी उत्तर है। यह बताती है कि हमें उसको अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करना चाहिए और हमें स्वर्ग पहुंचने के लिए उस पर निर्भर होना चाहिए।

> परन्तु यह इसलिए लिखा गया है कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना २०:३१)।

जब हम यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करते हैं तो हमें पाप से भी मुंह मोड़ना है। हमें पश्चात्ताप करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें यीशु के नाम से क्षमा प्रदान करे और शुद्ध करे। यदि हम ऐसा करने के लिए उससे प्रार्थना करते हैं तो हमें भरोसा भी करना चाहिए कि वह क्षमा करता तथा शुद्ध करता है। पहला यूहन्ना १:९ याद रखें "यदि हम अपने पापों को परमेश्वर के सामने मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।

इस प्रकार से यीशु को प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करना केवल बातचीत के द्वारा किया जाता है। जैसे आप किसी मित्र से बातें करते हैं। यदि आपने ऐसा कदम कभी नहीं उठाया तो आप परमेश्वर से केवल कह दें कि उसके द्वारा दी गई क्षमा को आप स्वीकार करना चाहते हैं। शायद आप इसे अपने ही शब्दों में कुछ इस तरह कह सकते हैं :

"प्रेमी पिता,

मैं मानता हूं कि मैं एक पापी हूँ।

मुझे अपने पापों के लिये दुख है तुझ से क्षमा मांगता हूँ।

मुझे शुद्ध कर और सभी गलत कार्यों से बचा।

मैं तेरे पुत्र यीशु का बलिदान स्वीकार करता हूं जो क्रूस पर मेरे लिये मरा।

अब मैं उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करता हूं।

तुझे धन्यवाद देता हूँ आमीन।"

जब आप ईमानदारी से प्रार्थना कर लेते हैं तो आप भरोसा कर सकते हैं कि आपके पाप क्षमा कर दिए गए हैं। आप उसकी प्रशंसा कर सकते और उसको धन्यवाद दे सकते हैं कि आप उसके बच्चे हैं।

जो आपको करना है

इन अभ्यासों के लिए ऐसे उत्तर चुनें जो वाक्य को अच्छी तरह पूरा करता हो। अपने चुनाव के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

४. रोमियों १:१६ पढ़ें। यह कहता है कि उद्धार ऐसे प्रत्येक के लिए है जो

अ. नियमों के आधार पर जीवन बिताता है।

ब. विश्वास करता है।

स. धनी है।

५. प्रेरितों के कार्य १६:३१ और यूहन्ना २०:३१ के अनुसार उद्धार के लिए हमारा विश्वास होना चाहिए :

अ. प्रभु यीशु पर।

ब. चेलों पर जो संत थे।

स. अपने चर्च के रीतिरिवाजों पर।

उद्धार का परिणाम

उद्देश्य ३. उद्धार के पांच परिणाम को जानना।

जब आप उद्धार को स्वीकार करते हैं तो क्या होता है? एक स्पष्ट आत्मिक बदलाहट एवं परिवर्तन हो जाता है। कभी-कभी इसे हृदय का परिवर्तन कहते हैं। दूसरा कुरिन्थियों ७:१० कहता है :

"क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है।"

दूसरा कुरिन्थियों ५:१७ बताता है कि "यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है पुरानी बातें बीत गई है, देखो वे सब नई हो गई।"

यह परिवर्तन कई तरह से देखा जा सकता है। कभी-कभी एक व्यक्ति के विचार जीवन के प्रति उदासी से खुशी में बदल जाते हैं या शायद वह अब किसी व्यक्ति से प्यार करता है जिससे पहले न कर सकता हो।

शारीरिक परिवर्तन भी हो सकता है। जो शराब पीने की आदत से जकड़े हुए थे वह मुक्त हो जाते हैं। कोई व्यक्ति जो अब उस पर विश्वास करता है उसके जीवन में आवश्यक परिवर्तन लाने में प्रभु शक्तिशाली है।

याशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करने का अर्थ यह है कि परमेश्वर के परिवार में जन्म लेना। यही यीशु के कहने का अर्थ था जब उसने यूहन्ना ३:३ में कहा कि हमारा "नया जन्म" लेना अवश्य है।

> यूहन्ना १:१२-१३ कहती है :
> जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया। वे न लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए।

बाइबल गोद लेने के बारे में भी कहती है जो कि इसी प्रकार के सम्बन्ध को दर्शाती है। गोद लेने के द्वारा हम परमेश्वर के परिवार में स्वीकार कर लिए जाते हैं। परमेश्वर अपनी सारी विरासत का अधिकार जो कि परमेश्वर के बेटे-बेटियों का है, हमें देकर अपनी सन्तान बना लेता है।

> आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जबकि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं (रोमियों ८:१६-१७)।

"परमेश्वर के परिवार में होना एक विशेष बात है। इसलिए आप मसीहियों में एक दूसरे को "भाई" या "बहन" कहते हुए सुनते हैं। इसे कहने का अर्थ यह हुआ कि "कि हम एक ही परिवार के हैं।

क्या हमें अपने उद्धार का निश्चय हो सकता है? एक दिन एक जवान स्त्री ने प्रार्थना करने का निवेदन किया। उसने मुझे बताया कि जब उसने मसीह को अपनाया और उद्धारकर्ता स्वीकार किया तो उसे अद्‌भुत और आनन्द से भरा हुआ अनुभव प्राप्त हुआ। अब उसे ऐसा महसूस नहीं हो रहा था और जानना चाहती थी कि वह क्यों "अपना उद्धार खो चुकी" है हमें मालूम हैं कि हम अपनी अनुभूतियों के द्वारा उद्धार नहीं पाते किन्तु परमेश्तर के वचन के आधार पर प्राप्त करतें हैं।

यदि हमने बाइबल की शर्तों को जो उद्धार के बारे में दी गई हैं पूरा किया है तो हमें विश्वास करना चाहिए कि हमारा उद्धार हो चुका है चाहे हमारी अनुभूतियां कैसी भी क्यों न हों। पवित्र आत्मा भी हमारे हृदयों में इस बात का आश्वासन दे सकता है। हमें मसीह में अपने भाई बहनों के द्वारा भी आश्वासन प्राप्त हो सकता है जैसे मेरे मित्र ने भी किया था जिस दिन वह मेरे घर में आई थी।

हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं" (१ यूहन्ना ३:१४)।

शायद आपने मसीहियों को पापमोचन और पवित्रीकरण शब्दों का उपयोग करते हुए सुना होगा। इसका अर्थ क्या है?

पापमोचन का अर्थ है पाप से मुक्त हो जाना अर्थात् धर्मी बन जाना। यह उद्धार का परिणाम है । परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देता है, सारे दोष दूर कर देता है और कहता है कि अब हम धर्मी बन गए — जैसे हमने कभी कोई पाप किया ही न हो। रोमियों ५:१ हमें बताता है "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" पांपमोचन का अर्थ परमेश्वर की दृष्टि में सच्चा ठहरना है।

पवित्रीकरण का अर्थ पवित्र बनना है अर्थात् पापों से शुद्ध एवं परमेश्वर के लिए समर्पित होना है।

> शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें (१ थिस्सलुनीकियों ५:२३)।

परमेश्वर चाहता है कि सभी मसीहियों का पवित्रीकरण हो अर्थात् पवित्र हो जाएं। "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो।" (१ थिस्सलुनीकियों ४:३) "सबसे मेल मिलाप रखने और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा (इब्रानियों १२:१४)।

एक और बात है जिसे यीशु के क्रूस पर मौत के परिणाम के अन्तर्गत जानना जरूरी है। यह दैवीय चंगाई है यीशु के क्रूस के द्वारा प्राप्त फायदों में यह भी एक है।

जब संध्या हुई तब वह उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थी और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया (मत्ती ८:१६-१७)।

"वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं" (यशायाह ५३:५) दैवीय चंगाई परमेश्वर की दैवीय सामर्थ है जो मनुष्य की देह को स्वास्थ्य प्रदान करती है। याकूब ५:१४-१५ हमें बताता है कि हम इस चंगाई पर अधिकार कैसे कर सकते हैं।

> यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उस के लिये प्रार्थना करें और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठा कर खड़ा करेगा और यदि उसने पाप भी किए हों तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी।

जो आपको करना है

६. इस प्रश्न में सही उत्तरों के सामने के अक्षरों में वृत्त खींचें।

उद्धार के परिणाम निम्न में से कौन-कौन से हैं?

अ. परिवर्तन

ब. गोद लेना या "नया जन्म" होना

स. पापमोचन

ड. पवित्रीकरण

इ. दैवीय चंगाई की प्राप्ति

७. बाईं ओर के शब्दों को पढ़ो। प्रत्येक के सामने दाईं ओर दी गई परिभाषा की संख्या लिखो जो मेल खाती हो।

...अ.	परिवर्तन	१.	पवित्र बन जाना।
...ब.	पवित्रीकरण	२.	दैवीय साधनों से स्वास्थ्य प्राप्त होना।
...स.	पापमोचन	३.	पूर्ण परिवर्तन बदलाहट आ जाना।
...ड.	दैवीय चंगाई	४.	परमेश्वर के परिवार का एक भाग बन जाना।
...इ.	गोद लेना	५.	धर्मी बन जाना।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. प्रत्येक पर वृत्त खींच दें क्योंकि प्रत्येक पद बताता है कि उद्धार यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त होता है।

५. अ. प्रभु यीशु

२. ब. यीशु मसीह के द्वारा पापों से छुटकारा।

६. प्रत्येक में वृत्त खींच दें क्योंकि वे सभी उद्धार के परिणाम हैं।

३. किसी भी चुनाव में वृत्त न खींचे। उनमें से कोई भी सही नहीं है।

७. अ. ३) पूर्ण परिवर्तन आ जाना।

ब. १) पवित्र बन जाना।

स. ५) धर्मी बन जाना।

ड. २) दैवीय साधनों से स्वास्थ्य प्राप्त होना।

इ. ४) परमेश्वर के परिवार का भाग बन जाना।

४. ब. विश्वास करता है।

पवित्र आत्मा

यीशु के चेले जानते थे कि वह उनसे दूर जा रहा था। वह उनसे ऐसा कह चुका था। सर्वप्रथम उन्हें यह बात ठीक मालूम नहीं पड़ी और घबरा गये। यीशु उनसे प्रेम करता था; वे यीशु के साथ तीन वर्ष तक चला फिरा करते थे। वे उसके बिना कैसे रह सकते थे?

यीशु उनके दिल की बात समझ गया और उन्हें आश्वासन दिया कि पिता के पास उसका स्वर्ग में जाना उनके लिये भला है। उसका पिता पवित्र आत्मा भेजने पर था (त्रिएकता का एक भाग जिसका अध्ययन हमने पाठ नं. २ में किया है) और वह अकेले नहीं रहते।

पवित्र आत्मा का अनुभव किसी एक देश के लिये, अथवा एक विशेष जाति के अगुवों के लिये नहीं था — परन्तु पूरी पृथ्वी के लोगों के लिए था पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने एक बड़ी भीड़ को प्रचार किया जिनमें पन्द्रह विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग सम्मिलित थे। प्रेरितों के काम २:१६-१७ हमें बताती है : यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है : कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंड़ेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे।

पाठ ६ में हमने उद्धार के विषय में अध्ययन किया है। क्या आप जानते थे कि हमें पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा उद्धार की प्राप्ति होती है? आइये हम पवित्र आत्मा और हमारे जीवन में उसके कार्य के विषय में अध्ययन करें।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व।
पवित्र आत्मा का कार्य।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप....

- पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व का वर्णन कर सकें।
- उद्धार के प्रति पवित्र आत्मा के कार्य की व्याख्या कर सकें।
- अपने जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य को समझ सकें।

पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व

उद्देश्य १. पवित्र आत्मा कौन है इसका वर्णन करें और कम से कम उसके पांच गुणों को दर्शाएं।

पवित्र आत्मा परमेश्वर है। वह त्रिएक परमेश्वर में निहित तीसरा व्यक्ति है जो पवित्र त्रिएकता कहलाता है। पिता और पुत्र के समान इसके भी कई नाम हैं। कुछ है पवित्र आत्मा, परमेश्वर की आत्मा, सत्य की आत्मा, सहायक! मत्ती २८:१९ में तीनों व्यक्तियों के विषय में दर्शाया गया है। "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

पवित्र आत्मा पिता परमेश्वर के समान है। वह अनन्त, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी और सर्वव्यापी है। वह पिता और पुत्र के साथ मिलकर कार्य करता है और सृष्टि के समय वह उनके साथ था। आइये हम कुछ पदों पर ध्यान दें जो हमें पवित्र आत्मा के विषय में बताते हैं।

"सनातन आत्मा के द्वारा उसने अपने आपको सिद्ध बलिदान के रूप में परमेश्वर को चढ़ाया" (इब्रानियों ९:१४)।

"आत्मा सब बातें वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जानता है" (१ कुरिन्थियों २:१०)।

"ईश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया और सर्व शक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।" (अय्यूब ३३:४)।

पवित्र आत्मा ने भविष्यद्वक्ताओं को एवं महायाजकों को पुराने नियम के समय में प्रेरित किया। उसने पुरुषों एवं स्त्रियों की सहायता की, कि परमेश्वर की सेवा कर सकें। यूसुफ के विषय में जो के मिस्र देश में दास के रूप में बेचा गया था कहा गया था "हमें यूसुफ से अच्छा व्यक्ति नहीं मिल सकेगा। उसमें परमेश्वर की आत्मा निवास करती है।" (उत्पत्ति ४१:३८)

जो आपको करना है

१. पवित्र आत्मा ..... त्रिएकता का ..... व्यक्ति है वह ..... एवं .....के साथ मिलकर काम करता है। और ..... के समय से पृथ्वी पर रह रहा है।

२. धर्मशास्त्र के निम्न पदों को पढ़ें। इन पदों में दर्शाये गये पवित्र आत्मा के गुण या विशेषताओं को लिखें।

अ. रोमियों १५:३३ .....

ब. इब्रानियों १०:१५ .....

स. १ पतरस ४:१४ .....

ड. १ यूहन्ना ५:६ .....

इ. यूहन्ना १४:२६ .....

पवित्र आत्मा का कार्य

उद्देश्य २. बाइबल में दर्शाये गये पवित्र आत्मा के छः कार्यों को जानें।

पवित्र आत्मा हमारे उद्धार की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। वह हमें बताता है कि हमारे पाप कितने गन्दे है एवं यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करने में हमारी सहायता करता है। वह हमारे जीवनों को बदल देता है। और जब वह आता है (पवित्र आत्मा) वह संसार के लोगों को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करता है। (यूहन्ना १६:८)

"मैं तुमसे सच कह रहा हूं" यीशु ने उत्तर दिया, "परमेश्वर के राज्य में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वह जल और आत्मा से जन्म न ले ले। एक व्यक्ति शरीर में शारीरिक माता पिता के द्वारा जन्म लेता है परन्तु वह आत्मिक रूप में आत्मा के द्वारा जन्म लेता है।" (यूहन्ना ३:५-६)

पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी के अन्दर निवास करता है। जीवन परिवर्तन के समय वह हृदय में प्रवेश करता है। "आप को यह बताने के लिए कि आप उसके पुत्र है, परमेश्वर ने अपने पुत्र की आत्मा को हमारे हृदय में भेजा, आत्मा जो पुकारता है, पिता, मेरा पिता।" (गलतियों ४:६) रोमियों ८:९ आगे कहता है "जिस किसी में मसीह की आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।" यदि हम परमेश्वर के परिवार के हैं तो उसकी आत्मा हममें निवास करती है।

क्योंकि आत्मा जो परमेश्वर ने आपको दिया है आपको दास बनाने के लिए या डर उत्पन्न करने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर की सन्तान बनाने को दिया है, एवं आत्मा की सामर्थ के द्वारा हम परमेश्वर को पुकार कर कहते हैं "पिता! मेरे पिता!" (रोमियों ८:१५-१६)।

हमने पवित्र आत्मा के, हमारे जीवन में निवास करने के विषय में बातचीत की और हम पवित्र आत्मा के द्वारा भरे भी जा सकते हैं जो जीवन परिवर्तन के बाद का अनुभव है। बहुधा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहलाता है सभी विश्वासी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं करते परन्तु यह एक अनुभव है जिसे परमेश्वर चाहता है कि उसको सभी सन्तान प्राप्त करें।

> वह (यीशु) परमेश्वर अपने पिता के दाहिने हाथ उठा लिया गया एवं प्रतिज्ञा अनुसार पवित्र आत्मा प्राप्त किया। जो अब आप देखते और सुनते हैं वह उसका वरदान है जिसे हमारे ऊपर उंडेल दिया गया है (प्रेरितों के काम २:३३)।

पतरस ने उनसे कहा, "तुम में से प्रत्येक अपने पापों से मन फिराए एवं यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ताकि तुम्हारे पाप क्षमा किये जायें

और तुम परमेश्वर का वरदान "पवित्र आत्मा" प्राप्त कर सको।" (प्रेरितों के काम २:३८)

पवित्र आत्मा हमारा सहायक है, वह हमें सिखाता, प्रेम और संगति देता, एवं सच्चाई की ओर हमारी अगुवाई करता है। उसके पास हमारे लिये फल हैं। जैसे आनन्द, शान्ति, धीरज, नम्रता एवं संयम (गलतियों ५:२२) और आत्मिक वरदान भी हैं जिनके द्वारा हम प्रभु की एवम् दूसरों की सेवा कर सकें (१ कुरिन्थियों १२:४-७)।

जो आपको करना है

३. निम्नलिखित सही कथनों के सामने के अक्षर पर वृत्त खींच दें।

अ. पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी में निवास करता है।

ब. पवित्र आत्मा उद्धार की ओर हमारी अगुवाई करता है।

स. जीवन परिवर्तन और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक ही है।

ड. पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की सन्तान घोषित करता है।

४. बाईं ओर धर्मशास्त्र के पदों को पढ़ें। प्रत्येक के सामने दाईं और दर्शाये गये पदों में पवित्र आत्मा के कार्य की संख्या लिखें।

...अ.	यशायाह ११:२	१)	सामर्थ देता है।
...ब.	यहेजकेल ३६:२७	२)	सिखाता है।
...स.	योएल २:२८	३)	सच्चाई प्रकट करता है।
...द.	लूका १२:१२	४)	बुद्धि, ज्ञान एवं निपुणता प्रदान करता है।
...इ.	मीका ३:८	५)	भविष्यद्वाणियां स्वप्न एवं दर्शन देता है।
...फ.	यूहन्ना १६:१३	६)	परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करवाता है।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. तीसरा।
त्रिएकता।
पिता।
पुत्र।
सृष्टि।

३.
अ. सही
ब. सही
स. गलत
ड. सही

२.
अ. सामर्थ
ब. गवाह
स. महिमायुक्त
ड. सच्चाई
इ. सहायक

४.
अ. ४) बुद्धि, ज्ञान एवं निपुणता प्रदान करता है।
ब. ६) परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करवाता है।
स. ५) भविष्यद्वाणियां, स्वप्न एवं दर्शन देता है।
ड. २) सिखाता है।
इ. १) सामर्थ देता है।
फ. ३) सच्चाई प्रगट करता है।

अध्याय 8

कलीसिया

कई सुन्दर इमारतें, धर्म पीठ, शान्ति मिशन संस्थाएं एवं झोंपड़ियां हैं जिनका नाम "कलीसिया" रखा गया है। इनमें मीनार, क्रूस, घन्टियां, गुम्बट लगे हुए हैं जो अपने अनुसार से लोगों का ध्यान आकर्षित यूं करते हैं "यह एक कलीसिया है।" ये मनुष्य के द्वारा बनायी गयी संरचनाएं शाब्दिक अर्थ में कलीसियाएं हैं किन्तु नये नियम में बताई गई कलीसिया कुछ और ही है।

व्यापक अर्थ में कलीसिया का अर्थ विश्वासियों का समूह है। यह प्रभु यीशु मसीह की देह कहलाती है इनमें परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा निवास करता है। पाठ नं. ७ में हमने पवित्र आत्मा एवं उसके कार्य के विषय में अध्ययन किया। इन कार्यों में से एक जिसे दर्शाया नहीं गया वह यह है कि वह कलीसिया को एकता प्रदान करता है। इफिसियों ४:३ कहता है, "और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।"

इस पाठ में हम अध्ययन करेंगे कलीसिया क्या-क्या है, इसे क्या करना चाहिए और इसका क्या होने जा रहा है। बाइबल ही हमें, फिर सही उत्तर देगी।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

इसके नाम
इसकी धर्म विधियां (नियम)
इसकी सेवा-उद्देश्य
इसका भविष्य

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप ....

- मसीह की कलीसिया का वर्णन कर सकें।
- कलीसिया की सेवा-उद्देश्य के प्रति अपने को सौंप दें।
- कलीसिया के भविष्य के कार्य की व्यवस्था कर सकें।

इसके नाम

उद्देश्य १. कलीसिया के कई नामों की सूची तैयार करें।

जब आप इन शब्दों को जैसे देह, इमारत, दुल्हन, परिवार सुनें तो क्या ये कोई सामान्यता प्रगट करते हैं? ये सभी शब्द लोगों को दशति हैं और धर्म शास्त्र की भाषा में ये शब्द विशेष लोगों के लिए विशेष समूह को दशति हैं — जो परमेश्वर के परिवार को बढ़ाते हैं।

कलीसिया की तुलना देह से की गई है, जिसका सिर मसीह है। कुलुस्सियों १:१८ कहता है, "वह अपनी देह अर्थात् कलीसिया का सिर है; वह देह के जीवन का स्रोत है।"

"और सब कुछ उसके पांव तले कर दिया गया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहरा कर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है और उसकी परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है" (इफिसियों १:२२, २३)

"आप सब मसीह की देह हैं, और प्रत्येक उसका एक अंग है" (१ कुरिन्थियों १२:२७) बाइबल में कलीसिया की तुलना एक इमारत से भी की गई है जो कि प्रभु के लिये मन्दिर के रूप में समर्पित है।

और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाये गये हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती है जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाये जाते हो (इफिसियों २:२०-२२)।

दूसरा नाम जो कलीसिया को दिया गया है वह मसीह की दुल्हन। बाइबल यीशु को मेम्ना कहती है और बताती है कि कलीसिया दुल्हन है जिसका विवाह उसके साथ होगा। प्रकाशित वाक्य २१:९ कहता है, "इधर आ मैं तुझे दुल्हन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊंगा" "क्योंकि मेम्ने का ब्याह

आ पहुंचा और उसकी पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है" (प्रकाशित वाक्य १९:७)। इफिसियों ५:२५ में मसीह की तुलना पति से और कलीसिया की तुलना पत्नी से की गई है। "हे पतियो अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया।"

जैसे-जैसे आप बाइबल का अध्ययन करेंगे तो आप और तुलनाएं पायेंगे। महत्वपूर्ण बात जो हमें याद रखनी है वह यह है कि कलीसिया उन सभी लोगों से बनी हुई है जो सचमुच नया जीवन प्राप्त, मसीह का अनुसरण करने वाले हैं। यह एक बढ़ता हुआ झुण्ड है, "और वह परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों के काम २:४७)।

• • •

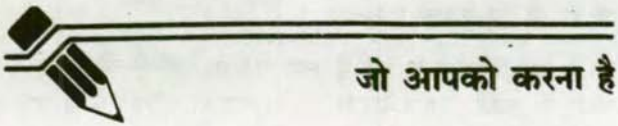

जो आपको करना है

१. नीचे दिये गये पदों को पढ़ें और इनमें दिये गये शीर्षक को इनके पीछे लिखें।

अ. भजन संहिता १४९:१

ब. १ पतरस ५:२

स. भजन संहिता ८९:७

ड. इफिसियों २:१९

इसकी धर्म विधियाँ

उद्देश्य २. कलीसिया के दो धर्म विधियों के नाम बतायें।

अब जब कि हमें ज्ञात है कि कलीसिया कौन है, इसकी धर्म विधियों को समझना महत्वपूर्ण है। विधि एक नियम है जो किसी अधिकारी के द्वारा बनाया जाता है। कलीसिया की धर्म विधियां पानी का बपतिस्मा और भोज संगति है जिसे हम प्रभु भोज भी कहते हैं।

यीशु ने स्वयं इन धर्म विधियों की स्थापना की। उसकी अन्तिम आज्ञा अपने सभी शिष्यों के लिए थी। "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो" (मत्ती २८:१९)। पानी के बपतिस्मे का एक विशेष महत्व है।

और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गये और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके जिसने उसको मरे हुओ में से जिलाया उसके साथ जी भी उठे (कुलुस्सियों २:१२)।

एक विश्वासी के रूप में आप पानी के बपतिस्मे को मसीह में नये जीवन की गवाही के रूप में लेना चाहेंगे। आप भोज संगति में भी भाग लेना चाहेंगे।

भोज संगति, प्रभु भोज या अन्तिम भोज, यीशु की अपने बारह चेलों के साथ की वह अन्तिम सभा थी जो उसके रोमी सिपाहियों के द्वारा पकड़वाये जाने के पहले बुलाई गई थी। हम प्रभु भोज को यीशु के मरणोत्सव मनाने के लिये लेते हैं "क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो तो प्रभु की मृत्यु का जब तक वह न आये प्रचार करते रहो" (१ कुरिन्थियों ११:२६)।

क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी कि प्रभु यीशु ने, जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली और धन्यवाद करके तोड़ी और कहा कि "ये मेरी देह है जो तुम्हारे लिये हैं, मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा "यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है जब कभी पीओ तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो" (१ कुरिन्थियों ११:२३-२५)।

जो आपको करना है

२.. कलीसिया की दो धर्म विधियां कौन सी हैं जो यीशु के द्वारा दी गई है?

.....

.....

३. इस वाक्य को भली भांति पूर्ण करने वाले उत्तर का चुनाव करें। मत्ती २८:१९ के अनुसार पानी का बपतिस्मा :

अ. उन सब के लिये है जो मसीही परिवार में पैदा होते हैं।

ब. उनके लिये हैं जिन्होंने मसीह पर विश्वास करके उसका अनुसरण करते हैं।

स. उनके लिये जो कलीसिया में सम्मिलित होते हैं।

४. नीचे दिये वाक्य को भली भांति पूर्ण करने वाले कथनों के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दीजिए। पवित्र भोज :

अ. कलीसिया की एक धर्म विधि है।

ब. मसीह की देह और लोहू को खाना है।

स. यीशु के बलिदान को याद करना है।

ड. सारे विश्वासियों के लिए है।

सेवा उद्देश्य

उद्देश्य ३. कलीसिया की सेवा-उद्देश्य की पहचान करना।

कलीसिया की सेवा-उद्देश्य समस्त मनुष्य जातियों में सुसमाचार का प्रचार करना है। पिता के पास वापस जाने से पहले यीशु ने स्वयं यह आज्ञा दी।

तब उसने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उनकी समझ खोल दी और उनसे कहा, "यूं लिखा है कि मसीह दुख उठायेगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जायेगा (लूका २४:४५-४७)।

जो आपको करना है

५. नीचे लिखे वाक्य को भली भांति पूर्ण करने वाले प्रत्येक कथन के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दीजिए।

अ. यीशु के दुःख उठाने और मृत्यु के विषय में बतायें।

ब. पश्चात्ताप और पापों की क्षमा के विषय में प्रचार करें।

स. समस्त जातियों में यीशु के विषय में बतायें।

इसका भविष्य

उद्देश्य ४. कलीसिया के विषय में बताने वाले कथनों का चुनाव करना।

मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपना प्राण भी दे दिया। किस लिए?

कि उसके वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाये और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो वरन् पवित्र और निर्दोष हो (इफिसियों ५:२६-२७)

कलीसिया परमेश्वर की स्तुति स्वर्ग में और पृथ्वी में (जहां वे यीशु के साथ राज्य करेगी) करेगी।

और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं .... फिर मैंने स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को कहते सुना कि जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेम्ने का धन्यवाद और आदर, और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे। (प्रकाशित वाक्य ५:१०-१३)

जो आपको करना है

६. नीचे लिखे सही कथनों के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दीजिये।

अ. अनन्त काल तक हमें कोई कार्य नहीं करना पड़ेगा।

ब. कलीसिया मसीह के साथ सर्वदा रहेगी।

स. कलीसिया परमेश्वर की सेवा पृथ्वी के याजकों एवं हाकिमों की तरह करेगी।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. उसके विश्वास योग्य लोगों की सभा

ब. झुण्ड

स. पवित्र लोग

ड. नागरिक, परमेश्वर के लोग, परमेश्वर का परिवार

४. आपको वृत्त खींचना चाहिए था (अ.) (स.) (ड.)। उत्तर (ब.) सही नहीं है क्योंकि हम वास्तविक रूप में यीशु की देह को नहो खाते न ही उसके लोहू को पीते हैं। रोटी और दाखरस उसकी देह और लोहू के प्रतीक हैं।

२. पानी का बपतिस्मा और भोज संगति (या प्रभु भोज)।

५. आपको सभी अक्षरों में वृत्त खींचना चाहिए था क्योंकि सभी सही हैं।

३. ब. जो मसीह पर विश्वास करके उसका अनुसरण करते हैं।

६. ब. सही

स. सही

अब जबकि आपने प्रथम आठ पाठों का अध्ययन पूर्ण कर लिया है अब आप अपने छात्र रिपोर्ट के प्रथम भाग का उत्तर देने के लिए तैयार है। पाठ एक से आठ तक दोहराये, तब अपने उत्तर पृष्ठ को भरने के लिए अपनी छात्र रिपोर्ट में दिये गये निर्देशन का पालन करें। अपने उत्तर पृष्ठ को छात्र रिपोर्ट के अन्तिम पृष्ठ में दिये गये पते पर वापस भेज दें।

आपकी टिप्पणी के लिए

अध्याय 9

आत्माओं का संसार

"जो आत्मा जो तुम में है वह उस आत्मा से जो संसार में है, अधिक शक्तिशाली है" (१ यूहन्ना ४:४)।

मारियाना बाल्यावस्था से ही आत्माओं की मध्यस्थता करने वाली बन गई। जब उससे मेरी मुलाकात हुई वह २५ वर्ष की थी और शैतान एवं अशुद्ध आत्माओं के द्वारा जकड़ी हुई थी। उन महीनों के प्रथम तीन सप्ताह जबकि मैं और कई अन्य विश्वासी मारियाना और उसके पिता के साथ रहते थे, एक भयानक आत्मिक युद्ध का समय था।

प्रति संध्या हम मारियाना के ऊपर हाथ रखकर उसके छुटकारे के लिए प्रार्थना करते थे। अशुद्ध आत्माओं ने उसे मार डालने की कोशिश की तथा हमें भी नुकसान पहुंचाना चाहा कि ऐसा नहीं कर सकें। हमने शैतानी ताकतों का मुकाबला किया एवम् यीशु के लोहू की सुरक्षा के लिये काफी प्रार्थना की। धीरे-धीरे अशुद्ध आत्माएं उससे निकल गईं। परमेश्वर की सामर्थ अधिक थी और जल्दी ही मारियाना पूर्णतः स्वतंत्र हो गई। वह हर एक से यह बता सकती थी "परमेश्वर जो मुझमें है वह इस संसार के शैतान एवं अशुद्ध आत्माओं से कहीं बढ़कर है।"

मारियाना परमेश्वर के परिवार की एक सदस्य एवम् कलीसिया की एक सदस्य बन गई जिसका अध्ययन हमने अभी-अभी किया है। केवल परमेश्वर उसे अपने वश में तथा केवल पवित्र आत्मा उसके जीवन में प्रवेश कर सका।

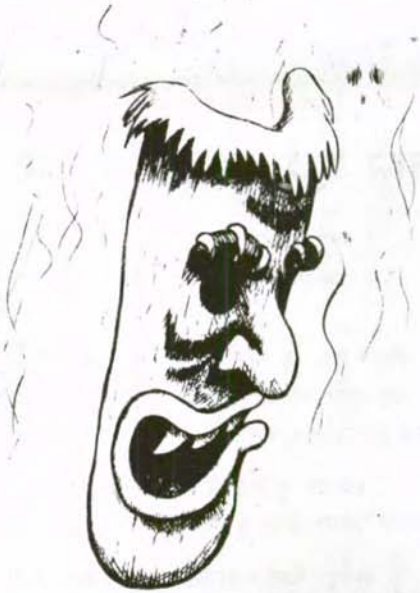

शायद आपने भी शैतान को कार्य करते हुए देखा होगा। किन्तु आपको घबराने की आवश्यकता नहीं। परमेश्वर की सामर्थ उनसे कही बढ़कर है। इस पाठ में आत्माओं के संसार की सामर्थ एवं हम विश्वासियों को मसीह की सुरक्षा प्राप्त है, इसके विषय में हम अध्ययन करेंगे।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

शैतान एवं अशुद्ध आत्माएं

स्वर्गदूत

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- व्याख्या कर सकें कि शैतान कौन है एवं उसका भविष्य क्या है।
- भले और बुरे स्वर्गदूतों के विषय में जान सकें।
- भले स्वर्गदूतों के द्वारा विश्वासियों को मिलने वाले लाभ के विषय में जान सकें।

शैतान एवं अशुद्ध आत्मा

उद्देश्य १. यह बताना कि शैतान कौन है तथा उसका एवं उसकी अशुद्ध आत्माओं का भविष्य क्या है।

शैतान एक दुष्ट स्वर्गदूत है जिसे स्वर्ग से नीचे गिरा दिया गया था क्योंकि वह अपने आपको परमेश्वर से ऊंचा करना चाहता था। यशायाह १४:१४-१५ कहता है :

तूने कहा कि तू मेघों से भी ऊंचे स्थानों पर चढ़ेगा और परम प्रधान के तुल्य हो जाएगा किन्तु तू अधोलोक में मौत के गड़हे में उतारा जायेगा।

बुरे स्वर्गदूत जिन्होंने उसका अनुसरण किया उनका भविष्य भी वैसा ही है : "परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया था नहीं छोड़ा। परन्तु नरक में डालकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया" (२ पतरस २:४)। यीशु ने कहा, "मैं शैतान को बिजली की नाईं से गिरा हुआ देख रहा था" (लूका १०:१८)।

शैतान (जिसे कभी-कभी लूफीसर या शैतान कहा गया है) प्रयत्न करता है कि पुरुषों एवं स्त्रियों को जीवित परमेश्वर की सेवा करने से रोक दे। पहला पतरस ५:८ हमें चिनौती देता है "सचेत रहो और जागते रहो, तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।"

अशुद्ध आत्माएं शैतान के साथ कार्य करती हैं ताकि लोगों को नुकसान पहुंचाएं एवं उनका नाश कर दें। मत्ती ८:२८-३४ दो व्यक्तियों के विषय में बताती है जो पागल हो गए थे क्योंकि उनमें अशुद्ध आत्माएं या प्रेत थे। किन्तु सदा से परमेश्वर की सामर्थ शैतान की सामर्थ से कहीं बढ़कर है। यीशु ने इन अशुद्ध आत्माओं को उन व्यक्तियों में से निकाल कर यह सामर्थ दिखाई।

जब संध्या हुई तब वे यीशु के पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें अशुद्ध आत्माएं थी और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया। (मत्ती ८:१६-१७)।

जब मसीह अपना राज्य इस पृथ्वी पर स्थापित करने आएगा तो शैतान नरक में डाला जायेगा।

> तब उनका भरमानेवाला शैतान आग और गंधक की उस झील में, जिसमें वह पशु एवं झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे (प्रकाशित वाक्य २०:१०)।

जब आप शैतान की परीक्षाओं से घिरे हुए हैं या अशुद्ध आत्माओं के कारण खतरे में हैं तो आप उनका मुकाबला कर सकते हैं। याकूब ४:७ कहता है "शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।" शैतान से मुकाबला करने का एक तरीका यह है कि हम जोर से बोलें। आप कुछ इस तरह कह सकते हैं : "मैं शैतान का मुकाबला करता हूं। उस का मुझ पर कोई अधिकार नहीं क्योंकि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। मैं यीशु के लोहू से ढका एवं सुरक्षित हूं जो शैतान एवं उसके सारे दुष्ट दूतों पर जयवन्त हुआ है।

हमारे भाई मेम्ने के लोहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुए।
(प्रकाशित वाक्य १२:११)।

जैसा कि हम दूसरे भाग में अध्ययन करेंगे कि परमेश्वर आपकी सेवा हेतु स्वर्गदूत भेजता है। यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं तो आपको घबराने की आवश्यकता नहीं।

• • •

जो आपको करना है

१. क्योंकि परमेश्वर ने जो ..... हमें दिया है
उससे हम .....' नहीं किन्तु .....
..... हमें .....,.....
और ..... से भर देता है
(दूसरा तीमुथियुस १:७)।

२. शैतान और अशुद्ध आत्माओं के विषय में दिये गये प्रत्येक सही कथन के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दें।

अ. शैतान एक गर्जने वाले सिंह के समान है जो मसीही विश्वासियों को नुकसान पहुंचाना चाहता है।

ब. अशुद्ध आत्माएं ऐसे लोगों की दृष्टि में कल्पना मात्र है जो अधिक नहीं जानते।

स. यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर बहाए गए लोहू द्वारा हम शैतान एवं अशुद्ध आत्माओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं।

ड. यदि एक विश्वासी शैतान का मुकाबला करे तो शैतान उसको नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

३. पढ़ो मत्ती २५:४१ शैतान और उसके दूतों के लिए क्या तैयार किया गया है?

.....

• • •

स्वर्गदूत

उद्देश्य २: स्वर्गदूत के तीन कार्यों की पहचान करना।

"स्वर्गदूत क्या है? वे ऐसी आत्माएं हैं जो परमेश्वर के द्वारा उद्धार पाने वालों की सहायता के लिए भेजी जाती है" (इब्रानियों १:१४)।

क्या आपने संरक्षक स्वर्ग दूतों के विषय में सुना है? वे वास्तविक हैं। बाइबल बताती है : "डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है" (भजन संहिता ३४:७)।

स्वर्गदूतों के कई कार्य हैं, जिन में पहला यह कि अपने सृजनहार, परमेश्वर की सेवा करना। स्वर्गदूत हर समय परमेश्वर की आराधना करते रहते हैं। नहेम्याह ९:६ बताता है "स्वर्ग की सारी शक्तियां उसके सामने झुक कर उसकी आराधना करती हैं।" वे अपने आप कुछ नहीं करते किन्तु वे मसीह के अधीन हैं। पहला पतरस ३:२२ हमें बताता है "वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गये।"

पुराने नियम (व्यवस्था) के देने में स्वर्गदूतों ने भाग लिया (गलतियों ३:१९) और बाद में यहूदिया की पहाड़ी पर गीत गाकर यीशु के जन्म का समाचार दिया (लूका २:१३-१४) हम सभों ने उनके गीत को उनके शब्दों में प्रत्येक बड़े दिन के अवसर पर गाते हुए सुना है।

जब यीशु इस पृथ्वी पर था तब उन्होंने उसकी सेवा टहल की। लूका ४:११ बताता है कि जंगल में उसकी परीक्षा लिए जाने के बाद स्वर्गदूतों ने उसकी सेवा टहल की। जब यीशु ने गतसमनी बाग में अपने प्राण पीड़ा के बीच प्रार्थना की तो स्वर्गदूतों ने आकर उसे हिम्मत दी।

बाइबल बताती है कि स्वर्गदूत हमारी भी सेवा-टहल करते हैं। यद्यपि हम उन्हें नहीं देख सकते किन्तु वे हमारी देखभाल करते हैं — प्रत्येक खतरे से हमें बचाकर रखते हैं। उनकी बचाव सहायता के कारण हम दुर्घटनाओं एवं समस्याओं के बारे में पहले से न जानते हुए भी बच जाते हैं।

तो भी हम जानते हैं कि उन्हें हमारी सहायता के लिए भेजा गया है, क्योंकि बाइबल ऐसा कहती है। कई उदाहरण भी दिये गए हैं जो हमें विश्वास करने के लिए उत्साहित करते हैं। जब दानिय्येल को सिंहों की माँद में डाला गया था, उसने राजा के आगे गवाही दी। "परमेश्वर ने सिंहों के मुंह बन्द करने के लिए स्वर्गदूतों को भेजा ताकि वह मुझे नुकसान न पहुंचाएं" (दानिय्येल ६:२२)।

पहला राजा १९:५ हमें बताता है कि एक स्वर्गदूत ने एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को भोजन लाकर दिया जब कि वह इतना थका हुआ था कि उसने सोचा कि वह मर जाएगा। और एक स्वर्गदूत ने पतरस को बन्दीगृह में से छुड़ाया जब वह सुसमाचार के कारण सताया जा रहा था (प्रेरितों के काम १२:७)

चाहे स्वर्गदूत दिखाई देते हों या नहीं किन्तु हम यह जानते हैं कि उन्हें हमारी सहायता के लिए भेजा जाता है। कितनी तसल्ली की बात है कि वे वह सब करने को तैयार हैं जिसे परमेश्वर कहता है।

जैसा कि हमने पहले ही सीखा है कि वे अपने आप से नहीं किन्तु दैवीय अधिकार से कार्य करते हैं। और केवल परमेश्वर की प्रशंसा करते रहते हैं। यूहन्ना जिसे प्रिय कहा गया है वह उस प्रेम में इतना लीन हो गया कि जब एक स्वर्गदूत के द्वारा उसे संदेश दिया गया तो उसने गिर कर उसे दंडवत किया किन्तु स्वर्गदूत ने उसे रोका "ऐसा मत कर।" उसने कहा, "मैं एक सहकर्मी एवं तुम्हारा और उन सब का भाई हूं जो यीशु की सच्चाई पर चलते हैं। परमेश्वर की आराधना कर" (प्रकाशित वाक्य १९:१०)।

आपको स्वर्गदूत की आराधना नहीं करनी चाहिए किन्तु आप उन्हें आनन्दित होने का अवसर दे सकते हैं। यदि आपने अपना जीवन यीशु को दे दिया है, तो तुमने पहले ही उन्हें आनन्दित कर दिया है। यीशु ने कहा, "मैं तुम से कहता हूं कि एक पापी के मन फिराने से परमेश्वर के दूत आनन्द मनाते है" (लूका १५:१०)। परमेश्वर के पुत्र के रूप में आप उनके द्वारा सहायता प्राप्त कर सकते हैं। "परमेश्वर अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें" (भजन संहिता ९१:११)।

जो आपको करना है

४. निम्नलिखित पदों को पढ़ें एवं प्रत्येक दी गई जगह में उस पद में दिए गए स्वर्गदूत के कार्य को लिखें।

अ. इब्रानियों १:६ .....

ब. उत्पत्ति २४:४० .....

स. भजन संहिता ९१:११ .....

५. इस वाक्य को सही-सही पूर्ण करने वाले कथन के चारों ओर वृत्त खींच दें।

स्वर्गदूत :

अ. वे हैं जिनकी आराधना की जानी चाहिए।

ब. परमेश्वर के अधिकार के बगैर कार्य कर सकते एवं बातें कर सकते हैं।

स. परमेश्वर के सेवक हैं तथा परमेश्वर के बच्चों की सहायता करते हैं।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. आत्मा, भय, उसकी आत्मा, सामर्थ, प्रेम, संयम

४. अ. परमेश्वर की आराधना करती है।

ब. तरक्की देती हैं।

स. सुरक्षा प्रदान करती हैं।

२. अ. शैतान गर्जने वाले सिंह के समान है जो मसीही विश्वासियों को नुकसान पहुंचाना चाहता है।

स. यीशु के क्रूस पर बहाए गये लोहू के द्वारा हम शैतान एवं अशुद्ध आत्माओं के ऊपर जय प्राप्त कर सकते हैं।

ड. यदि एक विश्वासी शैतान का मुकाबला करे तो वह उसकी कुछ भी हानि नहीं कर सकता।

५. स. परमेश्वर के सेवक हैं तथा परमेश्वर के बच्चों की सहायता करते हैं।

३. अनन्त काल की आग

आपकी टिप्पणी के लिए

भविष्य

हर कोई भविष्य में दिलचस्पी रखता है। किताबें चाहे अच्छी हों या बुरी, इस विषय में लिखी गई हैं कि भविष्य में क्या होने जा रहा है जैसा कि लोग सोचते हैं। वैज्ञानिकों एवं नेताओं से उनके विचार पूछे जाते हैं कि उनके देश का भविष्य क्या है।

लोग हमेशा अपना भविष्य जानने के उत्सुक रहते हैं एवं चाय की पत्तियों, जन्म कुण्डलियों, स्फाटक की गोलियों एवं और दूसरे प्रकार के "भविष्य को बताने वाले" साधनों के द्वारा अपना विचार-विमर्श करते हैं। एक बार एक महिला दौड़ती हुई मेरे पास आकर पूछने लगी कि क्या मैं उसके हाथ की रेखाओं को पढ़ कर भविष्य बता सकता हूं। उसे यह आश्चर्य हुआ जब मैंने उसे यह बताया कि मेरे पास एक छोटी सी किताब है जिसने मेरा भविष्य बता दिया — और मैंने उस से कहा कि इसमें उसका भविष्य भी है। तब मैंने उसे सुसमाचार की एक प्रति दे दी।

बाइबल भविष्य में घटने वाली सही-सही घटनाओं को जानने का एक साधन है। अपने वचन के द्वारा परमेश्वर वे सभी बातें बताता है जिन्हें हमें जानने की आवश्यकता है। चाय की पत्तियों एवं तरोत कार्ड को पढ़ने की आवश्यकता नहीं। वास्तव में ये एक प्रकार के "जादू" हैं जिन्हें पढ़ने को परमेश्वर ने मना किया है।

यदि आपको अपने भविष्य एवं यीशु के आगमन के समय क्या कुछ होने वाला है इसके प्रति आश्चर्य हो, तो आपको इस पाठ को पढ़ने में

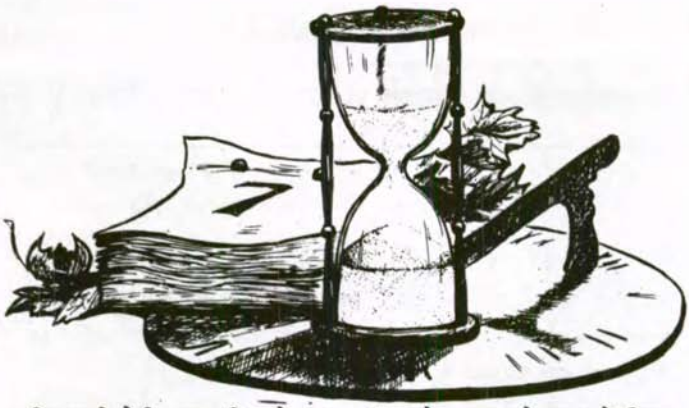

दिलचस्पी होगी। हम भविष्य के न्याय एवं प्रभु के आगमन के समय के विषय में अध्ययन करेंगे यहां तक स्वर्गदूत भी जिनका अध्ययन हमने पिछले अध्याय में किया है, वे भी प्रभु के पृथ्वी पर आगमन का समय मालूम करने में दिलचस्पी रखते हैं। आइए हम बाइबल में देखें कि यह हमारे भविष्य के विषय में क्या कहती है।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

विश्वासियों का रैपचर बादलों में उठाया जाना

यीशु का पृथ्वी पर का राज्य

अविश्वासियों का न्याय

इस पाठ से आपको सहायता मिलेगी कि आप...

- व्याख्या कर सकें कि बादलों पर उठा लिया जाना (रैपचर) कब एवं किसके लिए होगा।
- एक हजार वर्ष का राज्य एवं महान श्वेत सिंहासन न्याय का वर्णन कर सकें।
- मसीह के साथ अनन्तकाल तक की संगति रखने की आशा से उसकी प्रतीक्षा कर सकें।

विश्वासियों का बादलों में उठाया जाना [रैपचर]

उद्देश्य १. रैपचर अर्थात् विश्वासियों का बादलों में उठाये जाने के समय होने वाली घटनाओं को जानना एवं उसका वर्णन करना।

पाठ पांच में हमने रैपचर शब्द के अर्थ का अध्ययन किया। यह प्रभु के दुबारा आगमन एवं बादलों में अपनी कलीसिया के साथ मुलाकात के विषय में बताता है। कोई नहीं बता सकता कि रैपचर कब होगा क्योंकि यह केवल परमेश्वर पिता को ही मालूम है।

"उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, न पुत्र परन्तु केवल पिता" (मत्ती २४:३६)।

किन्तु कुछ चिन्ह हैं जो बताते हैं कि रैपचर का समय निकट है। यीशु ने कहा कि उसके आगमन के कुछ ही समय पूर्व सांसारिक क्रिया-कलाप, दुष्टता एवं अत्याचार बढ़ जाएगा। झूठे मसीह एवं झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे। भूकम्प, अकाल एवं महामारी फैल जाएगी। लड़ाइयां एवं लड़ाइयों की चर्चाएं होंगी। ये सारे चिन्ह जो मत्ती २४ और लूका २१ में दिए गए हैं, आजकल पूरे हो रहे हैं।

तथापि हर चीज नकारात्मक नहीं होगी। भयानक समय के बावजूद बहुत से लोग प्रभु की खोज करके उसे पा लेंगे। योएल २:२८-२९ इसके विषय में हमें बताता है : उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंडेलूगा; तुम्हारे बेटे बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा।

मसीही लोग रैपचर की प्रतीक्षा बड़े आनन्द के साथ करते हैं। वे जो मर चुके हैं उनका पुनरुत्थान होगा एवं जो जीवित हैं वे बदल जाएंगे। सभी एक साथ उठा लिए जाएंगे ताकि बादलों में प्रभु से मिलें।

इस भेद की सच्चाई पर ध्यान दें : कि हम सब तो नहीं सोएंगे परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
(१ कुरिन्थियों १५:५१-५३)

रैपचर के बाद मसीहियों का न्याय होगा एवं मसीह के प्रति उनके विश्वास योग्यता के अनुसार उन्हें प्रतिफल मिलेगा। तब वह मेम्ने के विवाह के भोज़ में शामिल होंगे जब कि मसीह परमेश्वर का मेम्ना कलीसिया का अपनी दुल्हन की तरह स्वागत करेगा।

क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए कि हर एक व्यक्ति अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए (२ कुरिन्थियों ५:१०)।

हमें मालूम है कि हमारे पाप यीशु के लोहू के द्वारा ढांप दिए गये और हमें इसका लेखा देने की जरूरत नहीं है। किन्तु हमें अपने विश्वासयोग्यता के आधार पर प्रतिफल मिलेगा। जब कोई परीक्षा हमारे सामने हो तो हमें यह स्मरण करना चाहिए कि प्रभु हर चीज देखता है।

आओ हम आनन्दित और मगन हो और उसकी स्तुति करें क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार कर लिया है। और उसको शुद्ध एवं चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया (क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के कार्य हैं)। तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा। "यह लिख : धन्य हैं वे जो मेम्ने के विवाह भोज में बुलाए गए हैं" और तब स्वर्गदूत ने आगे कहा, "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन है" (प्रकाशित वाक्य १९:७-९)।

जो आपको करना है

१. १ थिस्सलुनीकियों ४:१६-१७ के अनुसार निम्नलिखित कौन-कौन से कथन सत्य हैं?

अ. जब तुरही फूँकी जाएगी तो सभी मृतक जी उठेंगे।

ब. इस समय प्रभु पापियों का न्याय करने के लिए पृथ्वी पर आयेगा।

स. जो विश्वास करते हुए मर चुके हैं वे जी उठेंगे।

ड. सारे विश्वासी, मृतक एवं जीवित उठा लिए जाएंगे ताकि प्रभु के साथ सर्वदा रहें।

२. आप ऐसे कौन से चिन्ह संसार में देखते हैं जो आपको प्रभु के जल्द आगमन पर विश्वास करने को उत्साहित करते हैं?

.....

.....

यीशु का पृथ्वी पर का राज्य

उद्देश्य २. उन घटनाओं को समझना जो इस मसीही शब्द "मिलेनियम" की परिभाषा बताती है।

प्रभु अपने लोगों के साथ वापस आएगा ताकि इस पृथ्वी पर एक हजार वर्ष तक राज्य करे। यह एक हजार वर्ष का समय मिलेनियम कहलाता है। (यह लेटिन शब्द मिल्ले से लिया गया है जिसका अर्थ एक हजार है।)

बाइबल इस समय को पृथ्वी पर बड़े आनन्द एवं शांति का समय बताती है। यहूदा १४ बताता है "प्रभु अपने लाखों पवित्र सन्तों के साथ आएगा।"

धन्य और पवित्र वे हैं जो इस पहले पुनरुत्थान के भागी हैं ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उनके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे। (प्रकाशित वाक्य २०:६)।

तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा और बछड़ा और जवान सिंह पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे और एक छोटा लड़का उनकी अगुआई करेगा (यशायाह ११:६)।

• • •

जो आपको करना है

३. भली भांति करने वाले प्रत्येक कथन के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दें बाइबल में मिलेनियम :

अ. प्रभु के पृथ्वी पर एक हजार वर्ष तक के राज्य को बताती है।

ब. शांति और आनन्द के समय को बताती है।

स. सारे विश्वासियों का मसीह के साथ इस पृथ्वी पर राज्य करने के विषय में बताती है।

अविश्वासियों का न्याय

उद्देश्य ३. महान श्वेत-सिंहासन न्याय को परिभाषित करना।

यीशु के एक हजार वर्ष तक राज्य कर लेने के बाद दुष्ट मृतक जी उठेंगे ताकि परमेश्वर के सामने उनका न्याय हो। शैतान और उसके दूत और सभी दुष्ट लोग नरक में ढकेल दिए जाएंगे। इस न्याय को महान श्वेत-सिंहासन न्याय कहा जाता है। प्रकाशित वाक्य २० बताता है कि इसका यह नाम क्यों दिया गया है।

फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए और उनके लिए जगह न मिली। फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा और पुस्तकें खोली गई और फिर एक और पुस्तक खोली गई अर्थात् जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओ को जो उनमें थे दे दिया और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया
(प्रकाशित वाक्य २०:११-१५)।

वे जिनका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ है वे मसीह में विश्वासी हैं। उन्हें कुछ भी घबराने की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह मसीह के साथ सर्वदा रहेंगे। प्रकाशित वाक्य २१:२-३ हमें बताता है कि यूहन्ना ने दर्शन में क्या देखा।

और मैंने पवित्र नगर नए यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा। और वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। फिर मैंने सिंहासन में से किसी की ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना कि देख परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा और वे उसके लोग होंगे और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा।

महान श्वेत-सिंहासन न्याय के बाद परमेश्वर के बच्चे उसके साथ होंगे। वह उनके लिए नए आकाश एवं नई पृथ्वी में रहने की व्यवस्था करेगा।

और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और इसके बाद मृत्यु न रहेगी। और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी। पहली बातें जाती रहीं (प्रकाशित वाक्य २१:४)।

जो आपको करना है

४. प्रकाशित वाक्य २०:२२ को पढ़ें एवं खाली स्थानों को भरें।

वह जो इन बातों की ..... देता है, कहता है, "..... मैं शीघ्र .....।
हूं आमीन। हे प्रभु यीशु .....।

५. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें। परमेश्वर के साथ अनन्तकाल तक रहना।

अ. पृथ्वी पर हमारे द्वारा किए गये पापों को याद कर के पश्चात्ताप करने का समय होगा।

ब. आनन्दपूर्वक परमेश्वर के साथ सर्वदा रहने का समय होगा।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. स) सही
ड) सही

४. गवाही, सचमुच, आने वाला, आ

२. आपका उत्तर। पवित्र आत्मा का उंडेला जाना, बहुत से लोगों का प्रभु की ओर फिरना (आना), पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार का प्रचार किया जाना, हो सकता है।

५. ब) आनन्द पूर्वक परमेश्वर के साथ सर्वदा रहना।

३. आपको प्रत्येक में वृत्त खींचना चाहिए था क्योंकि सभी सही हैं।

आपकी टिप्पणी के लिए

परमेश्वर की व्यवस्था

मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।

तू अपने लिए कोई मूर्ति या प्रतिमा न बनाना।

तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।

विश्राम के दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।

अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।

खून न करना।

व्याभिचार न करना।

चोरी न करना।

किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

किसी के घर की सम्पत्ति का लालच न करना।

पाठ १० में हमने अध्ययन किया कि हम भविष्य में क्या करेंगे। इस पाठ में हम अध्ययन करेंगे कि हमें अभी, वर्तमान में क्या कुछ करना चाहिए।

परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को पत्थर की दो तख्तियों में लिख कर इस्राएल के महान अगुए मूसा को उसके लोगों के लिए दिया। यद्यपि ये प्राचीन काल के नियम हैं किन्तु आज भी हम उनका पालन कर सकते हैं।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

व्यवस्था का अर्थ एवं तात्पर्य

व्यवस्था का पालन

इस पाठ से आपको सहायता मिलेगी कि आप...

- दस आज्ञाओं में से प्रत्येक का अर्थ समझ सकें।
- महसूस कर सकें कि परमेश्वर ने नियम क्यों दिए।
- उसके नियमों को पालन करने की अपनी जिम्मेवारी स्वीकार कर सकें।

व्यवस्था का अर्थ एवं तात्पर्य

उद्देश्य १. दस आज्ञाओं की उनके संदर्भ के साथ सूची तैयार करना।

परमेश्वर ने मूसा से कहा, पहली तख्तियों के समान पत्थर की दो और तख्तियां गढ़ ले। तब जो वचन उन पहली तख्तियों पर लिखे थे जिन्हें तू ने तोड़ डाला वे ही वचन मैं इन तख्तियों पर भी लिखूंगा" (निर्गमन ३४:१)।

निर्गमन २० में परमेश्वर के द्वारा दी गयी दस आज्ञाएं हमारे लिए लिखी गई हैं। उसने ये नियम अपने बच्चों को पालन करने के लिए नियम और मार्गदर्शक के रूप में दिए हैं। आइए हम प्रत्येक नियम का एक-एक करके अध्ययन करें।

मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर कर के न मानना

जैसा कि हमने पाठ २ में अध्ययन किया, परमेश्वर को हमें प्रथम स्थान देना चाहिए। यह आज्ञा मत्ती ४:१० में दुहराई गई है "तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर"।

तू अपने लिए कोई भी मूर्ति या प्रतिमा न बनाना

हमारी निष्ठा परमेश्वर के प्रति है — हमारी निष्ठा भिन्न-भिन्न नहीं हो सकती। यीशु ने कहा कोई व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा (लूका १६:१३)। हमें प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बनना एवं उससे पूरे हृदय से प्रेम करना चाहिए।

अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना

लोग परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेकर श्राप देने के द्वारा तीसरी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। हम हमेशा इस नाम को जो सब नामों से श्रेष्ठ है प्रेम, आदर एवं सम्मान का स्थान देंगे।

कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो ताकि उससे सुनने वालों पर अनुग्रह हो (इफिसियों ४:२९)।

"कभी शपथ न खाना, न तो स्वर्ग की क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। न धरती की क्योंकि वह परमेश्वर की चौकी है; न यरूशलेम की क्योंकि वह महाराजा का नगर है" (मत्ती ५:३४-३५)।

विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना

केवल यही एक आज्ञा है जिसे नए नियम में दुहराया नहीं गया है। लगभग सभी मसीही, यहूदी सब्त को नहीं मानते। वह रविवार के दिन को मानते हैं क्योंकि सप्ताह के इस प्रथम दिन में यीशु मुर्दों में से जी उठा। प्रत्येक प्रभु का दिन हमें उसके पुनरुत्थान का स्मरण दिलाता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम एक दिन नियुक्त करके विश्राम एवं आराधना करें, किन्तु कौन सा दिन हम चुनें यह दूसरी बात है। कुलुस्सियों २:१६ कहता है "खाने पीने या पर्ब्ब या नए चांद या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करें"।

कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है और कोई सब दिन एक समान जानता है। हर एक अपने ही मन में निश्चय कर लें (रोमियों १४:५)।

अपने पिता और अपनी माता का आदर करना

निर्गमन २०:१२ आज्ञाकारी बच्चों से एक विशेष प्रतिज्ञा करता है, "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए।" नया नियम इसे और सुदृढ़ करता है।

"हे बालको, प्रभु में अपने मता-पिता के आज्ञाकारी बनो क्योंकि यह उचित है" (इफिसियों ६:१)।

खून न करना

पहला खूनी कैन था जिसने अपने भाई हाबिल का खून किया था। शायद कैन ने सोचा कि जो कुछ हुआ उसे किसी ने नहीं देखा, किन्तु परमेश्वर ने देखा। उसने कैन से कहा "तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लोहू भूमि से मेरी ओर चिल्ला कर मेरी दोहाई दे रहा है" (उत्पत्ती ४:१०)।

खून करना एक पाप है जिसकी लम्बी प्रतिक्रिया होती है — इससे खून करने वाले एवं खून किए गए परिवार को चोट पहुंचती है। यह परमेश्वर के विरुद्ध भी एक बड़ा अपराध है क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता में बनाया है।

व्याभिचार न करना

अपने विवाहित साथी को छोड़ दूसरे के साथ लैंगिक सम्बन्ध रख कर विवाह की प्रतिज्ञा को तोड़ने का पाप व्याभिचार कहलाता है। इब्रानियों १३:४ कहता है, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए और बिछौना निष्कलंक रहे क्योंकि परमेश्वर व्याभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।"

चोरी न करना

दूसरों की चीजों को लेना गलत है भले ही वह ऐसे व्यक्ति की क्यों न हो जो धनी है एवं उसे इसकी आवश्यकता नहीं।

चोरी करने वाला फिर चोरी न करे वरन भले कार्य करने में अपने हाथों से परिश्रम करे इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो उसे देने को उसके पास कुछ हो (इफिसियों ४:२८)।

किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना

नवीं आज्ञा के अन्तर्गत सभी झूठ आते हैं। चाहे वे कहने के द्वारा हों या कार्य के द्वारा। परमेश्वर के लिए अच्छे और बुरे "झूठ" में कोई अन्तर

नहीं है। सभी झूठा दोष लगाने वाले गलत है। भजन संहिता १०१:७ कहता है "जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झूठ बोलता है वह सामने बना न रहेगा।"

पर डरपोकों और अविश्वासियों और घिनौनों और हत्यारों और व्याभिचारियों और टोन्हों और मूर्ति पूजकों और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गंधक से जलती रहती है, यह दूसरी मृत्यु है। (प्रकाशित वाक्य २१:८)।

किसी के घर की सम्पत्ति का लालच न करना

दूसरे की चीजों पर गलत अभिलाषा करना लालच कहलाता है। लूका १२:१५ उसे यूं कहता है "चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।"

परमेश्वर ने ये आज्ञाएं हमें बुराई से हटकर सच्चाई में चलना सिखाने एवं किसी बात पर निर्णय लेने में हमारा मार्ग-दर्शन करने के लिए दी है।

तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई और वे अब्राहम के वश आने तक रहे जिसको प्रतिज्ञा दी गई थी इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुंचने को हमारा शिक्षक हुई कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें (गलतियों ३:१९, २४)।

जो आपको करना है

१. निर्गमन २० पढ़ें। तब प्रत्येक आज्ञा को उसके संदर्भ के साथ संक्षिप्त में लिखें।

अ. एक .....

.....

ब. दो .....
.....

स. तीन .....
.....

ड. चार .....
.....

इ. पांच .....
.....

फ. छ .....
.....

ज. सात .....
.....

ह. आठ .....
.....

क. नौ.....
.....

ख. दस.....
.....

२. इब्रानियों १३:५ को पढ़ें। इस पद को लिखते समय कौन सी आज्ञा या आज्ञाएं पौलुस के दिमाग में रही होंगी।

.....
.....

व्यवस्था का पालन

उद्देश्य २. परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति एक विश्वासी की जिम्मेवारी को समझना।

प्रभु चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन न सिर्फ कार्यों के द्वारा किन्तु अपने आचार व्यवहार के द्वारा भी करें — प्रेम का व्यवहार, एक दूसरे को अपने से ऊँचा समझने की प्रार्थना।

आज्ञाएं, "व्याभिचार न करना, खून न करना, चोरी न करना; दूसरों की चीजों का लालच न करना" ये सभी या और भी दूसरी आज्ञाओं का सारांश हम इस एक आज्ञा में कर सकते हैं "अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख" (रोमियों १३:९)।

"परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं" (१ यूहन्ना ५:३)।

हम यह पहले ही जान चुके हैं कि व्यवस्था के पालन मात्र से ही हमारा उद्धार नहीं होता। हमारा उद्धार यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा अनुग्रह से होता है। इफिसियों २:८-९ इस बात की पुष्टि करता है —

> "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करें।"

तो भी हम प्रभु की आज्ञा मानते हैं क्योंकि उसके बच्चों के रूप में हम उसको सर्वाधिक प्रसन्न रखना चाहते हैं। यदि उसकी आज्ञाओं में से किसी का भी उल्लंघन करें तो तुरन्त उससे क्षमा मांग कर अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना चाहिए।

हे बालको, मैं यह बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है और केवल हमारे ही नहीं वरन सारे जगत के पापों का भी (१ यूहन्ना २:१-२)।

क्या आपने कभी अपने को कमजोर महसूस किया और यहां तक कि आपने आज्ञा का उल्लंघन किया? प्रभु यीशु आपको आपकी आवश्यकता के अनुसार सहायता एवं सामर्थ प्रदान करेगा। क्या आप अभी सिर झुका कर उससे सहायता की मांग करेंगे?

स्वर्गवासी पिता, मुझे क्षमा कर क्यों कि मैं तुझ से जैसा प्रेम रखना चाहिए वैसा करने में असमर्थ हूं। मेरी सहायता कर कि मैं पाप एवं आज्ञा उल्लंघन न करूं जब कि अब मैं इन्हें अच्छी तरह समझता हूं।

प्रभु मैं चाहता हूं कि मैं तुझ से प्रेम एवं तेरे नाम का समर्थन अपने परिवार को प्रेम करने एवं उनका समर्थन करने से भी बढ़कर कर सकूं। तुझ से प्रार्थना है कि तू मुझे अपनी सामर्थ दे क्योंकि मैं यीशु के नाम से मांगता हूं जिसने मेरे बदले अपने प्राण दे दिए। आमीन।

जो आपको करना है

३. १ यूहन्ना ३:१५-१८ पढ़ें। इन पदों के अनुसार निम्नलिखित कौन-कौन से कथन सही है?

अ. आचार-व्यवहार उतने ही महत्वपूर्ण है जितने कार्य।

ब. जो अपने भाई से बैर रखता है वह खूनी है।

स. अपने परमेश्वर से एवं भाई से प्रेम रखना भी एक आज्ञा है।

४. रोमियों ८:३-४ पढ़ें। नीचे लिखे कथनों को सही-सही पूरा करें।

अ. परमेश्वर ने पाप पर दण्ड की आज्ञा .... के द्वारा दी।

ब. व्यवस्था की विधि हममें भली भांति पूरी होती है क्योंकि हम .... के अनुसार चलते हैं।

५. यूहन्ना १४:२१ पढ़ें। इस पद के अनुसार

अ. जो परमेश्वर से प्रेम रखता है वह .... को मानेगा।

ब. परमेश्वर इसके बदले स्वयं प्रतिज्ञा करता है कि वह

.....

.....

अपने उत्तरों की जांच करें

१. निम्नलिखित पदों से अपने उत्तरों की जांच करें :

अ. निर्गमन २०:३

ब. २०:४-६

स. २०:७

ड. २०:८-११

इ. २०:१२

फ. २०:१३

ज. २०:१४

ह. २०:१५

क. २०:१६

ख. २०:१७

४. अ. अपने पुत्र को भेजने

ब. आत्मा के अनुसार, पापमय शरीर के अनुसार नहीं।

२. हो सकता है कि पौलुस सोच रहा था "मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना"। क्योंकि कुछ लोग अपने पैसों से परमेश्वर से बढ़कर प्रेम रखते हैं। या वह सोच रहा था "चोरी न करना" क्योंकि वह कहता है कि परमेश्वर तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा अतः चोरी करने की आवश्यकता नहीं।

या वह यह भी सोच रहा था "किसी की सम्पत्ति का लालच न करना" क्योंकि वह कहता है कि "जो कुछ तुम्हारे पास है उसी पर संतोष करो"।

५. अ. उसकी आज्ञाओं को स्वीकार करके उनका पालन करेगा।

ब. प्रेम करेगा एवं अपने आप को उन पर प्रगट करेगा।

३. सभी कथन सही है।

आपकी टिप्पणी के लिए

अध्याय 12 परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध

हम सीख चुके हैं कि मसीही विश्वासी के रूप में हमारी प्रथम जिम्मेवारी परमेश्वर से प्रेम रखना है। जैसा कि हमने पाठ ११ में अध्ययन किया है कि हम उसकी व्यवस्था का पालन करते हैं क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं। अतः परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध प्रेम का है।

१ कुरिन्थियों १३ में प्रेम का एक सुन्दर वर्णन दिया गया है। आयत ४-८ बताती है कि प्रेम धीरजवन्त और दयालु है। इसमें डाह, अहंकार, अनरीति, स्वार्थ और झुंझलाहट नहीं होता। यह गलतियों का लेखा नहीं रखता और न ही बुराई से खुश रहता है किन्तु सच्चाई से ही खुश रहता है। प्रेम कभी त्यागता नहीं किन्तु अनन्त है। यह हमें अत्यधिक काल्पनिक प्रतीत हो सकता है, किन्तु इस प्रकार का ही प्रेम सभी मसीही विश्वासियों में परमेश्वर एवं भाई बहिनों के लिए होना चाहिए। परमेश्वर हमें इसी प्रकार का असीम प्रेम देता है।

यह कोई अकस्मात नहीं कि अध्याय १३ के पहले एवं बाद के अध्याय विश्वासियों के लिए परमेश्वर की ओर से वरदान के विषय में लिखे गए हैं। प्रेम के विषय के अध्याय को वरदानों के अध्यायों के साथ जोड़ा गया है क्योंकि प्रेम भी एक वरदान है। प्रेम रखना और दान देना साथ-साथ चलते

है क्योंकि जब हम दूसरों से प्रेम रखते हैं तो हम उन्हें वह चीज देना भी चाहते हैं जो उन्हें अत्यधिक प्रसन्न कर सकें।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

परमेश्वर का वरदान हमारे लिए
हमारा वरदान परमेश्वर के लिए

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- कम से कम उन तीन वरदानों का वर्णन कर सकें जो परमेश्वर से उसके बच्चों को मिलते हैं।
- परमेश्वर को अपने प्रेम का वरदान देने के लिए, जिसके योग्य वह है, वचनबद्ध रह सकें।

परमेश्वर का वरदान हमारे लिए

उद्देश्य १. परमेश्वर के कई वरदान जो उसके बच्चों के लिए हैं उनकी पहचान करना।

जब हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो प्रथम वरदान जो वह हमें देता है वह है उद्धार।

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और वह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का वरदान है और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे (इफिसियों २:८-९)।

यदि हम विश्वासी हैं तो परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है और हम उसके बच्चे हैं। मत्ती ५:१६ परमेश्वर को यह बहुमूल्य नाम देता है "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें।"

यह एक अद्भुत बात है कि हम परमेश्वर से वैसे ही बात कर सकते हैं जैसे एक प्रेमी पिता के साथ। यीशु ने हमें सिखाया कि हम उससे इस प्रकार से बातचीत कर सकते हैं जब उसने कहा कि "हे हमारे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए" (मत्ती ६:९)।

यद्यपि परमेश्वर सृजनहार हैं किन्तु वह केवल उनका पिता है जो उसके परिवार में जन्म लेते हैं।

इसी से परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं जो कोई धर्म के काम नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता (१ यूहन्ना ३:१०)।

उसके परिवार का भाग बनने के लिए हमें उसके पुत्र यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करना जरूरी है। तब जीवन

प्रारम्भ होता है। "कुछ लोगों को....जिन्होंने उस पर विश्वास किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया" (यूहन्ना १:१२)।

प्रत्येक प्रेमी पिता अपने बच्चों की जरूरतों को पूरी करने में आनन्दित रहता है। "और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरा करेगा" (फिलिप्पियों ४:१९)।

परमेश्वर हमारी चौकसी अपने बच्चों के समान करता है। वह दिन और रात चौकसी करता है। "वह तेरे पांव को टलने नहीं देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊंघेगा (भजन संहिता १२१:३)।

यहोवा की आंखें धर्मियों पर बनी रहती हैं और उसके कान भी उनके दोहाई की ओर लगे रहते हैं" (भजन संहिता ३४:१५)। भजन संहिता में बहुत से ऐसे पद हैं जो बताते हैं कि परमेश्वर हमारा ध्यान रखता है।

जब हमारा पिता अपने वचन में हमसे कहता है कि वह कुछ चीजें हमारे लिए करेगा, हम उन्हें प्रतिज्ञाएं कहते हैं। प्रतिज्ञाएं परमेश्वर के वरदान हैं। प्रार्थना एवं उसके वचन के विश्वास के द्वारा परमेश्वर की आशीषों एवं प्रतिज्ञाओं को प्राप्त कर सकते हैं। "और जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो" ये यीशु के वचन है जो यूहन्ना १४:१३ में दिए गए हैं।

मसीह लोग भी परमेश्वर की इन आशीषों को दूसरों की सहायता करने के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। भजन संहिता ४१:१ कहता है, "क्या ही धन्य है वह जो कंगाल की सुधि रखता है; विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा।"

हम परमेश्वर से बहुत से वरदान प्राप्त कर सकते हैं, यदि हम उस पर विश्वास करें और उससे मांगे। इस तरह से प्रतीत करना विश्वास कहलाता है। हमारा विश्वास परमेश्वर को प्रसन्न करता और न केवल उद्धार और दूसरे वरदान जिन्हें दर्शाया गया है, हमें दिलाता है, वरन चंगाई और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी हमें दिलाता है।

"और विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है" (इब्रानियों ११:६)।

विश्वास से हमें चंगाई प्राप्त होती है यह हमें याकूब ५:१५ में मिलता है, "और विश्वास को प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु इसको उठाकर खड़ा करेगा।"

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी विश्वास से प्राप्त किया जाता है।

यह इसलिए हुआ कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्य जातियों तक पहुंचे और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है। (गलतियों ३:१४)।

तो भी सर्वोत्तम वरदान रोमियों ६:२३ में हमें मिलता है "पाप की मजदूरी तो मृत्यु हैं परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है।"

"क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है" (याकूब १:१७)।

जो आपको करना है

१. भजन संहिता ९१ पढ़ें। इन प्रतिज्ञाओं को जो परमेश्वर के पास से एक वरदान है इनका किन शब्दों के द्वारा वर्णन कर सकते हैं?

.....

.....

२. बाईं ओर दिए गए पदों को पढ़ें। प्रत्येक के सामने दाईं ओर दी गयी प्रतिज्ञा की संख्या जो उस पद में दी गई है लिखें।

...अ.	रोमियों ५:१७	(१)	बुद्धि, ज्ञान और खुशी
...ब.	सभोपदेशक २:२६	(२)	योग्यताएं
...स.	यहेजकेल ११:१९	(३)	भरपूर अनुग्रह
...ड.	मत्ती ११:२८	(४)	नया हृदय और नया विवेक
...इ.	कुरिन्थियों १२:६	(५)	विश्राम

३. नीचे दी गई पंक्तियों में कम से कम इन तीन वरदानों को लिखें जिन्हें आपने परमेश्वर से प्राप्त किया है जब से आपने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया है।

.....

.....

.....

हमारा वरदान परमेश्वर के लिए

उद्देश्य २. कम से कम उन छह वरदानों का जिसे विश्वासी परमेश्वर को दे सकते हैं उनकी पहचान करना।

क्या यह अनोखी बात है कि परमेश्वर को कुछ दें जिसके पास सब कुछ है? अपने वचन में परमेश्वर हमें स्वयं बताता है कि हम उसे क्या दे सकते हैं।

हम परमेश्वर को उसकी आराधना का दान दे सकते हैं। भजन संहिता ९५:६ कहता है, "आओ हम झुककर दण्डवत् करें और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।" आराधना का दान प्रार्थना के द्वारा, परमेश्वर की आशीषों के लिए उसको धन्यवाद देने के द्वारा, उसकी स्तुति करने एवं उसके कार्य के लिए अपने को समर्पित करने के द्वारा दे सकते हैं। कुलुस्सियों ३:१६ हमें बताता है "धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान गाओ।"

यदि हम पूरी रीति से अपने आप को दे देते हैं तो यह भी आराधना है।

इसलिए हे भाइयो, मैं परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर बिनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनों परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों १२:१-२)।

अपने पैसों का दान करना भी एक तरह से आराधना का दान है। और जब हम देते हैं तो पाते भी हैं। परमेश्वर मलाकी ३:१० में यह प्रतिज्ञा करता है :

> सारे दशमांस भंडार में ले आओ ..... ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।

दशमांस आपकी आय का दस प्रतिशत है।

मसीही विश्वासी के रूप में जो कुछ भी हम करते हैं वह प्रभु की महिमा के लिए हो सकता है। मत्ती २५ में यीशु ने उन लोगों के प्रतिफल के विषय में एक दिलचस्प विवरण दिया है जिन्होंने उसे भोजन या पीने को पानी दिया था बन्दीगृह में उससे मिलने गये। जब उन्होंने उससे पूछा कि आखिर उन्होंने ऐसा कब किया था तो उसने उत्तर दिया "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया वह मेरे ही साथ किया।" दूसरे शब्दों में हमारे दान हमारे जीवन-चर्या बन जाते हैं।

निरन्तर आराधना करने का अर्थ यह नहीं कि निरन्तर घुटनों में रह कर प्रार्थना करते रहें। यदि हम प्रतिदिन अपने आचरण के द्वारा प्रभु को खुश रखें — तो वह इसे अटूट आराधना के रूप में ग्रहण करेगा। हमें इसमें कुछ भी कठिनाई नहीं कि "सदा सब बातों के लिए हम अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहें" (इफिसियों ५:२०) क्यों कि वह इसके योग्य है।

जो आपको करना है

४. निम्नलिखित पदों में कौन से वरदान दिए गए हैं जिन्हें हम परमेश्वर को दे सकते हैं?

अ. यशायाह ३८:२०

.....

ब. हबक्कूक २:२०

.....

स. भजन संहिता १०३:१

.....

ड. यूहन्ना ४:२३

.....

इ. १ तिमुथियुस २:८

.....

फ. इब्रानियों १०:२५

.....

५. भजन संहिता ७६:११ कहता है कि आपको परमेश्वर को उन सभी वरदानों को देना है .....

६. निम्न में से किन्हें हम आराधना या परमेश्वर के लिए वरदान के रूप में ले सकते हैं?

अ. कपड़ों की धुलाई करते समय कोरस गाना।

ब. जब आपका स्वामी उचित व्यवहार न करें तो भी नाराज न होना।

स. रविवार को चर्च जाना।

ड. भोजन करने से पहले परमेश्वर को धन्यवाद देना।

इ. परमेश्वर की भलाई, को शांत रहकर सोचना।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. आपका उत्तर! आप इन्हें इन शब्दों में अन्त कर सकते हैं। परमेश्वर का संरक्षण या परमेश्वर की सुरक्षा।

४.
- अ. साज बजाएं और भजन गाएं
- ब. परमेश्वर के सामने शांत रहें
- स. प्रभु की स्तुति करें
- ड. उसकी आराधना करें
- इ. हाथों को उठाकर प्रार्थना करें
- फ. एक दूसरे से मुलाकात करना एवं एक दूसरे को उत्साहित करना।

२.
- अ. २) भरपूर अनुग्रह
- ब. १) बुद्धि, ज्ञान और खुशी
- स. ४) नया हृदय और नया विवेक
- ड. ५) विश्राम
- इ. २) योग्यताएं

५. उससे प्रतिज्ञा की हो

३. आपका उत्तर! आपने चंगाई प्राप्त की होगी, आपको नौकरी मिली होगी, किसी डर से छुटकारा मिला होगा या नई आशा मिली होगी — उसके वरदान कई हैं।

६. सभी कथन बताते हैं कि हम कैसे उसकी आराधना कर सकते हैं।

अध्याय 13

दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध

सोमवार की सुबह बाइबल स्कूल की प्रार्थना सभा में गवाही का समय दिया गया था। ओलगा नाम की एक लड़की ने खड़े होकर गवाही दी।

एक दिन पहले वह और उसकी सहेली स्थानीय गिरजाघर में काम करने को गई हुई थीं। जब वे कार्यरत थी कई पुरुष मदिरा के नशे में गिरजाघर में प्रवेश कर लड़ाई करने लगे। जैसे ही विश्वासी लोग दौड़ने लगे, उन पुरुषों में से एक ने अपने ही एक पुत्र पर जो नशे में था छुरे से वार कर दिया। जब ओलगा ने देखा कि वह जवान लड़का घायल हो गया, तब वह और उसकी सहेली ठहर कर उसकी सहायता करने लगे। उनका खुद का जीवन खतरे में था किन्तु उन्होंने एक शत्रु की जान बचाई। "आइए प्रार्थना करें" उसने कहा, "ताकि वह जवान लड़का जीवित रहे एवं मसीह को उद्धार कर्त्ता के रूप में ग्रहण करें।"

हमने प्रार्थना में सिर झुकाया, किन्तु मैं केवल लड़के के लिए ही प्रार्थना नहीं कर रहा था। मैं ओलगा एवं दूसरों के प्रति उसके प्रेम के लिए यहां तक कि जो उसका शत्रु था परमेश्वर को धन्यवाद भी दे रहा था।

ओलगा ने वह सीखा था जो हमने पाठ १२ में सीखा। दूसरों से प्रेम एवं उनकी सहायता करना परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम प्रगट करने का एक तरीका है। आइये हम देखें कि परमेश्वर का वचन दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध के विषय में क्या कहता है।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

जो हमारे ऊपर नियुक्त हैं
जो हमारे चारों ओर रहते हैं
जो हमारे विरोध में है

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप ....

- दूसरों के साथ आपके सम्बन्ध के प्रति अपनी जिम्मेवारियों को स्वीकार कर सकें।
- प्रत्येक सम्बन्ध में प्रेम का प्रयोग कर सकें।

जो हमारे ऊपर नियुक्त हैं

उद्देश्य १. यह जानना कि एक विश्वासी को किसे आदर देना एवं उनकी आज्ञा मानना अवश्य है।

प्रत्येक के जीवन में कभी न कभी कोई अधिकारी रह चुका हैं। बच्चों के ऊपर माता-पिता एव माता-पिता के ऊपर धार्मिक एवं राजनैतिक अगुए होते हैं। यहां तक कि उन अगुओं के ऊपर कोई दूसरे अधिकारी होते हैं जो बताते हैं कि उन्हें क्या करना है। उन अधिकारियों के साथ जो हमारे ऊपर हैं, हमारे सम्बन्ध के प्रति बाइबल हमें क्या बताती है।

माता-पिता से प्रेम रखना, उनका आदर करना एवं आज्ञा मानना जरूरी है। आप इसे पाठ ११ में अध्ययन की गई आज्ञाओं में एक आज्ञा के रूप में याद रखेंगे। इफिसियों ६:१-२ भी बताता है "हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर।"

पुलिस कर्मी, न्यायाधीश एवं राज्यपाल जैसे अधिकारियों का भी आज्ञा पालन करना जरूरी है। "हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे। क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो। और जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं (रोमियों १३:१)।

विश्वासियों के रूप में हमारे अगुए पास्टर, कलीसियाई कार्यकारिणी सभा एवं सण्डे स्कूल शिक्षक हैं। इनका आदर करना एवं इनकी जिम्मेवारियों से सम्बन्धित बातों का आज्ञा पालन करना जरूरी है।

> अपने अगुवों की मानो और उनके अधीन रहो क्योंकि वे उनकी नाईं तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं। जिन्हें लेखा देना पड़ेगा कि वह यह काम आनन्द से करें न कि ठण्डी सांस लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं (इब्रानियों १३:१७)।

केवल परमेश्वर का अधिकार हमारे ऊपर नियुक्त अगुओं के अधिकारों से ऊंचा है। केवल तभी आज्ञाकारिता की मांग नहीं की जाती जब वे हमें वह काम करने को कहें जो परमेश्वर की आज्ञाओं या उसकी इच्छा के विरुद्ध हो। पतरस और दूसरे प्रेरितों पर भी यही बीता कि उन्हें प्रचार करने को मना किया गया था। पतरस को मालूम था कि परमेश्वर की आज्ञा सबसे बढ़कर मानना चाहिए। प्रेरितों के कार्य ५:२९ कहता है "पतरस और दूसरे प्रेरितों ने उत्तर दिया कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।"

• • •

जो आपको करना है

१. नीचे दिये गये पदों को पढ़ें। प्रत्येक के सामने इससे मेल खाने वाले वर्णन की संख्या लिखें।

...अ.	१. तीमुथियुस ५:१७	१)	माता पिता का आदर करना।
...ब.	कुलुस्सियों ३:२०	२)	असैनिक अधिकारियों का आदर करना।
...स.	१ पतरस २:१३	३)	कलीसियाई अधिकारियों का आदर करना।
...ड.	नीतिवचन ६:२०		
...इ.	मत्ती २२:१७-२१		

२. नीचे दी गई सूची को पढ़ें। इनमें से जितनों को आदर सत्कार देने में आपको कठिनाई होती है उनकी जगह पर × का चिन्ह डाल दें।

पिता .....
कलीसियाई कार्यकारिणी समिति .....
माता .....
पुलिस .....
पास्टर .....

यदि आपने दी गई जगहों में × का चिन्ह डाला हो तो प्रभु से आप प्रार्थना करें कि आपको उनका आदर सत्कार करने में कठिनाई क्यों होती है और उससे सहायता मांगे कि आगे से आप उनका आदर एवं उनकी आज्ञा का पालन कर सकें।

जो हमारे चारों ओर रहते हैं

उद्देश्य २. दूसरों से प्रेम रखने के लिए बाइबल के सिद्धांतों का उचित प्रयोग जानना।

एक दिन एक मित्र ने मुझसे कहा "यदि अविश्वासी लोग मुझसे बुरा व्यवहार करें तो भी मैं उनसे प्रेम रखूंगा किन्तु एक मसीही के द्वारा बुरा व्यवहार किये जाने को मैं सहन नहीं कर सकता। उन्हें अच्छी तरह मालूम है"।

यदि प्रभु यीशु भी ऐसा ही सोचता तो पतरस एवं अन्य प्रेरितों पर क्या बीतता? वे उसे अच्छी तरह जानते थे किन्तु जब उसे बन्दी बनाकर मुकदमा चलाने ले गए तो सब ने उसे छोड़ दिया। तो भी जब वह मृतकों में से जी उठा तो उन सब पर प्रगट होकर अपने प्रेम का आश्वासन उन्हें दिया।

हमने कई बार प्रभु को विफल किया है किन्तु वह निरन्तर हम से प्रेम करता है। प्रभु चाहता है कि हम दूसरों से वैसा ही प्रेम करें जैसा वह हमसे प्रेम करता है। "जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो" (यूहन्ना १३:३४)।

हमारे मित्रों एवं पड़ौसियों के प्रति हमारा व्यवहार वैसा ही होना चाहिये जैसा हम उन से चाहते हैं। लूका ६:३१ कहता है "जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।" रोमियों १३:९ में हमें मिलता है "अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख।"

अविश्वासी के साथ भी हमारा सम्बन्ध प्रेम का होना चाहिये। अपने कार्यों के द्वारा हम उन्हें यह बताएं कि मसीह हममें वास करता है।

रिचर्ड वुम्ब्रांड, एक मसीही पास्टर, जिनको अपने विश्वास के कारण जेल जाना पड़ा, वे एक-दूसरे की कहानी बताते हैं जो खुद भी एक पास्टर था। वह अपने मसीह समान चरित्र के लिए विख्यात था।

बाद में एक जवान कम्युनिस्ट को भी कैदी बनाकर उसे उसी कोठरी में रखा गया जहां ये पास्टर रखे गये थे। इन पास्टरों ने उसे गवाही देकर यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करने को कहा। किन्तु उस जवान ने ठुकरा दिया।

एक दिन यह जवान व्यक्ति वाद-विवाद कर रहा था, "मैं कैसे किसी को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर सकता हूं," उसने कहा "यदि मैंने उससे कभी मुलाकात न की और मालूम नहीं कि वह किसके समान है?"

"मैं तुम्हें बताऊंगा कि यीशु किसके समान है," पास्टर ने उत्तर दिया "वह मेरे समान है।"

बिना हिचकिचाहट के उस मनुष्य ने उत्तर दिया "यदि वह तुम्हारे समान है तो मैं उसे इसी समय अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार कर लूंगा।"

पास्टर की गवाही कितनी अद्भुत थी। मुझे भय इस बात का है कि बहुत ही थोड़े विश्वासी ऐसे हैं जो साहस के साथ कह सकते हैं "यीशु मेरे समान है।" किन्तु यही है जो प्रभु हमसे चाहता है — कि हम इतना अधिक उसकी तरह बन जाएं कि लोग उसे हममें देख सकें। मत्ती ५:१६ कहता है, "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें।"

आइये हम प्रतिदिन प्रभु से कहें कि हम उसके समान बनते चले जाएं। तब, यह समय होगा कि हम अपने शब्दों को कार्य रूप दें एवं उसके समान बनना प्रारम्भ कर दें।

जो आपको करना है

३. नीचे दी गई संभावित परिस्थितियों पर विचार करें। जो हमने अभी अध्ययन किया है उस आधार पर कौन सी परिस्थितियां विश्वासियों के लिए सही एवं कौन सी गलत हैं? जो सही हैं उनके सामने "स" और जो गलत हैं उनके सामने "ग" लिख दें।

...अ. एक मसीही व्यक्ति आपके नाम की निन्दा करता है। आप उस पर मुकदमा चलाने की सोच रहे हैं।

...ब. आपका पड़ौसी कहता है, "अब कभी मसीह के बारे में मुझसे कहने मत आना।" किन्तु दूसरे ही दिन यदि उसे सहायता की जरूरत पड़े तो आप जाकर उसकी सहायता करते हैं।

...स. आपका पास्टर वह प्रचार करता है जो आप को पसन्द न हो और आप अपना असंतोष प्रगट करने के लिए चर्च से उठकर बाहर चले जाते हैं।

...ड. एक मसीही मित्र पाप से गिर जाता है और इस बात को कलीसिया के सामने रखने के बजाय आप चुपके से जाकर उसे पश्चात्ताप करने एवं परमेश्वर के साथ मेल करने में उसकी सहायता करते है

४. १ यूहन्ना ४:७-२१ पढ़ें। इन पदों के अनुसार नीचे दिए कौन-कौन से कथन सही हैं?

अ. • हम प्रेम करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया।

ब. जो प्रेम नहीं करता वह परमेश्वर को नहीं जानता।

स. प्रेम में भय होता है ताकि प्रेम का तिरस्कार किया जा सके।

ड. परमेश्वर से प्रेम करना काफी है। एक भाई से प्रेम करना जरूरी नहीं यदि वह आपसे गलत व्यवहार करता है।

जो हमारे विरुद्ध हैं

उद्देश्य ३. अपने स्वयं के कार्यों की तुलना दूसरों से प्रेम रखने के बारे में बाइबल के सिद्धान्त से करना।

इस पाठ के प्रारम्भ में दी गई ओलगा की कहानी याद करें। क्या ओलगा ने उससे प्रेम किया जिसने गलत व्यवहार किया था? बजाय इसके कि उस घायल व्यक्ति के चंगाई के लिए प्रार्थना करती। ओलगा प्रार्थना कर सकती थी कि उनके बुरे कार्यों के लिए परमेश्वर उन्हें दण्ड दे।

क्या वह मसीह-का-सा स्वभाव होता? नहीं। उस रात जब यीशु पकड़वाया गया और पतरस ने महायाजक के एक दास का कान काट दिया

तो यीशु ने क्या किया? वह दास यीशु का शत्रु था किन्तु लूका हमें बताता है "परन्तु यीशु ने कहा अब बस करो : और उसका कान छूकर उसे अच्छा किया" (लूका २२:५१)।

हम यीशु के समान बनना चाहते हैं जिसने शत्रुओं से प्रेम किया एवं उन्हें क्षमा किया। मत्ती ५:४४ में उसने कहा "अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो" और फिर मत्ती ६:१५ में, "यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारा अपराध क्षमा नहीं करेगा।"

प्रेम सबसे बड़ा मसीही सद्गुण है। पहला कुरिन्थियों १३:१३ बताता है "विश्वास, आशा, प्रेम : यह तीनों स्थाई हैं और इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।"

मसीहियों को सर्वप्रथम परमेश्वर से प्रेम रखना चाहिए। तदुपरांत वह अपना प्रेम हमारे हृदयों में डालेगा जिससे हम मित्र एवं शत्रु दोनों से प्रेम रख सकते हैं। "यीशु ने उत्तर दिया, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती २२:३७)।

"और मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक-दूसरे से प्रेम रखो जैसे मैंने तुमसे प्रेम रखा है वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो" (यूहन्ना १३:३४)।

इस पद को मुखाग्र करे और बार-बार दुहराएं यह स्मरण करते हुए कि एक विश्वासी की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी परमेश्वर एवं मनुष्य के प्रति प्रेम है।

जो आपको करना है

५. नीचे दिए गए कथनों में से कौन-कौन से आपके जीवन में रहे हैं?

अ. जिस तरह आप अपने परिवार के साथ व्यवहार करते हैं वह प्रभाव डालता है कि जो आप परमेश्वर के विषय में बतायें उन्हें वे ग्रहण कर सकें।

ब. आपके कार्य आपके मित्रों में परमेश्वर की उस सामर्थ को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न कर सकते हैं जिसने आपके जीवन को बदल डाला है।

स. आप प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं कि जब लोग आपको देखते हैं तो वे आप में यीशु को भी देख सकें।

ड. आप उन मित्रों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जिन्हें दूसरों से प्रेम रखने में कठिनाई हो रही है।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. ३) कलीसियई अगुओं का आदर करना
ब. १) माता पिता का आदर करना
स. २) असैनिक अधिकारियों का आदर करना
ड. १) माता पिता का आदर करना
इ. २) असैनिक अधिकारियों का आदर करना

४.
अ. सही
ब. सही
स. गलत
ड. गलत

२. आपका उत्तर

आपका उत्तर। यदि कुछ कथन आपके लिए सही नहीं है तो पाठ को दुबारा पढ़ें। अपने कार्यों की जांच करें और परमेश्वर से सामर्थ्य की मांग करें जिससे आप दिन प्रतिदिन उसके आदर्शों के अनुकूल जीवन बिता सकें।

अध्याय 14 एक मसीही एवं स्वयं

छोटे से देश में आंतरिक युद्ध चल रहा था और छापामार सैनिक सभी जगह युद्ध कर रहे थे। एक जवान व्यक्ति उनके द्वारा पकड़ लिया गया एवं उसकी जान लेने की धमकी दी गई यदि वह मसीहियत को नहीं छोड़ता।

कुछ ही क्षणों तक साहस दिखाने के पश्चात् उसने आत्म-समर्पण करके विश्वास का परित्याग कर दिया। उसके बाद उस पर दबाव डाल कर उसे छापामार सैनिकों में शामिल कर लिया और उससे आशा की गई कि वह उनके लिए काम करे। वह उनका अगुआ बन कर उन खूनी लोगों को उन मसीहियों के घरों में ले गया जिन्हें वह जानता था।

महीने बीत गये। तब एक दिन वह भयानक युद्ध में फंस गया। और उसके ही लोगों में से एक ने उसे मार डाला। कितना नुकसान — इस जीवन में और आने वाले जीवन दोनों में।

कितना अच्छा होता यदि वह अपने विश्वास में अडिग रहता। वह अपने जीवन को जरूर खो देता किन्तु उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो जाता। वह परमेश्वर एवं दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेवारी निभाने में असफल रहा। वह स्वयं के प्रति भी अपनी जिम्मेवारी निभाने में असफल रहा।

यह पाठ हमें इस बात को समझने में हमारी सहायता करेगा कि हम अपने आप से किस बात के ऋणी हैं और परमेश्वर की आज्ञा का पालन कैसे

कर सकते हैं जो चाहता है कि हमारा जीवन समय एवं अनन्त काल के प्रति ईमानदार हो।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

अपने आप का इन्कार करना
अपने को शुद्ध करना

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- महसूस करें कि आपकी सबसे बड़ी लाभ-प्राप्ति अपने आप का इन्कार करने में ही है।
- वर्णन कर सकें कि प्रत्येक मसीही के लिए एक स्वच्छ एवं शुद्ध विवेक और शरीर की आवश्यकता क्यों है?

अपने आप का इन्कार करना

उद्देश्य १. यह जानना कि "अपने आप का इन्कार" करने का क्या अर्थ है।

एक मसीही विश्वासी का जीवन उसका अपना नहीं है। एक मसीही के जीवन का स्वामी प्रभु है क्योंकि उसने अपने स्वयं लोहू से इसे खरीदा है।

आपको मालूम है कि आपके छुटकारे के लिए कौन सा धन चुकाया गया है ..... यह वह चीज नहीं थी जो नाशमान हो जैसे चांदी और सोना। यह मसीह का बहुमूल्य बलिदान था जो निष्कलंक मेम्ने के समान था. (१ पतरस १:१८-१९)।

पहला कुरिन्थियों ६:२० भी हमें यीशु के क्रूस पर बलिदान देने के विषय में बताता है "उसने तुमको दाम देकर मोल लिया।" यदि मसीह ने हमारे लिए एक कीमत चुकाई तो हमें भी अवश्य एक कीमत चुकानी है। बाइबल बताती है कि एक मसीही बनने का अर्थ अपने आपको भूलकर यीशु के पीछे चलना है। लूका ९:२३ में प्रभु के ये वचन है : "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।"

जब हम परमेश्वर की इच्छानुसार काम करते हैं तो अपने आप को भूल जाते हैं और अपनी इच्छानुसार नहीं चलते। यीशु मसीह ने हमारे सामने एक अच्छा नमूना पेश किया है। यूहन्ना ६:३८ में उसके वचन ये हैं "क्योंकि मैं स्वर्ग से नीचे उतरा हूँ ताकि अपनी इच्छा नहीं किन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करूं।"

जो मुझे "हे प्रभु, हे प्रभु' कहते हैं उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है (मत्ती ७:२१)।

मसीहियों के रूप में हमें प्रतिदिन सही कार्य करने का चुनाव करना है भले ही वह हमारी आकांक्षाओं के विरुद्ध हों "वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो" (रोमियों १३:१४)।

क्या अपने आप का इन्कार करना आपको ऋणात्मक मालूम पड़ता है? मैं नहीं सोचता क्योंकि प्रभु कोई अच्छी चीज दिये बगैर हमसे कोई भी चीज नहीं मांगता। यह एक कुत्ता और हड्डी की कहानी के समान है। जब उसके मालिक ने उससे हड्डी लेने की कोशिश की तो वह गुस्से में आकर गुर्राने लगा। कुत्ते के पास हड्डी ही बाकी थी इसलिए वह इसे नहीं देना चाहता था। किन्तु जब उसके मालिक ने मांस का एक बड़ा टुकड़ा नीचे रख दिया तो कुत्ते ने हड्डी तुरन्त छोड़ दी।

कभी-कभी हम "हड्डियों" में ही अधिक रुचि रखते हैं — सोचते हैं कि हमें इसकी ही जरूरत है। हमें यह मालूम करना चाहिए कि प्रभु हमें कोई अच्छी चीज भेंट कर रहा है। जब चेले इस बात से कुछ चिंतित थे कि उन्हें क्या कुछ छोड़ना पड़ेगा। यीशु ने उन्हें यह स्पष्ट उत्तर दिया :

> और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़के वालों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है उसको सौ गुना मिलेगा और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा (मत्ती १९:२९)। दूसरी जगह यीशु ने कहा कि वह आया "ताकि तुम जीवन पाओ और बहुतायत से प्राप्त करो" (यूहन्ना १०:१०)।
>
> जीवन इसकी पूरी भरपूरी के साथ! यही जिसे सारा संसार ढूंढ रहा है किन्तु केवल परमेश्वर ही दे सकता है।

हां, काश! आप इस प्रेम को जान सकते — यद्यपि इसे पूरी तरह नहीं जाना जा सकता और उसके स्वभाव में पूरी तरह से परिपूर्ण हो जाओ। वह जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है। उस सामर्थ के अनुसार जो हममें कार्य करता है, कलीसिया

में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन! (इफिसियों ३:१९-२१)

जो आपको करना है

१. लूका १४:२७ पढ़ें।

अ. इस पद में अपने आप का इन्कार करने की तुलना..... उठाकर चलने से की गई है।

ब. इस पद के अनुसार हमें परमेश्वर से ..... से अधिक प्रेम रखना चाहिए।

२. स्वयं का इन्कार करना या क्रूस उठाकर चलने का अर्थ है :

अ. धन-संपत्ति न रखना।

ब. जो कुछ हमारे पास है उसे बेच कर कलीसिया को दे देना।

स. अपनी इच्छा से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा पूरी करना।

३. नीचे दिए गए कौन-कौन से कथन सही है?

अ. यीशु ने अपने प्राण हमारे लिए दे दिए इसलिए नहीं कि हमारे ऊपर भार बढ़ जाए किन्तु इसलिए कि हम अपने दोष से मुक्त हो सकें।

ब. जीवन की भरपूरी परमेश्वर के स्वभाव से पूरी तरह परिपूर्ण होने पर ही प्राप्त होती है।

स. स्वयं का इंकार करने का अर्थ अपने पापी स्वभाव पर ध्यान न लगाना है।

४. मत्ती ११:२८-३० पढ़ें। यीशु का क्रूस उठाना भार नहीं, किन्तु उसके विरुद्ध, यह .... है।

अपने को शुद्ध करना

उद्देश्य २. देह और विवेक को शुद्ध रखने के विषय में उपयुक्त मसीही व्यवहार का चुनाव करना।

एक मसीही को अपनी देह और विवेक को शुद्ध रखना चाहिए। बाइबल बताती है कि हमें ऐसा क्यों करना चाहिए।

> क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है और तुम अपने नहीं हो? (१) कुरिन्थियों ६:१९)

धूम्रपान या नशा करना एक व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, यह उसकी देह और विवेक को नुकसान पहुंचाकर जीवन काल को कम कर देता है। इसका उपयोग करने वाला सोच सकता है कि इसे जब चाहे तब छोड़ सकता है — किन्तु यह सच नहीं — वह अपनी इस आदत का गुलाम बन जाता है।

क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आपको दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो। और जिसकी मानते

हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के जिसका अन्त धार्मिकता है (रोमियों ६:१६)।

शायद आप कुछ परीक्षाओं में फँस गए हों। क्या आप ऐसी जगहों में जाते हैं जिनसे प्रभु प्रसन्न नहीं, या ऐसी पुस्तकें या पत्रिकाएं पढ़ते हैं जिनसे प्रभु के देखते आप शर्मिंदा हों? परमेश्वर से सहायता मांग कर हम हानिप्रद आदतों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभु से कहें कि आप अपने बल पर बुराई पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते और वह आपकी सहायता करेगा। अपने जीवन में उससे चंगाई की मांग करें। इस पद को सीख कर जब कभी आप परीक्षा में पड़ जाएं तो इसे दुहराएं "जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलिप्पियों ४:१३)।

> अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़ और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा। वह तेरा धर्म ज्योति की नाईं और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले की नाईं प्रगट करेगा (भजन संहिता ३७:५)।

जो आपको करना है

५. नीचे दी गई परिस्थितियों में आप क्या करेंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हां या नहीं में दीजिए।

...अ. आप अपने मित्र की पार्टी (जो अविश्वासी है) में निमंत्रित हैं जहां आपको उस कार्यक्रम में भाग लेना है जो आपके मसीही विश्वास के विरुद्ध है। क्या आप कम से कम एक बार वहां जाएंगे ताकि आप के मित्र को दुख न हो?

...ब. आपकी कलीसिया के कई सदस्यों ने आप से उस जगह जाने को कहा है जहां आप को वह करना होगा जिससे प्रभु प्रसन्न नहीं। क्या आप इसे स्वीकार करेंगे ताकि वह ऐसा महसूस न करें कि आप अपने को उनसे अधिक पवित्र दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

...स. बहुत से अविश्वासियों ने आपको अपने त्योहारों में अपने घरों में बुलाया और आपके जीवन परिवर्तन की गवाही सुनाने को कहा है। क्या आप जाएंगे क्यों कि यह गवाही देने का एक अवसर है।

६. एक नया मसीही आपके आगे यह मान लेता है कि वह धूम्रपान नहीं छोड़ सकता। आप निम्नलिखित में से कौन सा काम करेंगे।

अ. उसे बताएं कि जब तक धूम्रपान न छोड़ दे वह स्वर्ग नहीं जा सकता।

ब. पास्टर से ऐसा कह दें ताकि उस नए मसीही को बपतिस्मा न दिया जाए।

स. उसके साथ प्रार्थना करें और प्रभु के पास जाएं तथा उसके वचन में से बताएं ताकि उसे इस बुराई पर विजय प्राप्त करने की सामर्थ मिल सके।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. क्रूस
ब. हमारा परिवार अथवा मित्र

४. सहज और हल्का

२. स. अपनी इच्छा से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा पूरी करना।

५. आपका उत्तर। मुझे आशा है कि अ) और ब) के लिए आपका उत्तर "नहीं" है क्योंकि आपको मित्रों की खातिर चाहे वे अविश्वासी हों या मसीही अपने मसीही विश्वास को नहीं बदलना चाहिए। मुझे आशा है कि स) के लिए आपका उत्तर "हां" है। यीशु जहां कहीं गया उसने गवाही दी — मन्दिरों में या लोगों के घरों में। मुझे विश्वास है कि वह उन सभी जगहों में जाता है जहां लोग उसके वचन को सुनने के भूखे हैं।

३. सभी कथन सही हैं।

६. स. उसके साथ प्रार्थना करें और प्रभु के पास जाएं तथा उसके वचन में से बताएं ताकि उसे इस बुराई पर विजय प्राप्त करने की सामर्थ मिल सके।

आपकी टिप्पणी के लिए

मसीही जीवन

मेरे पिता जो कई वर्षों तक मिशनरी सेवकाई में रह चुके हैं। उन्हें कई बार परीक्षाओं का सामना करना पड़ा। मसीही विश्वास के कारण उन्हें बंदूक की नोक पर पकड़ा गया, धमकी दी गई एवं जेल में डाला गया। किन्तु वे डगमगाए नहीं। तथापि उनको इसका सबसे बड़ा अनुभव कुछ ही वर्ष पहले हुआ।

एक व्यक्ति जो विश्वासी होने का दावा करता था किन्तु वास्तव में परमेश्वर के विरोध में एक विद्रोही था इसने मेरे पिता की निन्दा एवं अपमान करने का फैसला किया। उस व्यक्ति ने भयानक झूठ बोले। किन्तु इसका बदला लेने के बजाए मेरे पिता ने प्रार्थना की एवं इस बात को परमेश्वर के हाथ में डाल दिया। कुछ महीनों के अन्दर इस व्यक्ति में दूसरों के प्रति ऐसा ही पाप करने का दोष पाया।

मेरे पिता की यह कहानी संसार भर के हजारों विश्वासियों के जीवन में दुहरायी जाती है। वे मजबूत मसीहियों के रूप में पैदा तो नहीं होते किन्तु वे परमेश्वर को अपने जीवनों में कार्य करने देते हैं। इस तरह कई वर्षों में मसीही-चरित्र का विकास होता है। ऊंचे वृक्षों की तरह वे अपनी जड़ों को गहराई तक जाने देते हैं। जिससे तेज हवा चलने पर भी वे नहीं उखड़ते।

क्या आप एक अच्छा व्यक्ति बनना चाहते हैं जो परमेश्वर पर भरोसा करता है एवं सभी परिस्थितियों में स्थिर रहता है। जो हमने पहले ही अध्ययन कर लिया है उसे प्रयोग में लाएं एवं वृक्ष के समान "ऊंचाई में बढें।"

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

प्राप्त करना एवं सहभागिता करना
मसीही विकास
विचार एवं कार्य
कलीसियाई जीवन

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- उन मूलभूत सिद्धांतों का पता लगा सकें जो एक विजयी मसीही जीवन का मार्गदर्शन करते हैं।
- प्रतिदिन के जीवन में इनका प्रयोग करने हेतु वचनबद्ध हो सकें।

प्राप्त करना एवं सहभागिता करना (बांटना)

उद्देश्य १. मसीही जीवन विकास के क्रम से कम दो आवश्यक उपायों को जानना।

हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं कि हमें अनन्त जीवन कौन देता है एवं इसे कैसे ग्रहण करते हैं; किन्तु यह अच्छा है कि बहुधा हम अपने को इस बात का स्मरण दिलाते रहें जिस से हम कभी भी नहीं भूल पाएंगे कि हमारे जीवन का आधार यीशु है।

> परन्तु जो कोई उस जल में से पीयेगा जो मैं उसे दूंगा वह फिर अनन्त काल तक पियासा न होगा वरन जो जल मैं उसे दूंगा वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा (यूहन्ना ४:१४)।

परमेश्वर के परिवार का एक भाग बनना सचमुच अद्भुत बात है। यह हमें प्रेरित करती है कि दूसरों को भी यह बात बताएं जिससे वे भी इस परिवार का भाग बन सकें। मत्ती १०:३२ में यीशु ने कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा।" क्या यह एक सुन्दर प्रतिज्ञा नहीं?

> पर मसीह को प्रभु जान कर अपने अपने मन में पवित्र समझो और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो; पर नम्रता और भय के साथ। और विवेक भी शुद्ध रखो इसलिए कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय में वे जो तुम्हारे मसीही अच्छे चाल चलन का अपमान करते हैं लज्जित हों (१ पतरस ३:१५-१६)।

हम मसीह के विषय में इसलिए सहभागिता (बताते) करते हैं क्योंकि हम ऐसा चाहते हैं एवं बाइबल हमें उसके विषय में दूसरों को बताने के लिए

उत्साहित करती है। जब हम मसीह के लिए इस बात का फैसला करते हैं तो हम मजबूत होते जाते हैं।

दूसरा तरीका जिसके द्वारा हम सार्वजनिक रूप से यह घोषणा कर सकते हैं कि हम मसीह के हैं, वह है पानी का बपतिस्मा लेने के द्वारा। पानी का बपतिस्मा आपके मसीही जीवन के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यीशु ने स्वयं बपतिस्मा लिया था — इसलिए नहीं कि उसको इसकी जरूरत थी किन्तु इसलिए कि वह हमारे लिए एक सिद्ध नमूना है। इसके विषय में आप मत्ती ३ में पढ़ सकते हैं।

> इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो
> (मत्ती २८:१९)

किसी कलीसिया का सदस्य बनना, या स्थानीय झुंड में शामिल होना यह हमारे उद्धार के लिए जरूरी नहीं है किन्तु इससे हमें मसीही परिवार में एक घनिष्ट सम्पर्क प्राप्त होता है। इससे हम अपने चारों ओर रहने वालों के प्रति एवं उनके लिए जिम्मेदार बन जाते हैं। हम एक दूसरे का अधिक ख्याल रखना सीखते हैं। जैसा एक सांसारिक परिवार परमेश्वर की योजना का एक भाग है, वैसा ही आत्मिक परिवार भी — एक ऐसा झुण्ड है जहां हम अपनी सहभागिता (सम्पर्क एवं बातचीत) कर सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं। प्रेरितों २:४७ कहता है कि जो उद्धार पाते थे, प्रभु उन्हें विश्वासियों के झुण्ड में मिला देता था।

जो आपको करना है

१. रोमियों १०:९-१० के अनुसार कौन से दो कार्य एक मसीही को करना आवश्यक है?

.....

.....

२. यूहन्ना १:४३-४६ पढ़ें। फिलिप्पुस ने यीशु द्वारा बुलाए जाने के तुरन्त बाद क्या किया?

.....

.....

३. नीचे दिए कौन-कौन से कथन सही हैं?

अ. पानी का बपतिस्मा सार्वजनिक रूप से मसीह को अंगीकार करने का एक तरीका है।

ब. मसीह के विषय में दूसरों के साथ सहभागिता करना (बताना) आवश्यक नहीं है। हम गुप्त रूप से उसके चेले बने रह सकते हैं।

स. मसीही मित्र हमारी सहायता कर सकते हैं और हम उनकी सहायता कर सकते हैं।

मसीही विकास

उद्देश्य २. मसीही विकास में सहायक दो प्रमुख कार्य-कलापों को जानना।

भूख कई प्रकार की होती है। कोई हमसे दूर चला जाए तो हम उनका समाचार प्राप्त करने को तरसते हैं या हममें नए अवसरों की प्राप्ति की भूख हो सकती है। लोग प्रेम और स्नेह के भूखे रह जाते हैं। और निश्चित रूप से हमारे दिल और हमारी आत्माएं उन चीजों तक पहुंच चुकी हैं जो यह संसार नहीं दे सकता।

नया जीवन प्राप्त करने के बाद आपको एक दूसरे प्रकार की भूख का अनुभव होगा — परमेश्वर के वचन की भूख। "नए जन्मे हुए बच्चों की

नाईं आत्मिक दूध की लालसा करो" (१ पतरस २:२)। यीशु ने कहा "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा (मत्ती ४:४)।

एक मसीही को प्रति दिन बाइबल पढ़ने की जरूरत है। इस्राइलियों के राजा दाऊद ने एक अच्छा नमूना पेश किया। उसने कहा, "धन्य हैं वे जो बुरे व्यक्तियों की युक्ति का तिरस्कार करते हैं..." परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने में प्रसन्न रहते हैं एवं रात और दिन उसका अध्ययन करते हैं (भजन संहिता १:१-२)। "अहा, मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं। दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है (भजन संहिता ११९:९७)।

परमेश्वर के वचन को पढ़ना मात्र ही नहीं है किन्तु इसे मुखाग्र करना एवं इसकी शिक्षाओं को अपने हृदय में रखना ही महत्वपूर्ण है। जो हमने अध्ययन किया है आवश्यकता के समय पर पवित्र आत्मा हमें उसका स्मरण दिलाता है — जब हमें अपने जीवन में मार्गदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

> परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुम से कहा वह सब तुम्हें स्मरण करायेगा (यूहन्ना १४:२६)।

हमारे प्रति दिन के बाइबल अध्ययन के साथ-साथ प्रार्थना भी आवश्यक है। यीशु जिसे इस पृथ्वी में आने से पहले स्वर्ग के सारे विभाग के विषय मालूम था उसे भी प्रार्थना करने की आवश्यकता महसूस हुई। अपने चेलों का चुनाव करने से पहले उसने पूरी रात प्रार्थना में बिताई (लूका ६:१२)। पौलुस और सिलास उस समय प्रार्थना एवं भजन कर रहे थे जब उन्हें बन्दीगृह की जंजीरों से मुक्त किया गया (प्रेरितों का कार्य १६)। मसीह ने अपने चेलों से कहा, "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा" (लूका ११:९)।

पहला थिस्सलुनीकियों ५:१७ कहता है "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" यहां तक कि हम स्कूल में क्यों न हों जहां हमारा दिमाग व्यस्त रहता है या ऐसा कोई कार्य जिसमें हमें पूरा ध्यान देना पड़ता हो, इन परिस्थितियों में हम प्रार्थना की मुद्रा में रह सकते हैं। इस तरह यदि कोई आपातकाल आये तो हमें मालूम है कि परमेश्वर को कैसे पुकारें। अपने कार्य के बीच मिलने वाले लघु अवकाश का लाभ हम प्रभु की स्तुति करने में व्यतीत करते हैं। इस तरह हम निरन्तर उसकी आराधना करते हैं।

जो आपको करना है

४. कौन से दो कार्यकलाप एक विश्वासी को आत्मिक रूप में बढ़ने में सहायक हैं?

.....

.....

विचार एवं कार्य

उद्देश्य ३. यह जानना कि एक विश्वासी के विचारों की सुरक्षा एवं उसे वश में कैसे रखा जा सकता है।

सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है" (नीतिवचन ४:२३)।

प्रभु हमारे विचारों को वश में रखने में सहायता कर सकता है। फिलिप्पियों ४:७ कहता है "तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से बिल्कुल परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।" हमारे विचार जब साफ एवं शुद्ध होते हैं तो वे परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं।

> निष्कर्ष यह है कि मेरे भाइयों अपने हृदय में केवल उन बातों को जगह दो जो अच्छी एवं प्रशंसा के योग्य हैं : जो जो बातें सत्य हैं, जो जो बातें आदरणीय हैं और जो जो बातें उचित, सुहावनी, मनभावनी एवं आदरणीय हैं (फिलिप्पियों ४:८)।

जो बातें परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं उनमें अपना मन लगाये रखने के लिए हमें निरन्तर अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है। जब तक हम इस संसार में हैं हमें पाप एवं परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है, किन्तु प्रभु की सहायता से हमें इनके सामने झुकने की आवश्यकता नहीं। एक पुरानी कहावत है "पक्षी आपके सिर के ऊपर से गुजर सकते हैं किन्तु आपको, उन्हें अपने बालों में घोंसला बनाने देने की आवश्यकता नहीं। दूसरे शब्दों में "परीक्षाएं आपके चारों ओर हो सकती हैं किन्तु उन्हें आपके विचार एवं कार्य में पाप का रूप धारण करने की आवश्यकता नहीं। अपने विचारों को वश में रखने एवं मन को बुराई से बचाए रखने का सबसे उत्तम तरीका यह है कि हम सावधान रहें कि क्या देखते, सुनते, कहते या करते हैं।

सावधान रहें कि आप क्या देखते हैं "शरीर का दिया आंख है। इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा" (मत्ती ६:२२)।

जो हम सुनते हैं वह भी हमारे विचारों पर प्रभाव डालता है। मरकुस ४:२४ कहता है. "चौकस रहो कि क्या सुनते हो।" क्या आप वार्तालाप पसन्द करते हैं या ऐसा संगीत जो प्रभु से अधिक प्रेम रखने में आपकी मदद करता है? क्या वह आपके विचारों को स्वस्थ रखता है? यदि आपका उत्तर नकारात्मक है तो शायद आपको अपने सुनने में अनुशासन बरतना होगा।

सुनने के अन्तर्गत हमारे स्वयं के शब्द या दूसरों के कहे हुए शब्द आते हैं। जो हम कहते हैं वह एक अच्छा या बुरा जबरदस्त प्रभाव डाल सकता है। यदि कोई हमारे विरुद्ध में कोई कार्य करे हम इसे आसानी से भूल सकते हैं यदि हमने उस व्यक्ति को कठोरता से जवाब न दिया हो। नीतिवचन १५:१ इस तरह कहता है "कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है।" हमारा उद्देश्य नीति वचन २५:११ को पूरा करना हो सकता है "जैसे चांदी की टोकरियों में सुनहले सेब हो वैसे ही ठीक समय में कहा हुआ वचन होता है।"

एक मसीही को सावधान रहना चाहिए कि वह क्या करता है क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि वह वही करें जो सही है।

> परमेश्वर ने हमसे कहा है कि भला क्या है। जो वह हमसे चाहता है वह यह है : न्याय से कार्य करें, हमेशा प्रेम से व्यवहार करें और नम्रतापूर्वक परमेश्वर के साथ संगति करें (मीका ४:८)।

हमारा प्रत्युत्तर भजन संहिता के लिखने वाले के शब्दों में यह हो सकता है, "मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सन्मुख ग्रहण योग्य हो हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करने वाले। (भजन संहिता १९:१४)।

• • •

जो आपको करना है

५. इस भाग से एक पद का चुनाव करें जो नीचे दिए गए कथनों की पूर्ति की पुष्टि करता हो। दिए गए खाली स्थानों में उपयुंक्त संदर्भ (कहां पाया जाता है) लिखें। हमारे विचार

अ. अच्छी बातों की ओर होनी चाहिए .....

ब. परमेश्वर की शान्ति के द्वारा वश में रखे जाते हैं

.....

स. हमारे जीवन को अपने अनुसार ढालते हैं .....

ड. परमेश्वर को ग्रहण योग्य होने चाहिए.....

६. यूहन्ना १७:१५-१९ पढ़ें : तब उन कथनों के अक्षरों में वृत्त खींच दें जो इस वाक्य को सही रूप से पूरा करते हैं।

हमारे विचारों की सुरक्षा

अ. गुफा में छुप कर दिन भर चिन्तन करके की जा सकती है।

ब. उन बातों पर ध्यान लगाकर की जा सकती है जो शुद्ध, भली एवं पवित्र हों।

स. सारे सांसारिक प्रभावों से दूर होकर मसीही संगति में शामिल होकर की जा सकती है।

ड. यीशु की प्रार्थना पर विश्वास करके की जा सकती है कि इस संसार में रहते हुए भी पिता हमारी रक्षा कर सकता है।

कलीसियाई जीवन

उद्देश्य ४. मसीही संगति का अभिप्राय एवं परमेश्वर के कार्य के लिए योगदान को स्पष्ट करना।

जैसा कि हमने सीखा है हमें सुसमाचार के संदेश को प्रत्येक को बताना अवश्य है — इसमें अविनाशी भी शामिल हैं जिन्हें हम मित्र समझते हैं। किन्तु घनिष्ट मित्रों का चुनाव हमें सावधानी से करना चाहिए। अपने खाली समय में हम को केवल उन लोगों के मसीही प्रभावों से प्रभावित रहना चाहिए जो आपको प्रभु में बढ़ने एवं उसकी इच्छा मालूम करने में आपकी सहायता कर सकते हों।

> क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है, परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है (भजन संहिता १:१-२)।

हम बाइबल का अध्ययन स्वयं और अपने मसीही मित्रों के साथ करन चाहते हैं। हमें परमेश्वर के वचन प्रचार को भी सुनने की आवश्यकता है "सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों १०:१७)।

और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसे कि कितनों की रीं है पर एक दूसरे को समझाते रहो और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट अ देखो त्यों-त्यों और भी अधिक किया करो (इब्रानियों १०:२५)।

जब विश्वासी एक साथ इकट्ठा हों तो उन्हें एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। एकता में ही बल है। भजन गान करने का बल एवं प्रभु स्तुति एक साथ करने का बल।

ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु एक अंग दूसरे की बराबर चिन्ता करें, इसलिए यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं (१ कुरिन्थियों १२:२५-२६)।

परमेश्वर की एक योजना है जिसके द्वारा हम स्थानीय कलीसिया के लोगों की एवं इसके साथ ही दूसरों की आर्थिक सहायता कर सकते हैं। इब्रानियों ७:२-९ हमें इब्राहीम के जीवन का उदाहरण देकर बताता है कि जो कुछ उसके पास था उसने उसका दसवाँ भाग दे दिया। तो भी दशमांश या दसवां भाग देना ही काफी नहीं है।

फरीसियों ने भी जो कि अपने दिनों के धार्मिक अगुए थे अपना दशमांस दिया परन्तु यीशु ने कहा कि हमारे देने का मापदण्ड उन लोगों से कहीं बढ़कर होना चाहिए। उसने कहा कि वह लोग अपनी मौसमी फसलों का अर्थात् पोदीने, सौंफ एवं जीरे का भी दशमांश दिया करते थे किन्तु व्यवस्था की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को जैसे न्याय, दया एवं ईमानदारी, इन की ये लोग अवहेलना करते थे (मत्ती २३:२३)। यीशु ने कहा कि हमें उन सभी बातों में विश्वास योग्य बनना है जिसे परमेश्वर हमसे चाहता हैं।

हम उदारता से अपना धन देना चाहते हैं और इसके साथ ही उन बातों पर भी ध्यान देना चाहते हैं जो प्रभु हमसे चाहता है। हो सकता है कि वह हमारा और अधिक समय या अन्य वरदान चाहता हो — यहां तक कि हमारी भविष्य की योजना भी चाहे कुछ भी क्यों न हो हम उसे एक भेंट प्रेम स्वरूप दे सकते हैं जिसने हमसे पहले प्रेम किया।

जो आपको करना है

७. जो कुछ हमारे पास है उसका दसवां भाग देना क्या कहलाता है? .....

८. इब्रानियों १०:२५ के अनुसार, हम विश्वासियों के साथ इकट्ठे होते हैं ताकि .....

.....

.....

९. रोमियों १२:१-२ मुखाग्र करें। इन पदों के अनुसार परमेश्वर के साथ हमारा सही संबंध .....

.....

.....

आपके टिप्पणी लिखने के लिये

अपने उत्तरों की जांच करें

१. ओठों से अंगीकार करना।
दिल में विश्वास करना।

६. ब) उन्हीं बातों पर ध्यान लगाया कर जो शुद्ध, सही एवं पवित्र हैं।

ड.) यीशु की प्रार्थना पर विश्वास करके कि संसार में सहते हुए भी पिता हमें सुरक्षित रखेगा।

२. उसने नतनएल से मिलकर उसे मसीह के विषय में बताया।

७. दशमांश या दसवां भाग।

३. अ) सही

ब) सही

८. एक दूसरे को उत्साहित करना।

४. प्रतिदिन धर्मशास्त्र बाइबल का अध्ययन करना एवं प्रार्थना करना

९. उसकी सेवा एवं उसे प्रसन्न रखने के लिए स्वयं को समर्पित कर देना।

५. अ) फिलिप्पियों ४:८

ब) फिलिप्पियों ४:७

स) नीतिवचन ४:२३

ड) भजन संहिता १९:१४

अध्याय 16

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन प्रत्येक विश्वासी का लक्ष्य होना चाहिए। परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होना यह एक दूसरा कदम है जिसका अनुभव प्रत्येक मसीही के जीवन में होना चाहिए। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन ऐसा जीवन है जो सम्पूर्ण रूप से प्रभु को समर्पित हो।

यीशु ने अपने चेलों से यह प्रतिज्ञा की थी कि जब वह अपने पिता के पास वापस जाए तो एक सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा भेजेगा।

> और मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे अर्थात् सत्य की आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है : तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुममें होगा (यूहन्ना १४:१६-१७)।

पवित्र आत्मा का इस प्रकार आना पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। प्रेरितों के काम, दूसरे अध्याय में इसका वर्णन दिया हुआ है। तब से यह सम्भव हो सका कि प्रत्येक विश्वासी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अर्थ क्या है। हम यह भी अध्ययन करेंगे कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने से क्या लाभ प्राप्त होता है।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना
पवित्र आत्मा के द्वारा जीवन यापन

इस पाठ से आपको सहायता मिलेगी कि आप...

- वर्णन कर सकें कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन का अर्थ क्या है।
- अपने जीवन को जांच कर देख सकें कि क्या यह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है। अध्ययन के द्वारा प्राप्त चीजें आप के जीवन में हैं या नहीं।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना

उद्देश्य १. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन की कुछ विशेषताओं को जानना।

इफिसियों ५:१८ हमें सिखाता है कि "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ"। यह तब होता है जब हम नया जन्म प्राप्त कर लेते हैं तथा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर लेते हैं। यीशु ने इन शब्दों का प्रयोग, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, उस खूबसूरत अनुभव के विषय में किया था जिसे उसके चेले प्राप्त करने वाले थे।

प्रेरितों के काम १:५ में उसने कहा "यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे"।

विश्वासियों के रूप में हम भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर सकते हैं, ठीक उसी तरह जैसे उसके चेलों ने प्राप्त किया था, जिन्होंने विश्वास, धन्यवाद एवं परमेश्वर की स्तुति करते हुए उसका इंतजार किया था। उन्होंने यीशु के निर्देश का पालन किया था जब उसने कहा कि "देखो जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो" (लूका २४:४९)।

एक तरीका जिससे हम जान सकते हैं कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं वह यह है कि हमें परमेश्वर की सामर्थ प्राप्त होगी ठीक वैसे ही जैसे पिन्तेकुस्त के दिन विश्वासियों को प्राप्त हुई थी। पवित्र आत्मा हममें होकर वे भाषाएं बोलेगा जिन्हें हम जानते नहीं "और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों के काम २:४)।

यह महत्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन के द्वारा चारित्रिक गुण प्रगट होने चाहिए जिन्हें हम बहुधा "पवित्र आत्मा के फल" कहते हैं

"पर आत्मा के फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं" (गलतियों ५:२२-२३)।

यदि हम सोचते हैं कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं और ये गुण हमारे जीवन के द्वारा प्रगट न हों तो प्रभु से पूछें कि हममें किस बात की कमी है। यदि ये गुण हममें न हों तो हम अपने जीवन के द्वारा होने वाले पवित्र आत्मा के कार्य पर बाधा डालते हैं।

और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है (इफिसियों ४:३०)।

परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के द्वारा हम अपने जीवन को पवित्र आत्मा से परिपूर्ण रख सकते हैं।

"और दाखरस से मतवाले न बनो क्योंकि इससे लुचपन होता है पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ और आपस में भजन और स्तुति-गान और आत्मिक गीत गाया करो। और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।" (इफिसियों ५:१८-२०)।

धर्मशास्त्र के ये वचन इस बात के समझने में हमारी सहायता करते हैं कि पवित्र आत्मा में जीवन यापन का अर्थ क्या है। जब हम पवित्र आत्मा को अपने जीवन का मार्ग दर्शन करने की अनुमति दे देते हैं तो हम एक परिपक्व मसीही जीवन में बढ़ते एवं विकसित होते चले जाते हैं (गलतियों ५:१६)। पवित्र आत्मा हमें जीवित एवं सक्रिय रखता है। हम उसकी सेवा के लिए स्वयं को तैयार एवं मजबूत महसूस करते हैं। यह विचार २ कुरिन्थियों ४:१६ में दिया गया है "इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रति दिन नया होता जाता है।"

जो आपको करना है

१. नीचे दिए गए वाक्य को भली भांति पूर्ण करने वाले प्रत्येक कथन के सामने के अक्षर पर वृत्त खींच दें।

जब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त होता है तो विश्वासी

अ. अपरिचित भाषाएं बोलता है।

ब. गलतियों ५ में दर्शाए गए "फल" प्रगट करता है।

स. आत्मिक रूप से बढ़ता है।

ड. पवित्र आत्मा को अपने जीवन का मार्ग दर्शन की अनुमति देता है।

२. इफिसियों ५:१७-२१ दोबारा पढ़ें। इन पदों के आधार पर कम से कम तीन कार्य-कलापों की सूची तैयार करें जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण मसीही को करने चाहिए।

.....

.....

.....

३. गलतियों ५:१६ के अनुसार पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन-यापन का भेद क्या है?

.....

.....

पवित्र आत्मा के द्वारा संभाला जाना

उद्देश्य २. यह जानना कि पवित्र आत्मा एक विश्वासी को कैसे संभालता है एवं मसीही व्यवहार और पवित्र आत्मा के वरदान के बीच सम्बन्ध कैसा है।

पवित्र आत्मा को हमारे सहायक के रूप में भेजा गया था। इसका दूसरा नाम सान्त्वना देने वाला कहा गया है। जब कोई हमें सान्त्वना देता है तो हमारा जीवन सरल हो जाता है। जब हम कोई दबाव महसूस करते हैं तो वह हमें ऊंचा उठाता है। पवित्र आत्मा के द्वारा संभाले जाने का अर्थ यही है।

पवित्र आत्मा हमें संभालता है। मसीही विकास के हर पहलू में वह हमारी सहायता करता है। प्रार्थनामय जीवन-यापन में वह हमारी सहायता करता है। "हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए। परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भर कर जो बयान से बाहर हैं हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों ८:२६)।

पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करता है। रोमियों ८:१४ कहता है "इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।"

पवित्र आत्मा सत्य का आत्मा है जो सारी सच्चाई की ओर ले चलने वाला महान गुरु एवं मार्ग दर्शक है। "सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुम से कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना १४:२६)। "जब पवित्र आत्मा आएगा जो परमेश्वर के विषय सत्य को प्रगट करता है, वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा (यूहन्ना १६:१३)।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के फलस्वरूप कई प्रकार के वरदान हमें पवित्र आत्मा के द्वारा प्राप्त होते हैं। इन वरदानों की सहायता से परमेश्वर के

लिए अपना कार्य करना बहुत सरल हो जाता है, बजाए इसके कि अपने स्वयं की सामर्थ से। इन वरदानों में से एक हैं, मसीही सेवा के लिए सामर्थ।

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सारे सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे (प्रेरितों के काम १:८)।

पवित्र आत्मा अपना वरदान हमारे लिए उपलब्ध रखता है जो कि मसीही सेवा के लिए विशेष प्रबन्ध है। "वरदान तो कई प्रकार के हैं परन्तु आत्मा एक ही है" (१ कुरिन्थियों १२:४)। आत्मा के वरदान जो १ कुरिन्थियों १२:८-११ में दिए गए हैं, वे हैं : बुद्धि की बातें, ज्ञान की बातें, विश्वास, चंगाई, आश्चर्य कर्म, भविष्यद्वाणी, आत्माओं की परख, अन्य भाषा, अन्य भाषाओं का अर्थ। और भी दूसरे वरदान एवं गुण हैं जो परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा हमें देना चाहता है।

और जबकि हमें उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। यदि सेवा करने का दान मिला हो तो सेवा करने में लगा रहे और यदि कोई सिखाने वाला हो तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो वह उपदेश देने में लगा रहे। दान देने वाला उदारता से दे। जो अगुआई करे वह उत्साह से करे जो दया करे वह हर्ष से करे। प्रेम निष्कपट हो। बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो। भाई-चारे के प्रेम से एक दूसरे के ऊपर मया रखो। परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो। आत्मिक उन्माद में भरे रहो। प्रभु की सेवा करते रहो। (रोमियों १२:६-११)।

पवित्र आत्मा परमेश्वर की सन्तान को आशीष एवं महिमा भी देता है।

आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और यदि सन्तान है, तो वारिस भी वरन परमेश्वर के वारिस

और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुःख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं।

पवित्र आत्मा का अद्‌भुत रूप से उंडेला जाना आज भी इस आधुनिक समय में वैसा ही है जैसा कि बीते दिनों में था।

परमेश्वर बहुत से मसीहियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे रहा है। आइए प्रार्थना करें कि यह लगातार होता रहे। प्रार्थना करें कि आपकी कलीसिया का पास्टर, अगुए एवं सभी सदस्य परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण हो एवं उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाएं।

यही वह आत्मा है जो हमें संभाल कर रखता है, यहां तक कि जब हमें समस्याओं का या भूख, मेहनत, सताव, गरीबी या मौत का सामना करना पड़े.... "परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों ८:३७)।

जो आपको करना है

४. जब हम कहते हैं "पवित्र आत्मा हमें संभालता है" इसका अर्थ यह है कि वह .....

.....

.....

५. पवित्र आत्मा के अन्य पांच नाम जो इस पाठ में दिए गए हैं वे दर्शाते हैं कि वह हमें कैसे संभालता है। उन नामों को लिखें

.....

.....

.....

६. निम्न में से किन परिस्थितियों में आप पवित्र आत्मा के वरदान का प्रयोग करते हैं?

अ. एक गरीब परिवार की आप मेहमानी करते हैं।

ब. सण्डे स्कूल पढाने की जिम्मेवारी स्वीकार करते हैं।

स. जब कोई स्त्री बीमार हो जाती है तो आप उसके बच्चों को सहर्ष अपने घर में रखते हैं।

ड. आप जेल के कैदियों को मुलाकात के दिन में प्रचार करते हैं।

इ. अपने कार्य करने की जगह में आप अपने मित्र को गवाही देते हैं।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. आपको सभी अक्षरों में वृत्त खींचना चाहिए क्योंकि सभी सही हैं।

४. जब हम किसी दबाव में रहते हैं तो वह हमें सान्त्वना देता है एवं ऊंचा उठाता है।

२. आप निम्न में से कोई भी तीन लिख सकते हैं : भजन और स्तुति गाना, मन में प्रभु की स्तुति करना, सब बातों के लिए धन्यवाद देना, एक दूसरे के अधीन रहना, मसीह का भय मानना।

५. सहायक, सान्त्वना देने वाला, सत्य की आत्मा, शिक्षक, मार्गदर्शक

३. पवित्र आत्मा को अपने जीवन का मार्ग दर्शन करने देना।

७. आपको प्रत्येक पर चिन्ह लगाना चाहिए। इस सूची के अनुसार आप जो भी करें, आप पवित्र आत्मा के वरदान का उपयोग करते हैं।

अब पाठ ९ — १६ तक के लिए अपनी छात्र रिपोर्ट के अन्तिम आधे भाग की पूर्ति के लिए तैयार हैं। इन पाठों को दुहराएं और तब अपनी छात्र-रिपोर्ट के निर्देशन का पालन करें। जब आप अपनी उत्तर पुस्तिका को प्रशिक्षक के पास भेजें तो उससे दूसरे पाठ्यक्रम की मांग करें।

"बधाई"

आपने यह पाठ्यक्रम पूरा कर लिया। हमें आशा है कि इससे आपको काफी सहायता मिली। स्मरण रखें कि आप अपनी छात्र रिपोर्ट के दूसरे भाग की पूर्ति करके उत्तर पुस्तिका को प्रशिक्षक को भेज दें। जैसे ही हमें दोनों उत्तर पुस्तिकाएं प्राप्त होगी, हम उन्हें जांच कर आपको वापस भेज देंगे और आप को आपका प्रमाण पत्र भेज देंगे।

अन्तिम सन्देश

यह एक विशेष प्रकार की पुस्तक है जो कि उन लोगों के द्वारा लिखी गई है जिन को आपकी चिन्ता है। ये ऐसे सुखी लोग हैं जिन्होंने ऐसे कई प्रश्नों एवं समस्याओं के उत्तर ढूंढ लिए हैं जिनसे संसार का प्रत्येक व्यक्ति चिंतित है। ये सुखी लोग ये विश्वास करते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि जो इन्हें प्राप्त है उन्हें आप तक पहुंचाएं। वे विश्वास करते हैं कि आपको कुछ महत्वपूर्ण बातों की जानकारी की आवश्यकता है जिससे आप अपनी समस्याओं एवं प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करके जीवन का सर्वोत्तम तरीका ढूंढ सकें।

उन्होंने यह पुस्तक लिखी है ताकि इन बातों की जानकारी आपको मिल सके। यह पुस्तक इन मूलभूत सच्चाइयों पर आधारित है :

१. आपको एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। रोमियों ३:२३, यहेजकेल १८:२० पढ़ें।

२. आप स्वयं को नहीं बचा सकते। १ तीमुथियुस २:५, यूहन्ना १४:६ पढ़ें।

३. परमेश्वर चाहता है कि सारा संसार बच जाए। यूहन्ना ३:१६-१७ पढ़ें।

४. परमेश्वर ने यीशु को भेजा जिसने उन सभों के लिए अपना प्राण दे दिया जो उस पर विश्वास करते हैं। गलतियों ४:४-५, १ पतरस ३:१८ पढ़ें।

५. बाइबल हमें उद्धार का रास्ता एवं मसीही जीवन में कैसे बढ़ें यह सिखाती हैं। यूहन्ना १५:५, यूहन्ना १० १०, २ पतरस ३:८ पढ़ें।

६. आप अपने अनन्तकाल के गन्तव्य स्थान का फैसला स्वयं करें। लूका १३:१-५, मत्ती १०:३२-३३, यूहन्ना ३:३५-३६ पढ़ें।

यह पुस्तक बताती है कि आप अपने गन्तव्य स्थान का फैसला कैसे कर सकते हैं और यह आपको अवसर देती है कि आप अपने फैसले को व्यक्त कर सकें। यह पुस्तक अन्य पुस्तकों से इसलिए भी भिन्न है क्योंकि यह आपको उन लोगों से सम्पर्क करने का अवसर देती है जिन्होंने यह पुस्तक तैयार की है। यदि आप प्रश्न पूछना चाहें या अपनी आवश्कयताओं एवं अनुभूतियों की व्याख्या करना चाहें तो आप उन्हें पत्र लिख सकते हैं।

इस पुस्तक के पिछले भाग में आपको एक कार्ड मिलेगा जो **निर्णय प्रतिवेदन एवं निवेदन पत्र** कहलाता है। जब आप निर्णय ले लें तो उस कार्ड को भरकर बताए अनुसार डाक से भेज दें। तब आपको अधिक सहायता मिल सकेगी। उस कार्ड को आप प्रश्न पूछने या प्रार्थना निवेदन या किसी बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

यदि इस पुस्तक में वह कार्ड न हो तो आप अपने आई.सी.आई. प्रशिक्षक को लिखें तो आप व्यक्तिगत उत्तर प्राप्त कर सकेंगे।

• • •

निर्णय रिपोर्ट और निवेदन कूपन

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन पूरा करने के बाद, ...' मैंने प्रभु यीशु मसीह में अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु जानकर विश्वास किया है। मैं अपने हस्ताक्षर करके व पता लिखकर यह कूपन लौटा रहा/रही हूं, जिसके दो कारण हैं। पहिला, मसीह के प्रति अपने समर्पण की साक्षी हूं, दूसरा, अपने आत्मिक जीवन में सहायता पाने हेतु और अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकूं।

नाम _____

पूरा पता .....

.....

हस्ताक्षर _____

इन्टरनेंशनल कारिसपॉन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बाक्स 303
लखनऊ-226 001

कृपया नीचे दिए गये खाली स्थानों की पूर्ति साफ अक्षरों में भरें :—

आपका नाम .....
आपका आई॰ सी॰ आई॰ छात्र संख्या .....
आपका पता .....
.....
पिन कोड ..... प्रांत .....
उम्र ..... लिंग ..... धर्म .....
व्यवसाय ..... दिनांक .....

हमारा विश्वास

पाठ १—८

सही या गलत

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें।

१ बाइबल किसी दूसरी महान पुस्तक से भिन्न नहीं है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

२ परमेश्वर करुणामय, किन्तु न्याय एवं सत्य से परिपूर्ण भी है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

३ मनुष्य करोड़ों वर्षों के विकास का निष्कर्ष है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

४ यीशु इस समय हमारे लिए पिता से प्रार्थना कर रहा है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

५ परमेश्वर एक मसीही को पाप करने के लिए बहुधा परीक्षाएं डालता है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

६ अनन्तकाल के पहिले ही हमें उद्धार का निश्चय हो जाता है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

७ कलीसिया मसीह के साथ सर्वदा रहेगी।
... (अ) सही .... (ब) गलत

बहुसंख्यक चुनाव

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें।

८ बाइबल का कौन सा भाग परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है?
..... (अ) केवल पुराना नियम
..... (ब) केवल नया नियम
..... (स) पुराना एवं नया नियम, दोनों

९ इनमें से कौन सी बात बाइबल का उद्देश्य नहीं है।
..... (अ) हमारा मनोरंजन करना
..... (ब) हमारे पापों को दर्शाना
..... (स) यह सिखाना कि आपस में कैसा व्यवहार करना चाहिए।

१० हमें परमेश्वर की अराधना...

..... (अ) एक सुन्दर मन्दिर में करनी चाहिए
..... (ब) आत्मा और सच्चाई से करनी चाहिए
..... (स) जैसा कि हमें अच्छा लगे वैसा करना चाहिए

११ परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की

..... (अ) सिद्ध
..... (ब) पापी स्वभाव में
..... (स) आत्मा में कमजोर

१२ पाप का निष्कर्ष क्या है?

..... (अ) मृत्यु
..... (ब) जीवन
..... (स) कोई प्रभाव नहीं

१३ दूसरों से ईर्ष्या रखना पाप है क्योंकि यह

..... (अ) हमें समस्या में डाल सकती है।
..... (ब) हमारी प्रतिष्ठा को चोट पहुंचा सकती है।
..... (स) परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करना है।

१४ हम पाप के दण्ड से बच सकते हैं केवल

..... (अ) कलीसिया को बड़ी मात्रा में पैसे देने के द्वारा
..... (ब) यीशु मसीह को हमारा उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करने के द्वारा
..... (स) अपनी प्रार्थनाओं को प्रति दिन दुहराने के द्वारा।

१५ यीशु के नाम का अर्थ

..... (अ) "अभिषिक्त जन"
..... (ब) "मसीहा"
..... (स) "बचाने वाला"

१६ मसीहा नाम का अर्थ

..... (अ) "उद्धारकर्त्ता
..... (ब) "परमेश्वर का पुत्र
..... (स) "अभिषिक्त जन"

१७ पवित्रीकरण का अर्थ

..... (अ) परमेश्वर की आत्मा के द्वारा नया जन्म प्राप्त करना है।
..... (ब) पवित्र बनना एवं परमेश्वर के कार्य के लिए अलग होना है
..... (स) धर्मी बनाया जाना जैसा कभी पाप किया ही न हो

१८ जब हम नया जीवन प्राप्त कर लेते हैं तो कौन सी बात नहीं होती?

..... (अ) हम सीधे स्वर्ग पहुंच जाते हैं
..... (ब) हम नए सृष्टि बन जाते हैं
..... (स) हम परमेश्वर के परिवार का भाग बन जाते हैं।

१९ बाइबल में कलीसिया को

..... (अ) यीशु की देह का सिर कहा गया है
..... (ब) मसीह की दुल्हन कहा गया है
..... (स) इमारत के कोने के सिरे का पत्थर कहा गया है।

पाठ ९-१६

सही गलत

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें

२० शैतान हमेशा से मनुष्यों को धोखा देने वाला रहा है।
... (अ) ... (ब) गलत

२१ यीशु ने कहा कि संसार उसके वापस आने से पहले उन्नति कर चुकेगा।
... (अ) ... (ब) गलत

२२ परमेश्वर हमें अनुग्रह देता है कि उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकें।
... (अ) ... (ब) गलत

२३ हम उद्धार एवं चंगाई विश्वास से प्राप्त करते हैं।
... (अ) ... (ब) गलत

२४ हमारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है।
... (अ) ... (ब) गलत

२५ गंदी पत्रिकाओं के पढ़ने से मसीहिओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
... (अ) ... (ब) गलत

२६ यीशु ने दशमांश के महत्व को स्वीकार किया।
... (अ) ... (ब) गलत

बहुसंख्यक चुनाव

प्रत्येक प्रश्न का केवल एक ही उत्तर है।

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें।

२७ शैतान के विषय में कौन सा कथन सही नहीं है?

..... **(अ) वह विश्वासियों से दूर रहता है।**

..... (ब) वह मसीहियों को पाप करने का प्रलोभन देता है।

..... (स) उसने अपने को परमेश्वर से ऊंचा उठने की कोशिश की।

२८ मेम्ने का विवाह-भोज

..... **(अ) यीशु का पृथ्वी पर राज्य करने के लिए वापस आने के बाद होगा।**

..... (ब) सन्तों (विश्वासियों) के बादलों में उठा लिए जाने के बाद होगा।

..... (स) महान-श्वेत-सिंहासन-न्याय के बाद होगा।

२९ मसीह के न्याय सिंहासन के सामने कौन होगा?

..... (अ) विश्वासी लोग

..... (ब) शैतान और उसके दूत

..... (स) पापी

३० महान श्वेत सिंहासन-न्याय कब होगा?

..... (अ) यीशु का एक हजार वर्ष के राज्य के पहले

..... (ब) यीशु का एक हजार वर्ष के राज्य के समय

..... (स) यीशु का एक हजार वर्ष के राज्य के बाद

३१ परमेश्वर की आज्ञाएं इसलिए दी गई कि

..... (अ) मनुष्य जीवन का आनन्द न ले सके

..... (ब) मनुष्य को पाप से बचाया जा सके।

..... (स) मनुष्य को बुराई से भलाई की ओर ले चलें

३२ हमें परमेश्वर की आज्ञा पालन करनी चाहिए

..... (अ) क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं एवं उसे खुश रखना चाहते हैं।

..... (ब) ताकि उद्धार प्राप्त कर सकें।

..... (स) जब तक उद्धार प्राप्ति न हो।

३३ मत्ती ७:२१ के अनुसार स्वर्ग में कौन प्रवेश करेगा?

..... (अ) प्रत्येक जो प्रार्थना करता है।

..... (ब) जो पाप की मुआफी के लिए पैसे देता है।

..... (स) जो परमेश्वर की आज्ञा मानता है।

३४ एक मसीही

..... (अ) को स्वयं निर्णय लेने का अधिकार है

..... (ब) पवित्रता की चिन्ता नहीं करनी चाहिए

..... (स) अपने से अधिक मसीह को प्रसन्न रखेगा।

३५ कौन सी बात सही नहीं है? हमारे विचार

..... (अ) हमारे व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं।

..... (ब) हमारे व्यवहार पर कोई प्रभाव नहीं डालते

..... (स) सावधानी पूर्वक सुरक्षित रहने चाहिए।

३६ यदि कोई आपसे झूठ बोले तो आपको चाहिए कि

..... (अ) उसे माफ करके उससे प्रेम रखें

..... (ब) उससे बदला लें

..... (स) उसे दूसरों को बताएं

३७ इनमें आत्मा के वरदान कौन से हैं?

..... (अ) आनन्द, मेल, भलाई, नम्रता, धीरज

..... (ब) भविष्यवाणी, विश्वास, ज्ञान की बातें

..... (स) संयम, प्रेम, कृपा, एवं धीरज

३८ हम पवित्रात्मा की भरपूरी को बनाए रखते हैं

..... (अ) सांसारिक मनोरंजन के द्वारा

..... (ब) शारीरिक अभिलाषाओं को पूरा करने के द्वारा

..... (स) मसीह की आज्ञाओं का पालन एवं परमेश्वर पर भरोसा रखने के द्वारा।

हमारा विश्वास

निर्णय प्रतिवेदन एवं निवेदन पत्र

"हमारा विश्वास" पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् मैंने अपना भरोसा यीशु पर अपने उद्धार कर्त्ता और प्रभु के रूप में डाल दिया है। मैं यह पत्र अपने हस्ताक्षर एवं पता के साथ नीचे लिखे आई० सी० आई० के पते पर दो कारणों से भेज रहा हूं। प्रथम, यीशु पर अपने समपर्ण की साक्षी एवं द्वितीय, मेरे आत्मिक जीवन के लाभ के लिए अधिक जानकारी के निवेदन हेतु।

नाम .....

पता .....

हस्ताक्षर .....

छात्र संख्या .....

यदि आपने यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण किया हो तो कृपया संक्षेप में बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

इन्टरनेशनल कारिसपॉन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बाक्स 303
लखनऊ-226 001

क्या आप जानना चाहते हैं कि...

- **परमेश्वर एवं मनुष्य के विषय में?**
- **उद्धार कैसे प्राप्त होता है?**
- **आत्मिक जीवन का विकास कैसे होता है?**
- **पवित्र आत्मा के विषय में और अधिक**

क्या आप दूसरों को बता सकते हैं कि आप क्या एवं क्यों विश्वास करते हैं? क्या उन्हें बता सकते हैं कि बाईबिल उद्धार के विषय में क्या कहती है? क्या आप नए मसीहियों की सहायता करना चाहेंगे? हमारा विश्वास आपकी आवश्यकता की एक पुस्तक है। इसके प्रश्न उत्तर एवं मुखाग्र कार्य आपके आत्मिक बढ़ती में सहायक होंगे।

इसकी रुचिकर स्वयं-शिक्षणा-विधि आपके अध्ययन को सरल बना देती है। आप केवल निर्देशन का पालन करें एवं आगे बढ़ते हुए अपने को जांचें।

इन्टरनेशनल कारेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बॉक्स-303 लखनऊ-226 001